जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

जालोर

Rashtradoot

फोनः- 226422, 226423 फैक्सः- 02973-226424 वर्षः 18 संख्याः 52 प्रभात जालोर, मंगलवार 30 मई, 2023 पो. रजि. /RJ/SRO/9640/2022-24 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

उत्तरी अमेरिका में घोड़ों के बारे में लिखी गई तमाम कहानियाँ व तथ्य बदलने वाले हैं। ''साइन्स'' नाम के जर्नल में छपे एक शोध में यह दावा किया गया है। घोड़ों के पुरावेशषों की जांच के बाद शोधकर्ताओं ने कहा कि, सोलहवीं सदी के पूर्वार्ध (1600) में ही यहाँ के मूल निवासियों ने समूचे अमेरिकन वैस्ट में घोड़ों को फैला दिया था और तब तक उनका यूरोपियन्स से कोई सम्पर्क नहीं हुआ था। ये नतीजे मूल निवासियों के मौखिक इतिहास से मेल खाते हैं, जिसमें यूरोपियन्स के आने से पहले से घोड़े के साथ इन लोगों के पारस्परिक संबंधों की बात बताई गई है। सत्रहवीं व अठाहवीं सदी की यूरोपियन पुस्तकों में दावा किया गया है कि, 1680 के पुएब्लो रिवोल्ट के बाद क्षेत्र में घोड़ों का प्रसार हुआ था। नए शोध के सहलेखक जिम्मी आर्टरबैरी, जो नेटिव अमेरिकन ट्राइब, ''कमैन्ची'' के विशेषज्ञ हैं, ने कहा, ''हम हमेशा से जानते थे कि स्पैनिश लोगों के आने से पहले ही हमारा घोड़ों से सम्पर्क हो चुका था। अमेरिका में घोड़ों का उद्विकास तो 40 लाख साल पहले ही हो गया था लेकिन, फॉसिल रिकॉर्ड के अनुसार, दस हजार साल पहले वे लुप्त हो गए।'' शोध पत्र के अनुसार, संभवतः स्पैनिश उपनिवेशी 1519 में पहली बार घोड़ों को अमेरिका में वापस लाए। तब स्थानीय लोग ट्रेड नैटवर्क के जरिए घोड़ों को उत्तर की तरफ ले गए। यह पता लगाने के लिए कि, घोड़ों का प्रसार कब हुआ था, वैज्ञानिकों ने वैस्टर्न यू.एस. में मिले दो दर्जन से ज्यादा घोड़ों के अवशेषों की रेडियो कार्बन डेटिंग की व डी.एन.ए. का विश्लेषण किया, जिसमें सामने आया कि, वायोमिंग, कैन्सस और न्यूमैक्सिको में मिले घोड़ों के अवशेष पुएब्लो रिवोल्ट से भी पुराने हैं। शोध की सहलेखक ईवैट कॉलिन्स ने कहा, नतीजों से यह भी पता चलता है कि, इतिहास को समझने में स्थानीय मौखिक परम्पराओं का महत्व कितना ज्यादा है। उन्होंने कहा, इतने वर्षों तक हमारी संस्कृति को गलत तरीके से बताया जाता रहा है।

'दोनों नेताओं ने फैसला हाई कमान पर छोड़ा'

सोमवार की शाम को मल्लिकार्जुन खड़गे के निवास पर आयोजित बैठक, जिसमें राहुल गांधी, वेणु गोपाल, रंधावा व गहलोत थे तथा पायलट बाद में शरीक हुए, में यह सारांश निकला

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 27 मई। अशोक गहलोत और सचिन पायलट एक साथ नज़र आए, तथा के.सी. वेणुगोपाल ने घोषणा की कि दोनों मिलकर राजस्थान विधानसभा चुनाव लड़ेंगे। उन्होंने कहा कि इसके तौर तरीके वे प्रक्रिया पर नेतृत्व फैसला करेगा।

आज शाम कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के निवास पर एक मीटिंग हुई जिसमें राहुल गांधी, के.सी. वेणुगोपाल, रंधावा, अशोक गहलोत उपस्थित थे। बाद में इसमें सचिन पायलट भी शामिल हो गए।

सूत्रों ने बताया कि सचिन पायलट को राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी का अध्यक्ष बनाने का प्रस्ताव रखा गया।

पता चला है कि पायलट ने इस प्रस्ताव पर इस शर्त के साथ सहमति दे दी है कि वसुंधरा राजे और उनके भ्रष्टाचार के कारनामों के खिलाफ जांच के आदेश दिए जाने चाहिए। इस बात की संभावना बहुत ही कम है कि गहलोत इस शर्त पर सहमत होंगे

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- वेणु गोपाल ने बैठक के बाद, प्रेस कॉन्फ्रेंस में यह जानकारी गहलोत व पायलट की उपस्थिति में दी।
- विश्वस्त सूत्रों से प्राप्त जानकारी के अनुसार, बैठक में यह प्रस्ताव आया था कि, पायलट को पार्टी का प्रदेशाध्यक्ष बनाया जायेगा।
- पायलट ने प्रस्ताव पर अपनी सहमति दी, पर शर्त लगायी कि, वसुंधरा राजे व उनके भ्रष्टाचार के खिलाफ जांच के आदेश होने चाहिये।
- ऐसा नहीं लगता कि, गहलोत इस शर्त को स्वीकार करेंगे, पर इसकी क्रियान्विति कैसे होगी इसका निर्णय हाई कमान करेगा।
- सोमवार की रात को राहुल गांधी अमेरिका के लिये प्रस्थान कर रहे हैं, अतः अभी स्पष्ट नहीं है कि, क्रियान्वयन की प्रक्रिया का निर्धारण, तुरंत हो जायेगा।
- ऐसा लगता है कि, पायलट को अपना प्रस्तावित आंदोलन वापस लेने का मौका दिया गया है, दोनों नेताओं को राजनीतिक निर्णय में बराबर का भागीदार बनाया गया है तथा केवल गहलोत को ''फ्री हैण्ड'' नहीं मिलेगा, जैसा वे चाहते हैं।

तीन राज्यों के विधानसभा चुनावों के साथ संसद के चुनाव कराने पर मंथन शुरू?

मोदी-शाह द्वय इस रणनीति के लाभ-हानि पर गंभीर मंथन कर रहे हैं?

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 29 मई। पुराने जमाने से चली आ रही जाँची-परखी रणनीति रही है कि जब दुश्मन झपकी ले रहा हो या असावधान हो, उस समय उस पर एकाएक हमला बोल दो। मोदी सरकार इस रणनीति से चिंतन करती तथा अपने राजनैतिक विरोधियों को जरा सी गलती करते दबोचने पर विचार करती प्रतीत हो रही है।

भाजपा का शीर्ष नेतृत्व, जिसमें प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी तथा केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह भी शामिल हैं, यह तय करने की कवायद में गंभीरता से लगा हुआ है कि अगर अगले वर्ष होने वाले आम चुनाव कुछ समय पहले करा लिये जायें तथा उन्हें लाभ होगा या हानि। भाजपा का उद्देश्य विपक्ष को संगठित करने के विपक्षी दलों के प्रयासों का कमजोर करना, बल्कि उन्हें ध्वस्त करना है।

एक शीर्षस्थ सूत्र ने अपना नाम जाहिर न करने की शर्त पर कहा कि आम चुनावों का छः महीने पहले राजस्थान, मध्य प्रदेश तथा छत्तीसगढ़ से विधानसभा चुनावों के साथ कराने के फायदे-नुकसान के अध्ययन की शुरूआत इसी महीने हुये कर्नाटक विधानसभा चुनावों में भाजपा की जबरदस्त हार के तुरंत बाद शुरू हो गई थी।

सूत्रों का कहना है कि लोकसभा चुनाव समय पूर्व कराने का विचार पैदा होने का असली कारण यह तथ्य रहा है कि प्रधानमंत्री मोदी के जबरदस्त प्रयासों, जिनमें उनके द्वारा 19 जन सभाएं संबोधित करना तथा 6 रोड शो करना भी शामिल है, के बावजूद भाजपा की जबरदस्त हार हुई थी। संक्षेप में, भाजपा ने कांग्रेस को पछाड़ने में अपनी पूरी ताकत लगा दी थी। चुनावों की घोषणा होने के बाद, भगवा पार्टी ने पूरे राज्य में प्रचार करते हुए आठ रैलियाँ की थीं। भाजपा के स्वयं के आंकड़े बताते हैं कि पार्टी नेता राज्य के 311 मंदिरों और मठों में गये, उन्होंने 9125 जनसभाएं कीं, 1377 रोड शो किये तथा 9077 नुक्कड़ सभाएं कीं।

जहां विपक्षी दल भाजपा को टक्कर देने के लिये, उनके प्रत्याशी के सामने विपक्ष का एक ही प्रत्याशी खड़ा करने की योजना के साथ, विपक्षी मोर्चा बनाने में समय लगा रहे हैं तथा इस सिलसिले में उनकी पहली मीटिंग 12 जून को पटना में होना संभावित हैं, वहीं भाजपा पूरे दृढ़निश्चय के साथ ऐसी रणनीति बनाने में लगी हुई है कि विपक्षी नेताओं को परस्पर उचित समझबूझ

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- यह सोच कर्नाटक में भाजपा की भारी हार के बाद, पार्टी को काफी आकर्षक लग रहा है।
- संसद का चुनाव समय से पहले कराने के पक्ष में एक बड़ा तर्क यह दिया जा रहा है कि, विपक्ष को एक होने का पूरा मौका नहीं मिल पायेगा।
- दूसरा तर्क है, विपक्ष, विशेषकर कांग्रेस का ध्यान बंट जायेगा। वो विधानसभा चुनाव पर या संसद के चुनाव पर पूरा ध्यान नहीं दे पायेगी।
- दो चुनाव एक साथ होने से विपक्ष, (मुख्यतया कांग्रेस) के पास धन व साधनों की भारी कमी रहेगी।
- अंतिम तर्क यह है कि, राहुल गांधी अपनी पूर्व से पश्चिम भारत जोड़ो यात्रा का दूसरा चरण आरंभ नहीं कर पायेंगे।
- ऐसा माना जाता है कि, प्रथम चरण में कांग्रेस को कर्नाटक में अच्छा लाभ मिला था।

क्या आपको कम सुनाई देता है।
कान की मशीनें
स्पीच थैरेपी
फ्री सुनाई की जाँच
TRIAL OF HEARING AID
CALL FOR APPOINTMENT
+91 94602 07080
PERFECT SPEECH AND HEARING SOLUTIONS
Tonk Road, JAIPUR | Vaishali Nagar, JAIPUR
www.perfecthearingsolutions.com

'महिला चिकित्सक को पी.जी. के अगले सत्र में प्रवेश दिया जाए'

जयपुर, 29 मई (का.सं.)। राजस्थान हाईकोर्ट ने ग्रामीण क्षेत्र में काम कर चुकी चिकित्सक को बोनस अंकों का लाभ नहीं देने के मामले में आदेश दिए हैं कि, चिकित्सक को पीजी पाठ्यक्रम के अगले सत्र में प्रवेश दिया जाए। कोर्ट ने कहा है कि, इस दौरान किसी दूसरे अभ्यर्थी का प्रवेश निरस्त नहीं किया जाए। एक्टिंग चीफ जस्टिस, एम.एम. श्रीवास्तव और जस्टिस अनिल उपमन की खंडपीठ ने डॉ. स्नेहा तिवाड़ी की ओर से दायर अपील पर ये आदेश दिए।

- राजस्थान हाई कोर्ट ने डॉ. स्नेहा तिवाड़ी की याचिका पर यह आदेश दिए और कहा कि, अपीलार्थी को बिना किसी गल्ती के पी.जी. पाठ्यक्रम में प्रवेश नहीं दिया गया।

अदालत ने अपने आदेश में कहा कि, अपीलार्थी को बिना किसी गलती पीजी पाठ्यक्रम में प्रवेश से वंचित किया गया है। हालांकि वर्तमान सत्र में प्रवेश की अंतिम तिथि निकल चुकी है और अपीलार्थी पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

12 जून को पटना में आयोजित विपक्ष की बैठक की तैयारी जोरों पर

पिछले कुछ माह में नीतीश कुमार ने तो ज्ञान हासिल कर लिया है कि, भाजपा व कांग्रेस से बराबरी की दूरी रखने का चिंतन क्षेत्रीय दलों के लिये सही नहीं है

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 29 मई। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार द्वारा 12 जून को पटना में बुलाई जा रही विपक्षी नेताओं की विशाल मीटिंग की तैयारियां की जा रही हैं। जनता दल (यू) सूत्रों ने कहा कि यह मीटिंग इस प्रकार की महत्वपूर्ण मीटिंगों, जो देश के विभिन्न स्थानों पर सम्पन्न होंगी, की शृंखला की पहली मीटिंग होगी।

कर्नाटक में भाजपा की पराजय के बाद, विपक्षी नेताओं के चाल-ठाल और हाव-भाव में इस बात को लेकर नया उत्साह और जोश आ गया है और निरन्तर बढ़ता जा रहा है कि 2024 के संसदीय चुनावों में भाजपा से लड़ने के लिये गैर-भाजपा दल परस्पर सहयोग कर सकते हैं। नये संसद भवन के उद्घाटन का 19 विपक्षी दलों ने बहिष्कार किया था। इससे पूर्व, विपक्ष शासित राज्यों के छः मुख्यमंत्री पिछले शनिवार को नीति आयोग की उस मीटिंग में शामिल नहीं हुये थे, जिसकी अध्यक्षता प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने की थी।

पिछले महीनों में, विपक्षी नेताओं को साथ लाने में, खासतौर से ममता बनर्जी, अखिलेश यादव तथा अरविन्द केजरीवाल जैसे क्षेत्रीय नेताओं को एक साथ लाने का मामले में, बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को कुछ सफलता मिली है। इससे पूर्व, इन तीनों क्षेत्रीय नेताओं ने कांग्रेस के साथ आने की संभावना को ही खारिज कर दिया

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- ममता बनर्जी, अखिलेश यादव व केजरीवाल जैसे नेता भी अब नीतीश के वन-टू-वन उम्मीदवार के फॉर्मूले को स्वीकार करने लगे हैं।
- अतः पटना में विपक्ष के 18 नेता, शरद पवार, नवीन पटनायक, राहुल गांधी व अखिलेश यादव भी विपक्ष के नेताओं की बैठक में शामिल होंगे।
- एक बिहार के नेता ने, पर, यह भी कटाक्ष किया कि, इन सभी नेताओं को भाजपा सरकार द्वारा प्रेरित ई.डी./सी.बी.आई. के छापों का भय सदा सताता रहता है, अतः उनके एक मंच पर आने का यह भी बड़ा कारण है।

पेपर लीक के आरोपी शेर सिंह मीणा को प्रमोशन

बीकानेर, 29 मई (कासं)। सीनियर टीचर भर्ती पेपर लीक के मास्टरमाइंड अनिल उर्फ शेर सिंह मीणा को प्रमोट करने के मामले में माध्यमिक शिक्षा निदेशक गौरव अग्रवाल को राज्य सरकार ने एपीओ कर दिया है।

- सीनियर टीचर भर्ती पेपर लीक के आरोपी शेर सिंह मीणा को प्रिंसिपल पद पर प्रमोशन देने वाले माध्यमिक शिक्षा निदेशक गौरव अग्रवाल को राज्य सरकार ने ए.पी.ओ. कर दिया है।

गौरव को फिलहाल जयपुर में ही हाजरी देनी होगी। पेपर लीक के मास्टरमाइंड अनिल मीणा को वाइस प्रिंसिपल से प्रिंसिपल पद पर प्रमोट किया गया है, इस खबर के बाद राज्य

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

न संसद की पुरानी बिल्डिंग रही न वैसे सांसद और न वैसे दिन, जब ''जर्नलिस्ट'' स्वतंत्र घूमते थे खबर की तलाश में

अंजन रॉय उस जमाने के पुराने वरिष्ठ पत्रकार, पुरानी यादों से घिरे हुए, उदास हैं

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 29 मई। उद्घाटन का दिन आया और चला भी गया। नई संसद का उद्घाटन हो गया, हालांकि बहुतों ने बहिष्कार किया। इसका अर्थ है कि पुरानी संसद का पटाक्षेप हो गया है। अब इसका क्या होगा यह तय नहीं है। हालांकि कुछ का सुझान है कि अब पुरानी इमारतों की तरह इसे भी हैरिटेज होटल बना दिया जाए। वहीं कुछ का सुझाव है कि इसे संसदीय कार्यों से संबंधित मीटिंग व कॉन्फ्रैंस के लिए रखा जाए।

लेकिन सबसे खूबसूरत सुझाव एक जाने माने आर्किटैक्ट की तरफ से आया है कि इसे पूरी गरिमा से पुरातन होने दिया जाए और इसकी मरम्मत नहीं की जाए। प्रकृति को इसका अधिग्रहण करने दिया जाए, इस खूबसूरत इमारत कक्षों में घास-पात, पेड़-पौधे उगने दिए जाएं।

एक पुराने संसदीय संवाददाता एवं पत्रकार के रूप में मेरी इस इमारत से काफी यादें जुड़ी हुई है। चुने हुए प्रतिनिधियों के अलावा, संसदीय संवाददाता व पत्रकार भी इस भवन का प्रमुख हिस्सा रहे है। हम अक्सर यहां बैठा करते थे।

ईमानदारी से कहें तो हम लोग संसद के निर्वाचित सदस्यों के लिए हमेशा परेशानी का सबब रहे हैं। पर हमें न केवल उन्होंने हमेशा बर्दाश्त किया बल्कि प्रोत्साहन भी दिया। कई नेता तो हमारे साथ अक्सर बैठते थे और हमें ऐसे संकेत देते थे कि वे मीडिया में क्या देखना पसंद करते हैं।

यहां अक्सर खुला भाई-भतीजावाद होता था। कुछ पत्रकार कुछ बड़े नेताओं के प्रिय हुआ करते थे तो वे नेता उन्हें अपने चैम्बर में बुलाते थे। यह सर्वज्ञात था, किसी को भी इससे शिकायत नहीं थी। खबरों के लिए खुली प्रतिस्पर्द्धा होती थी पर कोई किसी की भी भावनाओं को आहत नहीं करता था।

- आज के ''डिजिटल युग'' में संसद को ''कवर'' करने वाले जर्नलिस्ट लगभग ''अनुपयोगी'' मान लिये गये हैं, पर, क्या यह प्रजातंत्र के लिये शुभ है?

जब संसद चल रही होती थी। संसद के गलियारे में अक्सर एल.के. अडवानी को अपने प्रिय बी.बी.सी. संवाददाता लम्बे कद के और सैंडल पहनने वाले मार्क टली से बात करते देखा जा सकता था। भाकपा नेता गुरदास दासगुप्ता को वामपंथी रुझान वाले पत्रकारों के साथ देखा जा सकता था। दास गुप्ता के पास बैंकिंग व फाइनैंस के लिए हमेशा नई टिप्स होती थीं।

विशेष तवज्जो देने की इस प्रवृत्ति को अलग रख दें तो संसद के गलियारों में घूमने वाले, खम्बों के इर्द-गिर्द खड़े रहने वाले सभी में भाईचारा था। गौरतलब है कि ये स्तम्भ संसद भवन की पहचान थे। इन दीर्घाओं में जब सभी लोग एकत्र होते थे और बातचीत करते थे, गप्पे मारते थे, तब वहां चाय-काफी वाले भी घूमते दिख जाते थे। और कई बार तो आम हंसी मजाक में बड़े नेता भी शामिल हो जाते थे।

दीर्घा से सटे कक्षों के सामने दोनों सदनों की टेबल्स पर वितरित किए जाने वाले दस्तावेज रखे रहते थे। यह डिजिटल युग से पहले का दौर था जब खबर या कोई भी जानकारी कागजों पर ही दी जाती थी। कई बार लाइन में लग कर इंतजार करने में भी बहुत ऊब और खीज होती थी पर आज तो लाइन में लग कर इंतजार करने की अब और खीज भी याद आ रही है।

हम सुनते हैं कि पत्रकारों को नए संसद भवन से दूर रखा गया है, कुछ को ही बुलाया गया है। वैसे डिजिटल युग में उपस्थित होने के कोई मायने नहीं है। दूसरे पत्रकारों के लिए कोई स्थान नहीं है। वहां सैंट्रल हॉल, गलियारे, दीर्घा नहीं है जहां पत्रकार ही नहीं नेता भी खुलकर बतियाते थे।

इस साहसिक कदम से खबरें और मुख्य जानकारियां ''लीक होने का दौर खत्म हो जाएगा, जिससे पत्रकार कई बड़ी-बड़ी खोज करने से वंचित हो जाएंगे। अब सूचना बेहद गोपनीय रखी जाएगी। हो सकता है इससे प्रशासन व सत्तारूढ़ पक्ष को लाभ हो लेकिन खबरों वे सूचना के लिए प्रतिस्पर्द्धा लोकतंत्र का कामकाज सुनिश्चित

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

दरगाह में तोड़फोड़ करने वाले छह गिरफ्तार

उदयपुर, 29 मई (कासं)। गींगला थाना पुलिस ने दरगाह में तोड़फोड करने के मामले में छह जनों को गिरफ्तार किया है।

प्रकरण के अनुसार, गत 23 मई को आदिल पुत्र अशफाक मन्सुरी निवासी सलूम्बर ने पुलिस थाने में रिपोर्ट दी कि, माकडसिमा गांव में पाल के पास स्थित दरगाह में 22 मई रात में अज्ञात व्यक्तियों ने तोड़फोड की। इस मामले में प्रकरण दर्ज होने पर जिला पुलिस अधीक्षक विकास शर्मा के निर्देश पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक डॉ.प्रियंका, पुलिस उप अधीक्षक सुधा पालावत के

- घटना उदयपुर के माकड़सीमा गांव की है, जहां 22 मई की रात पाल के पास की दरगाह पर अज्ञात व्यक्तियों ने तोड़-फोड़ की थी।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

जिस तरह रंग सादगी को निखार देते हैं उसी तरह सादगी भी रंगों को निखार देती है। सहयोग सफलता का सर्वश्रेष्ठ उपाय है। -मुक्ता

नए संसद भवन का उद्घाटन- अनावश्यक विवाद

नए संसद भवन का उद्घाटन 28 मई 2023 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा किया गया। शायद ही कोई उद्घाटन समारोह इतना चर्चा और विवादों के घेरे में रहा हो जितना संसद भवन का यह उद्घाटन रहा है। संसद भवन आधुनिकतम सुविधाओं से युक्त भव्य भवन है। भविष्य में परिसीमन के बाद लोकसभा और राज्यसभा की सीटों में होने वाले वृद्धि को ध्यान में रखते हुए इसे बनाया गया है। इसके निर्माण पर 862 करोड़ रुपये व्यय हुए और इसे बनने में लगभग ढाई साल लगे। इसमें कई प्रकार की विशेषताएं और विशिष्टताएं हैं जिनका सभी टी.वी. चैनलों के माध्यम से दिन भर प्रसारण किया गया। उद्घाटन समारोह के अंतर्गत आयोजित हवन, सर्वधर्म प्रार्थना, सेंगोल (धर्म दंड) का प्रधानमंत्री को सौंपा जाना आदि सभी गतिविधियों का सभी चैनलों द्वारा सीधा प्रसारण किया गया।

यह समारोह अनेक कारणों से विवादों में रहा। सबसे मुख्य विवाद का प्रश्न तब सामने आया जब कांग्रेस के नेतृत्व में विभिन्न विपक्षी दलों द्वारा यह मांग की गई कि राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के द्वारा इसका उद्घाटन कराया जाना चाहिए था। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 79 के अंतर्गत संसद का गठन लोकसभा, राज्यसभा और राष्ट्रपति मिलकर करते हैं। यह भी कहा गया कि वही दोनों सदनों को आहूत करती हैं एवं दोनों सदनों की संयुक्त बैठक को संबोधित करती हैं। अभिभाषण उनके द्वारा दिया जाता है। भारतीय संविधान में सर्वोच्च स्थान राष्ट्रपति जी को प्राप्त है। प्रधानमंत्री मोदी द्वारा किए जाने वाले उद्घाटन समारोह को स्थगित कराने हेतु सर्वोच्च न्यायालय में एक जनहित याचिका भी दायर की गई, जिसे सर्वोच्च न्यायालय ने उचित नहीं मानते हुए प्रारंभिक स्तर पर ही अस्वीकार कर दिया।

जब विपक्षी गणों की इस मांग पर कोई ध्यान सरकार द्वारा नहीं दिया गया तो लगभग 20 विपक्षी दलों ने उद्घाटन समारोह का बहिष्कार करने का सामूहिक निर्णय लिया। इस प्रकार लोकतंत्र की सर्वोच्च संस्था संसद के नए भवन का उद्घाटन 20 विपक्षी दलों के अनुपस्थिति में प्रधानमंत्री द्वारा किया गया।

कोरोना के समय जिस समय सेंट्रल विस्ता और संसद भवन का कार्य प्रारंभ हुआ था उस समय भी विपक्षी दलों ने इसका घोर विरोध यह कहकर किया था कि कोरोना महामारी से मुकाबला करने के स्थान पर सेंट्रल विस्टा पर लगभग 20000 करोड़ रुपये का खर्च करना एकदम अनुचित है। यह भी कहा गया कि दुनिया के देशों की संसद भारतीय संसद से भी बहुत पुराने भवनों में चल रही है, अतः नया भव्य भवन बनाना जनता के पैसे की बर्बादी है। सरकार ने विरोध की कोई परवाह नहीं की और इस पर कार्य जारी रखा। और अब जबकि संसद भवन बनकर तैयार हो गया है तो इसका उद्घाटन वीर सावरकर की जन्म तिथि 28 मई को किया गया। तिथि के चयन पर भी विपक्ष को आपत्ति थी। जिस प्रकार प्रधानमंत्री मोदी ने विपक्ष की बातों की उपेक्षा की उससे तो ऐसा लगता है कि प्रधानमंत्री न तो असहमति को पसंद करते हैं एवं न ही उसकी परवाह करते हैं। यदि वे विपक्ष की मांग को ध्यान में रखते हुए उनसे संवाद स्थापित करते तो संभवतया इस प्रकार की स्थिति उत्पन्न नहीं होती।

जिस समय प्रधानमंत्री नए संसद भवन के उद्घाटन के अवसर पर, सदैव की भांति उत्साह से ओतप्रोत भाषण में भारतीय लोकतंत्र की दुहाई दे रहे थे, ठीक उसी समय लगभग 2 किलोमीटर की दूरी पर ओलंपिक पदक विजेता महिला पहलवानों साक्षी मलिक और विनेश फोगाट को जबरदस्ती पुलिस द्वारा धरना स्थल से उठाया जा रहा था एवं सड़कों पर घसीटा जा रहा था। ये दृश्य विचलित करने वाले थे। ऐसा बर्बरता पूर्ण सलूक उन महिला पहलवानों के साथ किया जा रहा था जिन्होंने अपना पूरा जीवन भारत के गौरव को बढ़ाने में लगा दिया। जब वे ओलिंपिक खेलों के बाद लौटे तो प्रधानमंत्री मोदी ने अपने आवास पर चाय हेतु न केवल आमंत्रित किया अपितु उनकी बहुत सराहना करते हुए कहा कि इन्होंने भारत का गौरव बढ़ाया है। यही पहलवान एक माह से अधिक समय से जंतर-मंतर पर धरने पर बैठे हैं। उनकी मांगों के संबंध में सरकार ने कोई पहल नहीं की और न उनसे बात करके समस्या का हल निकालने का प्रयास किया। उनकी मांग केवल इतनी थी कि उनके साथ यौन उत्पीड़न करने वाले कुश्ती महा संघ के अध्यक्ष और भाजपा सांसद बृजभूषण शरण सिंह को गिरफ्तार किया जाए। वैसे भी कानून के अंतर्गत नाबालिग पीड़िता के बयान दर्ज होते ही संबंधित अभियुक्त को गिरफ्तार कर लिया जाना चाहिए था। इस प्रकार यौन उत्पीड़न के अभियुक्त को निरंतर संरक्षण प्रदान करना लोकतांत्रिक एवं संविधान की मूलभूत भावना के अनुकूल नहीं है। यह विडंबना ही है कि जब महिला पहलवानों को सड़क पर घसीटा जा रहा था, उसी समय बृजभूषण सिंह नए संसद भवन के उद्घाटन समारोह में सम्मानपूर्वक भाग ले रहा था।

यदि विपक्षी दलों की बात को ध्यान में रखते हुए एवं संवैधानिक व्यवस्था को दृष्टिगत रखते हुए प्रधानमंत्री बड़ा दिल दिखाते हुए राष्ट्रपति, जो कि एक महिला एवं आदिवासी हैं, से इस नए भवन का उद्घाटन करवा लेते तो वह अपनी छवि को और अधिक बड़ी कर सकते थे। यह अवसर उन्होंने खो दिया। विपक्षी दलों को भी अपने अहम के कारण इस समारोह के उद्घाटन समारोह में सम्मिलित नहीं होने का दोषी माना जाएगा।

यह तो बात हुई सत्तापक्ष की, जिसने विपक्ष की आलोचना को सिरे से खारिज करते हुए उन्हें लगभग इसी अंदाज में लिया कि "आपको जो करना है करते रहिए, हम वही करेंगे जो हमें करना है"। इसी प्रकार का दृष्टिकोण अन्य अवसरों पर पहले भी देखने को मिला है। पाठकों को याद होगा कि किसान आंदोलन के समय, सरकार द्वारा बार-बार यह घोषणा करने के बावजूद कि तीनों कृषि कानून किसी सूरत में वापस नहीं होंगे, आंदोलन के दबाव के चलते, प्रधानमंत्री को न केवल देश से माफी माँगनी पड़ी, तीनों कानून वापस लेने पड़े।

संसद के उद्घाटन के अवसर पर माहौल अधिक गरिमा युक्त और लोकतांत्रिक परंपराओं के अनुकूल होता यदि संपूर्ण विपक्ष भी इस उद्घाटन समारोह का भाग बनता। इस प्रकार की स्थिति का कारण सत्ता पक्ष की हठधर्मिता थी, वहीं विपक्षी दल भी इसके लिए अपनी जिम्मेदारी से मुक्त नहीं हो सकते। संभव है, विपक्षी दलों द्वारा जो तकनीकी बिंदुओं को उठाये गया, वे संविधान की मान्यताओं के अनुसार सही हों, लेकिन कांग्रेस पर विशेष रूप से यह उक्ति लागू होती है-"जिनके घर शीशे के बने हों वह दूसरों के शीशे के घर पर पत्थर नहीं फेंका करते"। जब कांग्रेस ने राष्ट्रपति से ही भवन का उद्घाटन करवाने पर जोर दिया एवं इसे संवैधानिक दृष्टि से उपयुक्त बताया, तो भारतीय जनता पार्टी के नेताओं ने भी ऐसे कई उदाहरण सार्वजनिक कर दिए जब राज्यों की विधानसभाओं का उद्घाटन राष्ट्रपति अथवा राज्यपाल द्वारा नहीं किया गया अपितु यू पी ए अध्यक्ष सोनिया गांधी द्वारा कराया गया जिनका कोई संवैधानिक अधिकार नहीं बनता था। जब कांग्रेस स्वयं इस बात का सम्मान नहीं करती रही है तो फिर केवल भाजपा से ऐसी अपेक्षा करना किसी भी रूप में सही नहीं कहा जा सकता। जहां तक नैतिकता और मर्यादा का प्रश्न है उसकी तो बात करना ही अब बेमानी लगता है। सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों ने ही इस प्रकरण में अपनी मर्यादा लाँघी है और जनता केवल एक मूक दर्शक बन कर रह गई है।

संसद के उद्घाटन समारोह के अवसर पर राज्यसभा के सभापति की अनुपस्थिति भी विशेष रूप से अनुभव की गई। उद्घाटन के अवसर पर जहां प्रधानमंत्री की कुर्सी बीच में थी उनके एक ओर लोकसभा अध्यक्ष और दूसरी ओर राज्यसभा के उपाध्यक्ष थे। राज्यसभा के सभापति भारत के उप राष्ट्रपति हैं जिन्हें नहीं बुलाया गया। प्रोटोकॉल में उपराष्ट्रपति का स्थान प्रधानमंत्री से ऊपर होता है। यदि वे आते तो फिर वे ही इसका उद्घाटन करते और ऐसा प्रधानमंत्री मोदी हरगिज़ नहीं चाहते थे। यह तो सर्वविदित ही है कि भारत सरकार के किसी भी विभाग का कोई भी शिलान्यास या उद्घाटन का कार्यक्रम हो, मुख्य अतिथि सामान्यता नरेंद्र मोदी होते हैं। संबंधित मंत्रियों को अपने खुद के विभाग के कामों का उद्घाटन व शिलान्यास करने का शायद ही कभी अवसर मिल पाता है। उदाहरणार्थ, अब तक प्रारंभ की गई 17 वंदे भारत रेलों में से 16 को तो प्रधानमंत्री स्वयं ने झंडी दिखाकर रवाना किया और एक को गृह मंत्री अमित शाह द्वारा हरी झंडी दिखाई गई। रेल मंत्री को तो ऐसा कोई अवसर ही नहीं मिला। लगता है सरकार भाजपा की न होकर केवल मोदी की है। लगभग सभी स्थान पर वही व्याप्त रहते हैं। संसद भवन के उद्घाटन का अवसर भला वह कैसे किसी और को देते।

इस पूरे विवाद में विपक्ष ने भी अपनी किरकिरी कराई है। जनता में एक प्रकार का संदेश गया है कि वह नरेंद्र मोदी के प्रति व्यक्तिगत विद्वेष की भावना से ओतप्रोत है। वह इस बात को शायद पचा नहीं पा रहे हैं कि नरेंद्र मोदी इस महत्वपूर्ण अवसर पर पूर्णतया छाए रहे।

लोकतंत्र में असहमति के प्रति असहनशीलता दिखाना घातक सिद्ध हो सकता है न केवल लोकतंत्र के लिए बल्कि उस व्यक्ति के लिए भी, जो केवल चाटुकारों से घिरा रहे। न तो मीडिया को और न दल के किसी सदस्य को कोई बात नेता के विरुद्ध कहने की अनुमति हो। कोई ऐसा दुस्साहस करे भी तो उसे किसी न किसी रूप से प्रताड़ित करने का रास्ता निकाल लिया जाता है। कुछ विपक्षी दलों के नेता तो उद्घाटन समारोह में संभवतः इसीलिए शामिल हुए कि कहीं उन्हें सरकार के कोप भाजन का शिकार न होना पड़े।

यदि विपक्षी दलों की बात को ध्यान में रखते हुए एवं संवैधानिक व्यवस्था को दृष्टिगत रखते हुए प्रधानमंत्री बड़ा दिल दिखाते हुए राष्ट्रपति, जो कि एक महिला एवं आदिवासी हैं, से इस नए भवन का उद्घाटन करवा लेते तो वह अपनी छवि को और अधिक बड़ी कर सकते थे। यह अवसर उन्होंने खो दिया। विपक्षी दलों को भी अपने अहम के कारण इस समारोह के उद्घाटन समारोह में सम्मिलित नहीं होने का दोषी माना जाएगा। कुल मिलाकर, यह समारोह उतना गरिमा पूर्ण नहीं हो पाया जिसकी अपेक्षा थी। उद्घाटन के अवसर पर विपक्ष का होना स्वस्थ और मजबूत लोकतंत्र का संकेत होता। नए संसद भवन के हॉल की सीटें तो सरकार द्वारा विभिन्न अतिथियों को आमंत्रित करके भर ली गईं। अन्यथा उद्घाटन समारोह के अवसर पर बहुत सारी सीटें हॉल में खाली ही दिखाई देतीं जो अच्छा दृश्य प्रस्तुत नहीं करता। साधारण नागरिक की तरह हम तो यही कह सकते हैं कि यह पूरा प्रकरण अनावश्यक था जिसे टाला जा सकता था। यदि दोनों ही पक्ष अपने-अपने अहंकार को छोड़कर परस्पर संवाद की स्थिति बनाते और मर्यादाओं को ध्यान में रखते हुए लोकतंत्र की स्वस्थ परंपराओं को आगे बढ़ाते तो अच्छा होता। काश, ऐसा हो पाता।

-अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

कृषि संस्कृति विकास के जरिए खेती को बचाएं

डॉ. अरुणा व्यास

कृषि को भले ही भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ माना जाता रहा है पर योजनागत रूप में जितना कम ध्यान कृषि क्षेत्र पर दिया जाता है, उतना संभवतः अन्य किसी भी क्षेत्र पर नहीं दिया जाता। इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं है कि खेती आज भी किसानों के लिए बहुत अधिक लाभकारी क्षेत्र नहीं है। शायद यही वह बड़ा कारण भी है कि पिछले कुछ वर्षों के दौरान खेती की जमीनों का धंधा बड़े पैमाने पर देश में फैला है। किसान खेती से बेरुखी भी करते जा रहे हैं। सवाल यह है कि कैसे कृषि को किसानों के लिए लाभकारी बनाया जाए? कैसे ऊंची लागत को कम किया जाए और कैसे उत्पादकता में तेजी से हो रही कमी की खाई को पाटा जाए।

स्वाभाविक ही है कि इसके लिए कृषि को संस्कृति की समग्रता के रूप में स्वीकार करते हुए इस पर पर्याप्त ध्यान देने की आज सर्वाधिक आवश्यकता है। यह वह समय है जब खेती की जमीनें निरंतर कम होती जा रही है, उत्पादन की लागत तेजी से बढ़ती जा रही है और इसी से खेती से भी वास्तविक किसान निरंतर दूर होते जा रहे हैं। किसान का लेबल उन लोगों के साथ लग रहा है जो मूलतः किसान नहीं हैं, पर इसमें फायदे का सौदा देखकर इसे बड़े पैमाने पर अपना रहे हैं। इससे जो बड़ी समस्या खेती-किसानी की पैदा हुई है, वह यह है कि खेती केवल मुनाफे के उद्देष्य से की जाने लगी है। यह नहीं देखा जा रहा कि अधिक पैदावार लेने के लालच में मिट्टी की उर्वराा शक्ति खत्म हो रही है, रासायनिक उर्वरको के बेजा इस्तेमाल से बीमारियां घर-घर दस्तक दे रही है और पानी की निरंतर कमी होती जा रही है।

यह सही है, खाद्य सुरक्षा की दृष्टि से भले अभी कोई बड़ा संकट हमारे समक्ष नहीं है परन्तु विष्व की सबसे बड़ी जनसंख्या वाले हमारे देष के बरक्स उत्पादन आने वाले वर्षों में इस कदर कम रहने वाला है कि खाद्यान्न के बड़े संकट से देश को जूझना पड़े तो इसमें कोई अचरज नहीं होगा। यह बात इसलिए कि जब खेती वास्तविक किसान नहीं करके व्यापार से जुड़े लोग कर रहे हैं तो जैसे ही खेती वाली जमीन उनके लिए लाभ का सौदा नहीं रहती तो वे जमीनों को किसी अन्य प्रयोजन से बेच-बाचकर अन्यत्र लाभ का सौदा करते हैं, इसी से जमीनों का धंधा तेजी से चल रहा है।

असल में कृषि हमारे यहां आज भी प्राथमिकता क्षेत्र में नहीं है। खेती से संबंधित विभाग राज्यों में बने हुए हैं परन्तु उनके अंतर्गत बरसों से चली आ रही योजनाओं के अंतर्गत अनुदान और कुछेक किसान मेले, आयोजन भर किए जाते रहे हैं। बदलते समय के अनुसार किसानों की आवश्यकताओं, उनकी समस्याओं और खेती से उनके निरंतर विलग होते जाने पर कहीं कोई ध्यान नहीं है। इससे बड़ा इसका उदाहरण और क्या होगा कि प्रतिदिन के समाचार पत्रों में हजारो एकड़ भूमि के गांवों की खेती की जमीन को आवासीय प्रयोजन से काटकर वहां मल्टीस्टोरी वातानुकूलित मकानों के सपने विज्ञापन के रूप में बेचे जा रहे हैं। कहीं इस ओर कोई सोच शायद बड़े स्तर पर नहीं है कि आवासीय प्रयोजन से भू रूपानतरण से पहले उस जमीन पर बड़े स्तर पर खेती होती रही है। माने खेत लीलकर आवास या फिर उसमें निवेश के सुनहरे सपनों का व्यापार धड़ल्ले से चल रहा है परन्तु इस पर कहीं कोई चिंतन नहीं है कि कैसे आने वाले समय में इन कम हुए खेतों की फसल की भरपाई आबादी के लिए हो पाएगी।

यह सही है, खेती हमारे यहां मानसून का जुआ है परन्तु इतना ही सच यह भी है कि यदि खेती की जमीनों की ढंग से सार-संभाल हो, सिंचाई के साधनों का विकास हो और वर्षाजल संरक्षण के परम्परागत जल स्त्रोतों की ओर हम ध्यान दें और इस संबंध में कोई सुनियोजित नीति पर देशभर में कार्य हो तो खेती के दिन भी फिर सकते हैं। विडम्बना यह भी है कि खेती से जुड़ी तमाम योजनाओं का मूल इस समय बड़े किसान है। छोटे और मंझले किसानों को उनके उत्पादन के विपणन के लिए कहीं कोई योजना नहीं है। दूसरी बड़ी समस्या यह भी है कि जलवायु परिवर्तन से जो संकट खेती के समक्ष जुड़ता जा रहा है, उस पर भी कहीं कोई ध्यान नहीं है। भूजल के निरंतर छीजते चले जाने और भूमि की उर्वरा शक्ति क्षीण होते जाने पर समय रहते ध्यान दिया जाना जरूरी है। अच्छा होता इस संबंध में राष्ट्रीय स्तर पर किसी बड़ी नीति की भी पहल हो।

देशभर में खेती को जलवायु परिवर्तन के संकटो से बचाने के लिए किए जाने वाले उपायों पर इस समय व्यापक स्तर पर जागरूकता अभियान चलाए जाने की जरूरत है। कैसे खेती लाभकारी हो, इस पर भी संवाद सभी स्तरों पर हो और सबसे जरूरी यह भी है कि जमीनों का जो धंघा खेतों को लील कर चलाया जा रहा है, उसके बारे में भी व्यापक स्तर पर मंथन कर कोई नीति बनाई जाए। कृषि संस्कृति के प्रसार के लिए क्यों नहीं देशभर में एक मुहिम ही चलाई जाए।

- डॉ. अरुणा व्यास

ब्रिटेन के मंत्री तारिक अहमद पहली बार अपने ननिहाल जोधपुर आए

- **मेहरानगढ़ किले को देखकर अभिभूत हुए तारिक अहमद**
- **एनजीओ में महिलाओं से मिले तारिक अहमद, ट्वीट किया-सलाम जोधपुर**

जोधपुर, (कासं)। ब्रिटेन में मध्य पूर्व, उत्तरी अफ्रीका, दक्षिण एशिया और यूनाइटेड किंगडम के संयुक्त राष्ट्र राज्य मंत्री तारिक अहमद पहली बार अपने ननिहाल जोधपुर आए। वे इससे पहले भारत तो कई बार आ चुके हैं, लेकिन अपनी मां के मूल शहर को देखने का मौका पहली बार मिला। यहां मेहरानगढ किले की हिस्ट्री और रिस्टोरेशन वर्क को देखकर वह आश्चर्यचकित रह गए।

इसके बाद संभली ट्रस्ट में महिलाओं से बात की और उनके आर्ट वर्क को नजदीक से देखा। उनके दल में स्टीफन हिक्लिंग (ब्रिटिश डेप्युटी हाई कमिशन, गुजरात एवं राजस्थान) और उन के कार्यलय से साथी, एंड्रयू जैकसन (डेप्युटी डायरेक्टर एचएमजी इंडिया कोऑर्डिनेटर व जोधपुर उत्तर के महापौर कुंती देवडा भी रही। मंत्री तारिक अहमद ने खुद ट्वीट करते हुए लिखा मेरी मां ने 76 साल पहले अपना शहर छोडा था, अब मैं अपने ननिहाल में पहली बार आया हूं-सलाम जोधपुर। उन्होंने अपने अधिकारियों के साथ उमेद पैलेस और मेहरानगढ़ का हस्तशिल्प देखा। यहां के इतिहास और आर्ट रिनोवेशन वर्क को देख कर खुशी जताई। ब्रिटेन के राज्यमंत्री का उम्मेद भवन पैलेस में पारंपरिक तरीके से स्वागत किया गया उन्होंने यहां पहुंचते ही लिखा सलाम जोधपुर। पांच दिन की भारत यात्रा में वह जोधपुर के साथ ही नई दिल्ली और हैदराबाद में रुकेंगे। यहां 3 पॉइंट पर भारत के साथ एग्रीमेंट हो सकता है।

इमर्जिंग वुमन लीडर्स प्रोग्राम के तहत उन्होंने जोधपुर के संभाली ट्रस्ट में स्वयंसेवी संगठनों से जुडी महिलाओं से बातचीत की। वुमन लीडर्स के लिए संभली ट्रस्ट में महिलाओं से मिले। मंत्री अहमद ने इमर्जिंग वुमन लीडरशिप के लिए जोधपुर के संभली ट्रस्ट में महिलाओं से मुलाकात की। सहसंस्थापक मुक्ता कुमारी ने जोधपुरी पारंपरिक गीतों, ढोल-थाली, कुमकुम लगा कर, माला पहना कर स्वागत किया। संस्था के संस्थापक गोविंद सिंह राठौड ने ट्रस्ट में चल रहे महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम, बालिका शिक्षा कार्यक्रम एवं लैंगिक अल्पसंख्यक समाज की पीडाओं एवं उसके लिए ट्रस्ट द्वारा किए जा रहे कार्यों एवं मुश्किलों के निवारण की प्रक्रिया से अवगत करवाया। ब्रिटेन के राज्यमंत्री तारिक अहमद ने संभली ट्रस्ट में महिलाओं के आर्ट वर्क को बारीकी से देखा और कई सवाल किए।

संस्था की अधिवक्ता शिवानी सिंह, रीमा गुप्ता क्वात्रा, मनोचिकित्सक डॉ. दीप्ति राजोत्य ने बताया की ट्रस्ट द्वारा महिलाओं पर हो रहे अत्याचार के खिलाफ एक निर्भया हेल्पलाइन नंबर है जिसे वर्ष 2014 से उपयोग में लिया जा रहा है, इस हेल्पलाइन के माध्यम से महिलाओं को कानूनी सहयोग वह मनोचिकित्सक सेवाएं प्रदान की जाती है।

ट्रस्ट की विमलेश सोलंकी ने स्वयं सहायता समूह के माध्यम से महिलाओं को आर्थिक रूप से सक्षम बनाने एवं बाल यौन हिंसा के रोकथाम पर ट्रस्ट के कार्यक्रमों से अवगत करवाया। लैंगिक अल्प संख्यक समुदाय के सशक्तिकरण एवं समय से मुख्यधारा से जोडने संबंधित कार्यों की जानकारी राहुल चौहान ने दी। मंत्री अहमद ने महिलाओं से कई सवाल भी पूछे। संभली ट्रस्ट के ट्रस्टी वीरेंद्र सिंह चौहान ने कोरोना में संस्था द्वारा किए गए कार्यों एवं प्रथम राशन बैंक का विवरण दिया।

नवनिर्मित भारतीय संसद में कोटपूतली के ग्राम भैंसलाना के ब्लैक मार्बल का इस्तेमाल

- **कोटपूतली के भैंसलाना का ब्लैक मार्बल विश्व प्रसिद्ध है**
- **यूरोप समेत खाड़ी देशों में ब्लैक गोल्ड के नाम से है सुप्रसिद्ध भैंसलाना का ब्लैक मार्बल**
- **संसद के निर्माण में 500 टन से अधिक ब्लैक मार्बल का हुआ है इस्तेमाल**
- **उदयपुर के मूर्तिकारों ने इस काले मार्बल पर बेहद उम्दा नक्काशी का कार्य कर भारतीय संसद को नये रूप में उकेरा है**

कोटपूतली, (निसं)। नवनिर्मित भारतीय संसद के निर्माण में कोटपूतली जिले के ग्राम भैंसलाना के ब्लैक मार्बल के इस्तेमाल ने ना केवल भैंसलाना बल्कि पूरे कोटपूतली जिले को राजस्थान के साथ-साथ देश भर में सुर्खियों में ला दिया है।

उल्लेखनीय है कि पीएम नरेन्द्र मोदी ने रविवार को राजधानी नई दिल्ली में देश की नई संसद का उद्घाटन किया। जिसमें राजस्थान के 6 जिलों से लाई गई वस्तुओं का इस्तेमाल किया गया है। इसमें अशोक स्तम्भ के निर्माण के साथ-साथ पत्थरों की नक्काशी का कार्य आबु रोड़ व उदयपुर के मूर्तिकारों ने किया है। वहीं लगभग दो वर्षों तक चले संसद भवन के निर्माण में अलग-अलग चरणों में 40 ट्रकों में भरकर यहां के ग्राम भैंसलाना से 500 टन से अधिक ब्लैक मार्बल नई दिल्ली भिजवाया गया। इस मार्बल को खानों से निकालने के बाद चिराई के लिए पहले अजमेर के किशनगढ़ फिर वहां से नई दिल्ली भेजा गया। जहां संसद भवन में अलग-अलग वस्तुओं के निर्माण के साथ-साथ मूर्तिकारों ने इस ब्लैक मार्बल में नक्काशी का कार्य किया है। जिससे भवन की खुबसूरती काफी बढ़ गई है। यह ब्लैक मार्बल नये संसद की शान बढ़ा रहा है जो क्षेत्रवासियों के लिए बेहद गर्व का विषय है।

मुगलकालीन है इतिहास : यहां से करीब 15 किमी दूर स्थित भैंसलाना ग्राम की उक्त खानों का इतिहास मुगलकालीन है। उदयपुर के मूर्तिकारों ने इस काले मार्बल पर बेहद उम्दा नक्काशी का कार्य कर भारतीय संसद को नये रूप में उकेरा है। कोटपूतली के ऐतिहासिक गांव चतुर्भुज जो कि यहां से महज 05 किमी की दूरी पर स्थित है। वहां स्थित चतुर्भुज भगवान मंदिर में बनी मूर्ति का निर्माण भी इसी काले मार्बल से हुआ है।

बताया जाता है कि इस मंदिर का निर्माण वर्ष 1567 में हुआ था। क्योंकि चतुर्भुज गांव से ही साहबी नदी बहती है जिस पर मुगल बादशाह अकबर ने बांध बनाने का प्रयास किया था एवं विफल रहा था। इसी के बाद चतुर्भुज में मंदिर का निर्माण हुआ। इसी ब्लैक मार्बल से अन्य स्थानों पर जैसे मनोहरपुर में भी भगवान चतुर्भुज के मंदिर एवं वामन भगवान का मंदिर बनाया गया है। अन्य स्थानों पर भी इसी ब्लैक मार्बल से मंदिर व मूर्ति निर्माण का उल्लेख है जो इसकी विशिष्ठ पहचान है। विशेष चमक एवं काले चटक रंग के कारण यह ब्लैक मार्बल अलग ही छटा बिखेरता है। इसलिए इसे ब्लैक गोल्ड भी कहा जाता है।

कैल्शियम की अधिक मात्रा होने के कारण यह काफी नरम होता है जो नक्काशी के दौरान औजारों के उपयोग से टुटता नहीं है एवं मूर्तिकार इसे मनचाहा रूप दे सकते है। घिसाई के बाद भी इस पर चमक रहती है। मार्बल की यह भी विशेषता है कि निरन्तर सफाई करने से इसकी चमक बढ़ती है, जिसकी वजह से इससे पत्थर की मूर्तियां, टेबल, शिलालेख, स्तम्भ व शिवलिंग आदि भी बनाये जाते है।

ब्लैक गोल्ड के रूप में है पहचान :- भैंसलाना का यह ब्लैक मार्बल राजस्थान के मकराणा स्थित सफेद मार्बल की तरह दुनिया भर में ब्लैक गोल्ड के रूप में पहचान बना चुका है। जो कि विशेष तौर पर यूरोप सहित खाड़ी देशों में काफी लोकप्रिय है। ब्लैक मार्बल की चट्टानों को भैंसलाना की खानों से निकालने के बाद ब्लॉक के रूप में अजमेर के किशनगढ़ से चिराई कर गुजरात के कांडला पोर्ट द्वारा खाड़ी देशों में भेजा जाता है। इस व्यवसाय से बड़ी संख्या में भैंसलाना के युवा भी जुड़े हुए है। स्थानीय मार्बल व्यवसायी धर्म सिंह शेखावत का कहना है कि देश की सबसे बड़ी पंचायत में भैंसलाना के काले मार्बल का उपयोग स्थानीय ग्रामीणों के साथ-साथ पुरे कोटपूतली वासियों के लिए गर्व की बात है।

नई संसद में जब सांसद बैठेगें तो इस बात का गर्व हम सभी को होगा। भारतीय संसद देश की पहचान को दुनिया भर में मजबुत करती है। ऐसे में इसकी सुन्दरता को बढ़ाने वाले ब्लैक मार्बल की प्रसिद्धि बढ़ेगी तो इसका लाभ भैंसलाना के मार्बल व्यापारियों को भी मिलेगा।

इसके लिए ग्रामीण धर्म सिंह शेखावत समेत विक्रम सिंह, शम्भु सिंह, घम्मन यादव, सत्यवीर, हेमराज सिंह, सुमेर, गोविंद सिंह, आकाश पारीक व गजेन्द्र सिंह आदि ने पीएम मोदी का आभार जताया है।

राशिफल मंगलवार 30 मई, 2023

पंडित अनिल शर्मा

ज्येष्ठ मास, शुक्ल पक्ष, दशमी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2080, हस्त नक्षत्र बुधवार प्रातः 6:00 तक, सिद्धि योग रात्रि 8:54 तक, गर करण दिन 1:09 तक, चन्द्रमा कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-वृष, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-कर्क, बुध-मेष, गुरू-मेष, शुक्र-मिथुन, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज रवियोग और कुमार योग सम्पूर्ण दिन-रात है। भद्रा रात्रि 1:28 से बुधवार दिन 1:47 तक रहेगी। शुक्र कर्क राशि में सांय 7:39 पर प्रवेश करेगा। आज गंगा दशमी, मटुक भैरव जयन्ती, श्री रामेश्वर प्रतिष्ठा दिवस यात्रा दर्शन पूजा है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़ियाः चर 9:01 से 10:43 तक, लाभ-अमृत 10:48 से 2:06 तक, शुभ 3:48 से 5:29 तक।

राहूकालः 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 5:38, सूर्यास्त 7:11

मेष
परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। परिवार में चल रही स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष
परिवार में शुभ-धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

मिथुन
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी और व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

कर्क
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह
आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। परिवार में अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा।

कन्या
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी। व्यावसायिक खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। मन में असंतोष रहेगा।

वृश्चिक
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

धनु
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है।

कुंभ
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

मीन
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

महेश नवमी पर शोभायात्रा में गूंजे हर हर महादेव के जयकारे, झांकियों ने मन मोहा

जोधपुर शहर में महेश नवमी के अवसर पर शोभायात्रा निकाली।

पाली शहर में माहेश्वरी समाज की शोभायात्रा में महिलाओं ने उत्साह से भाग लिया। फोटो-राष्ट्रदूत

पाली, (नि.सं.)। पाली शहर में महेश नवमी के अवसर पर माहेश्वरी समाज की ओर से सोमवार को भव्य शोभायात्रा निकाली गई।

शोभायात्रा नाड़ी मोहल्ला स्थित माहेश्वरी समाज भवन से सुबह 9 बजे बैंड बाजों के साथ रवाना हुई। सबसे आगे समाज की बालक बालिकाओं का बैंड मधुर ध्वनि बिखेर रहा था। वहीं सैकड़ों समाज बंधु भगवान महेश के जयकारा लगाते चल रहे थे। बैंड बाजों के पीछे समाज की महिलाएं और युवतियां बोलो रे बेलीया अमृतवाणी हर हर महादेव के जयकारे लगा रही थी। भगवान महेश की सजी झांकी के आगे बैंड बाजों के साथ महेश्वरी समाज के लोग, युवा मंडल महिला मंडल ड्रेस कोड में चल रहे थे।

शोभा यात्रा के नाड़ी मोहल्ला से रवाना होकर बादशाह का झंडा पहुंचने पर नगर परिषद की ओर से सभी को ज्यूस पिलाया गया। वही सभापति रेखा राकेश भाटी, गजेंद्र सिंह महेश ने समाज के अध्यक्ष लक्ष्मीकांत लाहोटी, रवी मोहन भूतड़ा ,नरेंद्र माचर, कैलाश टवानी, गुरुचरण हेड़ा ,बजरंग लाल महिला मंडल की शांति कासट आदि का साफा माला पहना कर स्वागत किया। सर्राफा बाजार में पुष्प वर्षा स्वागत जैन युवा संगठन विधायक ज्ञानचंद पार्क आदि ने स्वागत किया। यहां से उदयपुरिया बाजार , चूड़ीगर बाजार, रूई कटला ,धान मंडी सराफा बाजार, फतेहपुरिया बाजार मैं अठावाल समाज की ओर से स्वागत के पश्चात पानी दरवाजा होते हुए महेश वाटिका पहुंच समाप्त हुआ। यहां पर प्रसादी का आयोजन हुआ। इस आयोजन में समाज के प्रमुख एवं वरिष्ठ लोग माहेश्वरी समाज पाली के अध्यक्ष लक्ष्मीकांत लाहोटी, सचिव ताराचंद टावरी, जिला माहेश्वरी महासभा अध्यक्ष रवि मोहन भूतड़ा, गुरु चरण हेडा, रामेश्वर प्रसाद सोमानी, शिव प्रकाश झंवर, सुशील कोठारी, प्रमोद जेथलिया, नरेंद्र माछर, मधुसूदन नागोरी, दिनेश हेड़ा, मधुसूदन लखोटिया, दामोदर सोमानी, कैलाश टवानी, राजकुमार सोमानी, के बी धुत, चतुर्भुज खाबानी, शरद खेतावत, विनोद मोदी, संजय राठी, बाल गोपाल राठी, नवनीत तापड़िया, अजय जेथलीया, अंकित जेथलीया, रामगोपाल बंग, अतुल लखोटिया, लोकेश बिरला, राहुल पुंगलिया, मधुसूदन बियानी, सुशील भट्टड युवा संगठन अध्यक्ष राजेंद्र केला उपाध्यक्ष अंशुल हेडा, सह सचिव राजेश मूंदड़ा, सांस्कृतिक, चिराग खाबानी, विशाल चंडक, गिरीश राठी, हर्ष बिरला, माहेश्वरी महिला संगठन की अध्यक्ष शांति कासट, सचिव आशा भूतडा, उपाध्यक्ष आभा जी सोनी, नीता धुत, सरला काबरा मौजूद रही।

नीलकंठ महादेव की पूजा की

जैसलमेर, (नि.सं.)। गड़ीसर सरोवर स्थित नीलकंठ महादेव की विधि विधान से पूजा अर्चना कर माहेश्वरी समाज द्वारा महेश नवमी पर्व की परम्परागत शोभायात्रा का आयोजन किया गया।

शोभायात्रा में बैंड द्वारा मधुर स्वर लहरी में भजन गाये गये। महिलाएं, बालिकाओं द्वारा मंगल कलश लिये आगे आगे चलकर और दुपहिया वाहनो पर केसरिया साफा पहने युवा युवतियों शोभा बढ़ा रही थी।

शोभायात्रा की झांकियों में महादेव, वीणा वादिनी मांता सरस्वती, अंजनी पुत्र हनुमान, राम लक्ष्मण जानकी, माखनचोर कान्हा सहित ने वातावरण भक्तिमय बना दिया।

शोभायात्रा गड़ीसर माहेश्वरी बगेची से प्रारंभ होकर गुलासतला रोड, आसनी रोड, गोपा चौक, जिंदानी चौकी, गोयदानियों की हट्टां, गांधी चौक, अमरसागर गेट के सेवासदन के आगे से ठाामीण बस स्टेण्ड होते हुए सोयधरी देवी लीलाधर राठी ट्रस्ट वृद्धाश्रम पहुंची। जहां पर समाज के छात्र छात्राओं को पुरस्कार, महेश नवमी प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय, तृतीय आने वाले समाज जनों को पुरूस्कार प्रदान किए गए।

रात्री में स्नेह भोज का आयोजन माहेश्वरी भवन में हुआ। माहेश्वरी नव युवक मंडल अध्यक्ष विजय डांगरा और सचिव तरूण गोलकिया द्वारा आयोजन में सहयोग के लिए सभी समाजजनों का आभार प्रकट किया गया।

जैसलमेर में गड़ीसर सरोवर स्थित नीलकंठ महादेव की विधि विधान से पूजा अर्चना कर शोभायात्रा निकाली। फोटो-राष्ट्रदूत

संभाग स्तरीय मारवाड युवा महोत्सव का आगाज

जोधपुर, (कासं)। राजस्थान युवा बोर्ड युवा मामले एवं खेल विभाग, राजस्थान सरकार तथा जोधपुर संभांग एवं जोधपुर जिला प्रशासन के संयुक्त तत्वावधान में सोमवार को डॉ. एस एन मेडिकल कॉलेज के सभागार में दो दिवसीय संभाग स्तरीय मारवाड़ युवा महोत्सव का उद्घाटन मुख्य अतिथि राजस्थान युवा बोर्ड के अध्यक्ष सीताराम लाम्बा के निर्देशन में हुआ।

मारवाड़ युवा महोत्सव में जोधपुर सहित जैसलमेर, बाड़मेर, सिरोही, पाली एवं जालोर के 11 हजार से अधिक प्रतिभाशाली युवाओं ने 30 से अधिक विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लिया। डॉ. एसएन मेडिकल कॉलेज में आयोजित शुभारम्भ कार्यक्रम में छात्राओं ने राजस्थानी गीतों पर मनमोहक प्रस्तुतियां दी।

सीताराम लाम्बा ने कहा युवाओं को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की मंशा अनुसार युवा प्रतिभाओं को स्वयं के परखने का अवसर देने और प्रतिभाओं को निखारने के लिए प्रदेशभर में युवा महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि अभी तक शेखावटी एवं नाथद्वारा में युवा महोत्सव का आयोजन हुआ है, युवा महोत्सव के आयोजन करने का मुख्य उद्देश्य राजस्थान की विलुप्त होती कलाओं का संरक्षण करना तथा युवाओं का सर्वांगीण विकास करना है।

उन्होंने पंडित जवाहरलाल नेहरु की भारत एक खोज पुस्तक का जिक्र करते हुए कहा कि भारत भ्रमण के माध्यम से देश प्रेम की भावना के विकसित करने की आवशयकता जताई।

संभागीय आयुक्त कैलाश चंद मीणा ने अपने स्वागत उद्बोधन में कहा कि राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भागीदारी बहुत महत्वपूर्ण है। इसी के तहत 15 से 29 वर्ष के प्रतिभावान युवाओं को आगे बढ़ाने के लिए मारवाड युवा महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है।

उन्होंने संभागियों को महोत्सव में भाग लेने के लिए शुभकामना दी और उनके उज्जवल एवं उत्कृष्ट भविष्य की कामना की।

उद्घाटन समारोह मे माडा उपाध्यक्ष कीर्ति सिंह भील, राज्य गौसेवा आयोग के उपाध्यक्ष सुमेर सिंह राजपुरोहित, अनुसूचित जाति आयोग के उपाध्यक्ष सचिन सर्वेटे, युवा बोर्ड के सदस्य नितेश पुष्करणा, प्रो अयुब खान, नरेश जोशी, श्रवण पटेल, रामनिवास बुद्धनगर, पुखराज देवराया, विजय लक्ष्मी पटेल, संभागीय आयुक्त कैलाश चंद मीना और बोर्ड के सचिव कैलाश पहाड़िया उपस्थित रहे।

भाजपा की बैठक हुई

जालोर, (कासं)।भाजपा प्रदेश नेतृत्व जिलाध्यक्ष श्रवणसिंह राव बोरली व विधायक जोगेश्वर गर्ग के निर्देशानुसार भाजपा नगर मंडल जालोर की ओर से सोमवार को मंडल कार्यसमिति का आयोजन किया गया।

नगर महामंत्री व पार्षद दिनेश महावर ने बताया कि भाजपा नगर मंडल द्वारा मंडल कार्यसमिति का आयोजन होटल रघु रतन पैलेस के हॉल में किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के नाते जिला महामंत्री हरीश राणावत उपस्थित थे।मुख्य अतिथि के नाते नगर परिषद सभापति गोविंद टाक उपस्थित थे। वहीं अध्यक्षता नगर अध्यक्ष सुरेश सोलंकी ने की। विशिष्ट अतिथि के नाते मंडल संयोजक व जिलाकोषाध्यक्ष महेंद्र मुणोत ओबीसी मोर्चा जिलाध्यक्ष ओबाराम देवासी पूर्व नगर अध्यक्ष ओटाराम सोलंकी भाजयुमो नगर अध्यक्ष दिलीप भट्ट एस सी मोर्चा जिला महामंत्री इंद्र गर्ग उपस्थित थे।

सर्वप्रथम भारत माता पंडित दीनदयाल उपाध्याय श्याम प्रसाद मुखर्जी की तस्वीर के समक्ष पुष्पांजलि अर्पित कर वन्देमातरम गान का गायन किया। जिला महामंत्री हरीश राणावत ने कहा कि हमे अब कमर कस लेनी है अभी चुनावी वर्ष है। साथ आगामी कार्यक्रमो की जानकारी दी। वही कार्यक्रमो को योजना बनाकर करने की बात कही। आम जनता प्रदेश कांग्रेस सरकार से परेशान है। नगर परिषद सभापति गोविंद टाक ने राजनीतिक प्रस्ताव रखा।और कहा कि जिस प्रकार आम जनता प्रदेश की कांग्रेस सरकार से त्रस्त है। राज्य की कांग्रेस सरकार जनता को पानी बिजली जैसी मूलभूत आवश्यकताओं को भी पूरा नहीं कर पा रही है। साथ ही सरकारी मिशनरी का भी पूरा दुरुपयोग कर रही है। नगर अध्यक्ष सुरेश सोलंकी ने कहा कि कार्यसमिति का मुख्य उद्देश्य कार्य विभाजन करना है। हम सब मिलकर एकजुट होकर संगठन का कार्य करे। हमे सभी पार्टी विचार परिवार के मोबाइल में सरल ऐप डाउनलोड करवाना है। कार्यसमिति में महेंद्र मुणोत ओबाराम देवासी ओटाराम सोलंकी दिलीप भट्ट ने भी सम्बोधित किया। साथ ही सभी ने मिलकर प्रचार-प्रसार के तहत वाहनों के लगाने के लिए स्पीकर का विमोचन किया। समापन मे नगर उपाध्यक्ष मंजू भूतडा ने सभी का आभार धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यसमिति का संचालन नगर महामंत्री व पार्षद दिनेश महावर ने किया।

कार्यसमिति में नगर महामंत्री रतन सुथार अरविंद गर्ग सोशल मीडिया जिला संयोजक चन्द्रकान्त सुंदेशा नगर उपाध्यक्ष अशोक गुर्जर रवि सोलंकी घनश्याम देवासी मेथी देवी मंजू भूतडा नगर मंत्री सूरजपाल गहलोत ओबीसी मोर्चा जिलाउपाध्यक्ष दिलीप सोलंकी सहित कई पदाधिकारी कार्यकर्ता जनप्रतिनिधि मौजूद थे।

जालोर में तेज अंधड़ व बारिश से कई जगह नुकसान

जालोर, (कासं)। जिलेभर में रविवार देर शाम को तेज अंधड़ व बारिश होने से कई जगह काफी नुकसान हुआ है। तेज अंधड से कई घरो के टीन छप्पर, पेड पौधो व विद्युत पोल गिरने से जनजीवन अस्त व्यस्त हो गया।

जालोर में तेज अंधड के साथ बारिश ने काफी नुकसान किया। जालोर शहर सहित आस पास के गांवो में लोगो के घरो के टीन छप्पर उड़ गये। वही तेज हवा से कई जगह पेड़ गिरने से कई जन हानि नही हुई। वही बिजली गिरने से कई जगह मवेशी कालग्रास बन गये। तेज हवा के चलते जन जीवन प्रभावित नजर आया। वही तेज अंधड से रेत के गुब्बार उड़ने से लोगो के घरो में रेत भर जाने से लोगो घरो से रेत निकालते नजर आये। बारिश व अंधड से काफी नुकसान होने से किसानो ने सरकार से मुआवजा की मांग की है।

जिले में बीते दिनों तेज अंधड एवं बारिश के कारण एक पॉवर ट्रांसफार्मर सहित 1208 विद्युत पोल क्षतिग्रस्त हुए जिसके कारण 343 गांवों की विद्युत आपूर्ति प्रभावित हुई। डिस्कॉम के अधीक्षण अभियंता महेश कुमार व्यास ने बताया कि जिले में विगत दिनों तेज अंधड एवं बारिश के कारण रानीवाड़ा में एक पॉवर ट्रांसफार्मर सहित 33 केवी के 55 पोल, 11 केवी के 860 पोल, एल.टी. लाईन के 293 पोल सहित कुल 1208 पोल क्षतिग्रस्त हुए। इसी तरह विभिन्न क्षमताओं के 94 वितरण ट्रांसफार्मर क्षतिग्रस्त हुए जिसके कारण जिले के कुल 343 गांवों की विद्युत आपूर्ति बाधित हुई। उन्होंने बताताया कि डिस्कॉम द्वारा विद्युत आपूर्ति बाधित गांवों में से 262 गांवों की विद्युत आपूर्ति बहाल की जा चुकी है तथा शेष गांवों में नये पोल लगाकर एवं विद्युत तंत्र को दुरूस्त कर विद्युत आपूर्ति बहाल करने का कार्य द्रुत गति से जारी है।

सेना के निर्माण निषेध क्षेत्र में अवैध निर्माणों पर कार्रवाई

जोधपुर विकास प्राधिकरण के अतिक्रमण निरोधक दस्ते ने ग्राम डिगाड़ी में सेना के निर्माण निषेध क्षेत्र में अवैध निर्माण पर कार्रवाई की।

जोधपुर, (कासं)। जोधपुर विकास प्राधिकरण के अतिक्रमण निरोधक दस्ते ने नियमित रूप से अवैध निर्माणों, अतिक्रमणों, सडक मार्गाधिकार के अतिक्रमणों सहित विभिन्न अतिक्रमण पर कार्यवाही की जा रही है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार दस्ते ने सोमवार को ग्राम डिगाड़ी में सेना के निर्माण निषेध क्षेत्र में बिना सेना के अनापत्ति प्रमाण पत्र एवं प्राधिकरण की स्वीकृति के बिना किए जा रहे निर्माण कार्यों पर कार्यवाही की।

प्रवर्तन अधिकारी उत्तर प्रवीण गहलोत ने बताया कि प्रवर्तन निरीक्षक पश्चिम अनिल शर्मा, से.नि. निरी. भू.प्र. रूपाराम मेघवाल मय जेडीए दस्ते द्वारा ग्राम डिगाडी का मौका निरीक्षण किया गया। मौका निरीक्षण के दौरान ग्राम डिगाडी जगदंबा कॉलोनी, खसरा संख्या 77 एवं 168 में मकानों के निर्माण कार्य किए हुए पाए।

दस्ते द्वारा अप्रार्थियों को सख्त हिदायत दी गई कि सेना के निर्माण निषेध क्षेत्र में बिना सेना के अनापत्ति प्रमाण-पत्र एवं प्राधिकरण की बिना सक्षम स्वीकृति के इसी प्रकार का अवैध निर्माण अथवा अतिक्रमण नहीं करें।

देव दर्शन यात्रा मार्ग व मंदिरों का निरीक्षण किया

जोधपुर, (कासं)। देवस्थान विभाग की 4 जून को आयोजित होने वाली देवदर्शन पद यात्रा के यात्रा मार्ग एवं मंदिर व्यवस्था के संबंध में तैयारी का जायजा लिया गया।

सोमवार को विशिष्ट शासन सचिव शक्ति सिंह राठौड, सहायक आयुक्त देवस्थान विभाग, जोधपुर ओमप्रकाश पालीवाल एवं गोविन्द सिंह भाटी ने देवस्थान विभाग की देवदर्शन पद यात्रा मार्ग में आने वाले प्रारम्भ स्थल मंदिर श्री गंगश्यामजी से लेकर गन्तव्य स्थल गंगेश्वर मुक्तेश्वर महादेव मंदिर व समापन समारोह स्थल घण्टाघर तक के समस्त मंदिरों का निरीक्षण करते हुए आवश्यक निर्देश जारी किए।

प्राप्त जानकारी के अनुसार देवस्थान विभाग जोधपुर के सहायक आयुक्त ओमप्रकाश पालीवाल ने बताया कि राजस्थान सरकार देवस्थान विभाग की मंदिर संस्कृति को प्रदर्शित करने एवं उसके ऐतिहासिक व स्थापत्य कला के महत्व से स्थानीय जन को रूबरू कराने के लिए पद यात्रा आयोजित की जानी प्रस्तावित है।

इस यात्रा का आयोजन देवस्थान विभाग, स्थानीय प्रशासन एवं समापन समारोह का आयोजन श्री सच्चियाय माता मंदिर प्रन्यास ओसियों के सौजन्य से किया जा रहा है।

इस आयोजन में राजस्थान संगीत नाटक अकादमी जोधपुर हिन्दु सेवा मण्डल, श्याम भजन मण्डली, अचलेश्वर महादेव मंदिर ट्रस्ट, मंदिर श्री रघुनाथजी तीजा माजी ट्रस्ट, हरे रामा हरे कृष्णा संस्थान व व्यापार मण्डल कटला बाजार भी अपनी-अपनी सहभागिता दे रहे हैं।

MANAPPURAM FINANCE LTD.
CIN : L65910KL1992PLC006623
Registered Office: W - 4/ 638A, Manappuram House, P.O. Valapad, Thrissur - 680 567, Kerala, India

निलामी सूचना

विशेषकर गिरवीकर्ताओं और सामान्य रूप में जनता को एतद्द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नलिखित अकाउंट्स में रखे गए सोने के आभूषणों की सार्वजनिक नीलामी निम्नलिखित शाखाओं पर दिनांक 16.06.2023 को सुबह 10.00 बजे से किया जाएगा. हम ऐसे डिफॉल्टर ग्राहकों के सोने के आभूषणों की नीलामी करने जा रहे हैं जिन्होंने रजिस्टर्ड पत्र द्वारा सूचित किए जाने के बावजूद अपने लोन की रकम नहीं चुकाई है. जिन आयटम्स की नीलामी नहीं हो पाएगी, उनकी नीलामी किसी अन्य दिन बिना पुन: सूचना दिए की जाएगी. नीलामी के स्थान व तिथि (अगर कोई हो) में परिवर्तनों की कोई सूचना नीलामी केन्द्र या वेबसाइट पर लगाई जाएगी तथा इस बारे में कोई अन्य सूचना नहीं दी जाएगी.

गिरवियों की सूची :

बाडमेर, बालोतरा राजस्थान, 135580700014207, बाडमेर, 138040700002760, 2783, 2833, पालिका बाज़ार नया बस स्टैंड बालोतरा, 138060700003229, 138060730003489, जोधपुर, आकलीया सर्कल जोधपुर, 114110700043441, 3511, महा मंदिर सर्कल, 123010700035451, 5624, 5639, 5812, फलौदी शाखा राजस्थान, 135610700013826, 3875, 135610730009487, 9559, सरस्वती नगर जोधपुर, 124320700033526, 3592, 3598, पाली, सूरजपोल पाली, 115410700025672, 115410730018217, सिरोही, गौशाला रोड शिवगंज, 137980700002759, सिरोही राजस्थान, 119970700019754, 9920, 9958, 9970, 119970700020006, 119970730035047, 5120, 5135, 5136, 5145,

उपरोक्त नीलामी में भाग लेने के इच्छुक व्यक्तियों को निम्नलिखित का पालन करना होगा:- इच्छुक बोलीकर्ताओं को ईएमडी के रूप में रु. 10,000/- नीलामी के दिन नकद जमा कराना होगा (असफल बोलीकर्ताओं को बाद में लौटा दिया जाएगा). बोलीकर्ता को वैध पहचना प्रमाण/पैन कार्ड साथ लेकर आना होगा. अधिक जानकारी के लिए कृपया 9072604049 पर संपर्क करें.

अधिकृत अधिकारी
मणप्पुरम फायनेंस लि. हेतु.

गणेश मंदिर में पूजा की

जालोर, (कासं)। जयपुर में डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन शिक्षा संकुल पर तृतीय श्रेणी शिक्षक ट्रांसफर के लिए प्रदेश प्रवक्ता डॉ. रणजीत मीणा के नेतृत्व में चल रहा धरना चौथे दिन सोमवार को भी जारी रहा।

धरने के चौथे दिन शिक्षकों ने मोती डूंगरी गणेश मंदिर जाकर मंदिर के महंत के माध्यम से ट्रांसफर की मांग का ज्ञापन गणेश जी को दिया।

कार्यालय नगर परिषद जालोर (राजस्थान)
Tel: (02973)222270 (अस्पताल चौराहा, जोधपुर रोड, जालोर-343001) Email: mbjalore24@yahoo.in
क्रमांक:नपजा/राजस्व/2023/1926 दिनांक :27/05/2023

॥ उजरदारी ऐतराज सूचना ॥

श्री मोहनलाल, सेठ प्रकाश, एस. मुरली कृष्ण पुत्रगण स्व. हस्तीमलजी एवं सेठ प्रमिला पत्नी स्व. सेठ भरत कुमार, जाति जैन, निवासी तपावास, जालोर तहसील व जिला जालोर द्वारा नामान्तरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया गया है। उक्त प्लॉट जालोर की आबादी भूमि तपावास, जालोर में आया हुआ है। उक्त आवासीय प्लॉट का पट्टा जरिये मिसल सं.-226/25-26, दिनांक 16.01.1928 को श्री लालचन्दजी के नाम से जारी किया गया है। श्री भंवरलाल गुर्रा चेला लालचन्दजी गुर्रा द्वारा जरिये रजिस्ट्री श्री मिश्रीमल पुत्र विरदानचन्दजी को बेचान किया गया। श्री मिश्रीमल द्वारा जरिये रजिस्ट्री श्री हस्तीमल पुत्र फुलचन्द को बेचान किया गया। ततपश्चात् श्री हस्तीमल का स्वर्गवास नवम्बर 1976 में हो चुका है। ततपश्चात् स्व. हस्तीमल के वारीसान श्री आनन्द कुमार सेठ, कल्पना के. चौधरी, एवं स्व. सेठ भरत कुमार की पुत्री रूपाली सेठ द्वारा जरिये हकतर्कनामा दिनांक 01.03.2023 को श्री मोहनलाल, सेठ प्रकाश, एस. मुरली कृष्ण पुत्रगण स्व. हस्तीमलजी एवं सेठ प्रमिला पत्नी स्व. सेठ भरत कुमार हकतर्क किया गया। इस प्रकार श्री मोहनलाल, सेठ प्रकाश, एस. मुरली कृष्ण पुत्रगण स्व. हस्तीमलजी एवं सेठ प्रमिला पत्नी स्व. सेठ भरत कुमार के उक्त आवासीय प्लॉट का कुल क्षेत्रफल 1170.35 वर्गफीट अर्थात् 108.76 वर्गमीटर का नामांतरण चाहा गया है। उक्त आवासीय प्लॉट के अडौस-पडौस निम्नानुसार है-

उत्तर :- मकान का बेरणा व इसी मकान की पट्टासुदा चबूतरी व चौक बने हुऐ है।
दक्षिण :-कुछ हिस्से में मिश्रीमल शिवराजजी चौधरी का मकान व शेष हिस्से में मिश्रीमल तिलोकचंदजी का मकान।
पूर्व :- आम रास्ता। पश्चिम :- आम रास्ता।

अत: सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि इस संबंध में किसी को कोई आपत्ति हो तो उक्त सूचना के प्रकाशन की तिथि से 07 दिवस की अवधि में अपनी लिखित आपत्ति मय दस्तावेज साक्ष्य सहित निम्नहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत कर सकते है। निर्धारित समयावधि के पश्चात प्रस्तुत आपत्ति स्वीकार नहीं की जावेगी। इस प्रकरण से संबंधित प्रार्थना पत्र व संलग्न दस्तावेजों का अवलोकन किसी भी कार्य दिवस को कार्यालय समय के दौरान इस कार्यालय के राजस्व अनुभाग में आकर किया जा सकेगा।

अवगत रहे। आयुक्त/शिविल प्रभारी, नगरपरिषद जालोर

कार्यालय नगर परिषद जालोर (राजस्थान)
Tel: (02973)222270 (अस्पताल चौराहा, जोधपुर रोड, जालोर-343001) Email: mbjalore24@yahoo.in
क्रमांक:नपजा/राजस्व/2023/70 दिनांक :10/05/2023

॥ उजरदारी ऐतराज सूचना ॥

श्री पारसमल पुत्र गुणेशाजी, जाति राजपुरोहित, निवासी सांकरना, तहसील आहोर व जिला जालोर द्वारा नामान्तरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया गया है। उक्त प्लॉट जालोर के मानपुरा कॉलोनी में सुथारो की सेरी, जालोर में आया हुआ है। उक्त आवासीय प्लॉट का पट्टा सं.-10 मिसल सं.-124/37-39 ऐडीशनल सुप्रीडेन्ट हवाला जालोर द्वारा तारीख 13.01.1939 को नेमा, सीवदान, गणेश, पुसा बेटा पोता गौला सुथार के नाम से जारी किया गया है। जिसका कुल क्षेत्रफल 6000 वर्गफीट है। उक्त प्लॉट में से 2000 वर्गफीट का प्लॉट पारिवारीक सेटलमेन्ट में पुखराज के हिस्से में आया हुआ है। श्री पुखराज द्वासरा जरिये रजिस्ट्री श्री गुणेशा जी पुत्र वना जी को बेचान किया गया है। श्री गुणेशा जी द्वारा जरिये वसीयतनामा दिनांक 12.01.2009 को श्री पारसमल पुत्र गुणेशा जी को उक्त प्लॉट वसीयत किया गया है तत्पश्चात् श्री गणेशाजी उर्फ गुणेश सिंह का स्वर्गवास दिनांक 05.04.2020 को हुआ। इस प्रकार श्री पारसमल पुत्र गुणेशाजी के उक्त आवासीय प्लॉट का क्षेत्रफल 2000 वर्गफीट अर्थात् 185.87 वर्गमीटर का नामांतरण चाहा गया है। उक्त आवासीय प्लॉट के अडौस-पडौस निम्नानुसार है-

उत्तर :- जवानाराम, रणछोडाराम, कांतीलाल, पिसराम मंछाराम सुथार का मकान है।
दक्षिण :- मोहन, जवानाराम, मीठालाल, पदमाराम पिसराम दूदाराम का मकान है।
पूर्व :- गुणेशाजी का मकान आया हुआ है।
पश्चिम :- आम रास्ता व प्लॉट का निकाल आया हुआ है।

अत: सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि इस संबंध में किसी को कोई आपत्ति हो तो उक्त सूचना के प्रकाशन की तिथि से 07 दिवस की अवधि में अपनी लिखित आपत्ति मय दस्तावेज साक्ष्य सहित निम्नहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत कर सकते है। निर्धारित समयावधि के पश्चात प्रस्तुत आपत्ति स्वीकार नहीं की जावेगी। इस प्रकरण से संबंधित प्रार्थना पत्र व संलग्न दस्तावेजों का अवलोकन किसी भी कार्य दिवस को कार्यालय समय के दौरान इस कार्यालय के राजस्व अनुभाग में आकर किया जा सकेगा।

अवगत रहे। आयुक्त, नगरपरिषद जालोर

आयुर्वेद विश्वविद्यालय में 'शोध मीमांसा' का शुभारंभ

जोधपुर, (कासं)। आयुर्वेद में वर्तमान में साक्ष्य आधारित एवं वैज्ञानिक पद्धति से शोध कार्य की योजना बनाने के पहले शोध विषय के प्राचीन आयुर्वेद साहित्य में उपलब्ध सन्दर्भो को मूल स्वरूप में समझा जाना पहली आवश्यकता हैं। प्राचीन आयुर्वेद संहिताऐं संस्कृत भाषा में लिखी गई थी, अत: संस्कृत में लिखे उस समय के वैज्ञानिक तथ्यों को समझे बिना, उन्हें सुपरिभाषित किये बिना आयुर्वेद में शोध कार्य नहीं किये जा सकते। ये उद्गार विख्यात आयुर्वेद विद्वान एवं आयुर्वेद विश्वविद्यालय, जोधपुर के पूर्व कुलपति प्रो. (वैद्य) बनवारीलाल गौड ने यहां आज से प्रारंभ हुई शोध विषय तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला शोध मीमांसा के उद्घाटन सत्र में कहे।

मुख्य अतिथि प्रो. गौड ने कहा कि प्राचीन संहिताओं में चरक, सुश्रुत, वाग्भट आदि आचार्यो ने अपने-अपने युग में अनेक परीक्षणों के अवलोकन के परिणामों के आधार पर संहिता रूप में साहित्य का निर्माण किया था, उन प्राचीन विषयों को वर्तमान के वैज्ञानिक युग में भौतिक मापदण्डों के अनुरूप प्रस्तुत किया जाना आज शोध कहा जाता है। अध्यक्ष कुलपति प्रो. (वैद्य) प्रदीप कुमार प्रजापति ने कहा कि शोध पद्धति के वैज्ञानिक स्वरूप के ज्ञान के लिये शोध- अध्येताओं को शोध पद्धति के साथ जैवसांख्यिकी का ज्ञान होना आवश्यक हैं। विशिष्ट अतिथि डॉ. अनिल कुमार, रिसर्च एडवाइजर, अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान नई दिल्ली तथा प्रो. हितेश व्यास, डीन, इंस्टीट्यूट आफ टीचिंग एण्ड रिसर्च इन आयुर्वेद, गुजरात आयुर्वेद विश्वविद्यालय जामनगर ने भी समारोह को संबोधित किया।

धन्वन्तरि वंदना, राष्ट्र गान और कुलगीत से प्रारंभ हुए उद्घाटन समारोह में कुलपति प्रो. प्रजापति ने मुख्य अतिथि प्रो. बनवारीलाल गौड का साफा और शाल से स्वागत किया एवं प्राचार्य निदेशक प्रो. महेन्द्र शर्मा ने विशिष्ट अतिथि एवं विषय विशेषज्ञ प्रो. हितेश व्यास का तथा आयोजन अध्यक्ष एवं मौलिक सिद्धान्त विभागाध्यक्ष डॉ. देवेन्द्र चाहर तथा आयोजन सचिव डा. हरीश सिंघल ने विशिष्ट अतिथि एवं विषय विशेषज्ञ डा. अनिल कुमार का साफा और शाल से स्वागत किया। प्राचार्य प्रो. महेन्द्र शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापन किया। संचालन एसोसिएट प्रोफेसर डा. दिनेश कुमार शर्मा ने किया।

आयोजन अध्यक्ष डा. देवेन्द्र चाहर ने बताया कि कार्यशाला में आयुर्वेद विश्वविद्यालय जोधपुर के पूर्व कुलपति प्रो. (वैद्य) बनवारीलाल गौड, विषय विशेषज्ञ के रूप में आई सी एम आर के पूर्व उपनिदेशक एवं वर्तमान में अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान, नई दिल्ली के रिसर्च एडवाइजर डा. अनिल कुमार तथा गुजरात आयुर्वेद विश्वविद्यालय जामनगर आई. टी. आर. ए. के डीन प्रो. हितेश व्यास विभिन्न वैज्ञानिक सत्रों में शोध के विभिन्न पहलूओं पर अतिथि-व्याख्यान दे रहे हैं।

कार्यालय उप निदेशक कृषि एवं पदेन परियोजना निदेशक कृषि प्रौद्यौगिकी प्रबंन्ध अभिकरण जालोर

क्रमांक: कृषि/आत्मा/निविदा 2023-24/40-47 दिनांक: 29/05/2023

खुली निविदा सूचना

इस कार्यालय द्वारा वर्ष 2023-24 में संचालित विभिन्न कार्यक्रमों यथा कृषक प्रशिक्षण, कृषक भ्रमण, कृषक गोष्ठी, किसान मेला आदि कृषक आधारित गतिविधियों के सुगम संचालन के लिये निम्नांकित सामग्री/सेवा हेतु अनुभवी फर्मो, अधिकृत सप्लायरों, पंजीकृत फर्मो से दर संविदा हेतु सीलबन्द निविदा आमंत्रित है। निविदायें दिनांक 05.06.2023 सांय 05.00 बजे तक बेची जाकर, दिनांक 06.06.2023 को दोपहर 12.00 बजे तक प्राप्त कर मध्यान्ह पश्चात 02.00 बजे उपस्थित निविदादाताओं के समक्ष खोली जावेगी। बिना अमानत राशि या सशर्त निविदा स्वीकार नहीं होगी।

क्र. सं.	आवश्यक सामग्री/सेवा का नाम	अनुमानित व्यय राशि रू.	निविदा शुल्क	अमानत राशि रू. में (केवल डी.डी. स्वीकार्य)	UBN CODE
1.	चाय, नाश्ता एवं भोजन व्यवस्था कार्य	490000	200	10000	AGR2324SSOB00089
2.	प्रिन्टिग कार्य	350000	200	7000	AGR2324SSOB00090
3.	स्टेशनरी कार्य	300000	200	6000	AGR2324GSOB00091
4.	बस व्यवस्था कार्य	200000	200	4000	AGR2324SSOB00092

1. निविदा स्वीकृत/अस्वीकृत करने कार्यादेश जारी करने/नहीं करने निविदा कार्य में कुल अनुमानित लागत राशि में कमी/वेशी करने का पूर्ण अधिकार विभाग एवं अधोहस्ताक्षकर्ता का होगा।
2. निविदा की अन्य शर्ते किसी भी कार्यालय दिवस में कार्यालय समय में देखी जा सकती है।
3. निविदा की दिनांक को राजकीय अवकाश होने पर निविदायें आगामी कार्यदिवस में बेची, प्राप्त की व खोली जावेंगी।
4. समस्त आइटमों के अलग-अलग निविदा फार्म होगें।
5. निविदा फार्म सशर्त इस कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है।
6. निविदा फार्म क्रय हेतु 200/-रू. का डीडी उप निदेशक कृषि एवं पदेन परियोजना निदेशक "आत्मा जालोर" के नाम से कार्यालय को देना होगा।

NIB CODE: - AGR2324A0083

उप निदेश कृषि एवं पदेन परियोजना निदेशक आत्मा जालोर

बरसात से गुरू जम्भेश्वर नहर तीन जगह से टूटी, नूरे की भुर्ज व राणेरी में सड़कें बही

बाप उपखंड अधिकारी ने प्रभावित गांवों का दौरा कर हालातों का जायजा लिया

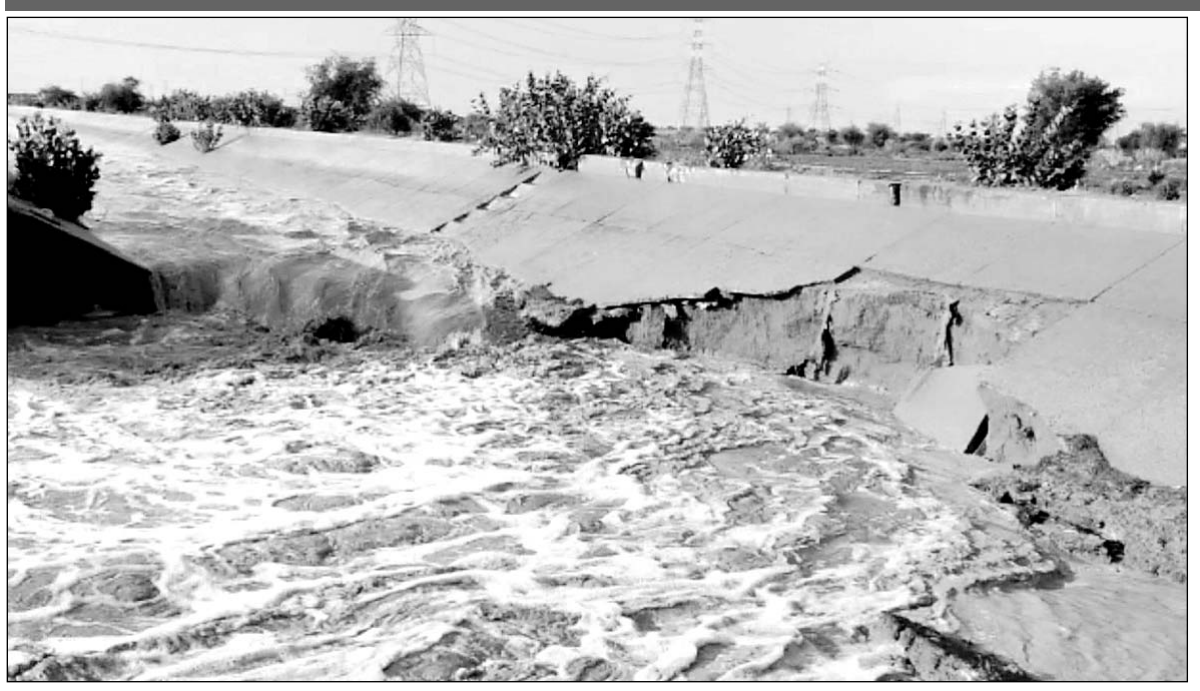

बाप के कालू खां की ढाणी के पास बरसाती नदी में सड़क बह गई।

- बाप क्षेत्र में आए तूफान ने काफी तबाही मचाई
- काफी संख्या में मवेशी भी मर गए, पक्षी भी बड़ी तादाद में काल कलवित हुए

बाप, (निसं)। बाप क्षेत्र में रविवार को दोपहर बाद आए तूफान ने काफी तबाही मचाई है। जगह-जगह पेड़ व विद्युत पोल गिरे पड़े हैं। ढाणियों व खेतों में बने छोटे-छोटे छप्पर में एक भी सही नहीं बचा। मवेशी भी काफी संख्या में मर गए है। पेड़ों पर शरण लिए पक्षी भी बड़ी तादाद में काल कलवित हुए हैं। गांवों में बिजली गुल है। जिससे लोगों की परेशानी दोहरी हो गई है। डिस्कॉम की टीमें बिजली तंत्र को दुरस्त करने में जुटी हुई है। तूफान का असर समूचे बाप क्षेत्र में था। लेकिन सोमवार सुबह जो तस्वीरें सामने आई उसमें राणेरी, सोनलपुरा, नूरे की भूर्ज व इनके आसपास के क्षेत्र में सबसे अधिक तबाही नजर आई। भारी बरसात से गांवों की सड़कें पूरी तरह से पानी में बह गई। 3 से 4 वाहन भी बह गये, लेकिन वाहनों में सवार लोग बाल बच गए। वहीं बरसात से गुरु जम्भेश्वर लिफ्ट केनाल भी तीन जगह से टूट गई। इस नहर में अभी पानी नहीं था। बरसाती नदी का पानी इसमें आने से यह नहर टूटी है।

नूरे की भूर्ज सरपंच प्रतिनिधि मोहम्मद सलाम ने बताया कि रविवार दोपहर में तूफानी बरसात के बाद रात आठ बजे बरसाती नदी आ गई। यह नदी जैमला, शेखासर, अखाधना, राणेरी होते हुए नूरे की भूर्ज होते हुए आगे निकली। सोमवार दोपहर तक पानी बह रहा था। 50 मीटर चौड़ी व 10 फिट गहराई में चली नदी में कालू खां की ढाणी सड़क मार्ग बह गया। इसके अलावा कालू की ढाणी से कानासर व कालू खां की ढाणी से नुरे की भर्ज सड़क मार्ग भी क्षतिग्रस्त हो गया।

मोहम्मद सलाम ने बताया कि रात 11 बजे कालू खां की ढाणी के पास एक कैंपर व स्वीफ्ट कार बह गई थी। सूचना पर वह गांव से चार-पांच लोगों के साथ रस्सा लेकर मौके पर पहुंचे। उसमें सवार लोग तो बाहर आ गए, लेकिन वाहनों को सुबह निकाला गया। बाप पुलिस को भी उसी समय इत्तला दी थी। सिनावड़ी नाडी के पास कच्चे रास्ते में भी एक कार फंस गई थी। रात भर उसके उपर से पानी बहता रहा। उसे भी सुबह बड़ी मुश्किल से बाहर निकाला। कालू खां की ढाणी निवासी मुख्तियार अली ने बताया कि गुरू जम्भेश्वर लिफ्ट कैनाल कालू खां की ढाणी गांव के पास, खाखुरी के पास, कालू खां की ढाणी चौराहा के पास टूट गई। कई छोटे माइनर भी टूट कर बह गए है। सोलनपुरा सरपंच भंवरलाल खिलेरी ने बताया कि राणेरी से अमरपुरा, मोडकिया गांव की सड़क, रामपुरा से राणेरी, अमरापुरा से राणेरी सडक मार्ग बरसाती नदी बहने से क्षतिग्रस्त हो गया है। गांवों की सड़के टूटने से आवागमन बाधित हो गया है।

छह परिवार रात भर पानी से घिरे रहे :- मोहम्मद सलाम ने बताया कि नदी के बहाव में गांव में स्थित मदरसे की चार दीवार ढह गई। इसके अलावा 4 मेघवालों की ढाणी तथा दो लोहारों की ढाणी पानी से घिर गई थी। ढाणियों के लोग रात भर उसमें फंसे रहे। पानी उतरने पर वे बाहर आए।

एसडीएम ने किया प्रभावित क्षेत्र का दौरा :- बाप उपखंड अधिकारी मांगीलाल ने सोमवार को प्रभावित गांवो का दौरा कर हालातों का जायजा लिया। उपखंड अधिकारी ने टूटी हुई नहर का सरपंच ग्राम पंचायत नूरे की भुर्ज प्रतिनिधि एवं ग्रामीणों के साथ मौका निरीक्षण किया। एसडीएम ने नहर की मरम्मत एवं कानासर से अजेरी की तरफ क्षतिग्रस्त सडक की मरम्मत के निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिये हैं। एसडीएम जब निरीक्षण करने पहुंचे थे तब भी क्षतिग्रस्त नहर से पूरा पानी खेतों व घरों से होता हुआ तीव्र वेग से चल रहा है।

आज भी 13 गांव 80 ढाणियां रहेंगी अंधेरे में :- डिस्कॉम की टीम विभिन्न गांवों में विद्युत पोल लगाने के साथ अनोप नगर के 33/11 केवी ग्रिड सब स्टेशन को दुबारा खड़ा करने में जुट गई थी। रविवार रात को बाप सब डिविजन में कुल 40 गांवों में से 28 गांवों व इनके आसपास की ढाणियों की बिजली सप्लाई बंद थी। कनिष्ठ अभियंता महीराम ने बताया कि शाम तक 15 गांवों की बिजली सप्लाई शुरू कर दी जाएगी। इसके बाद भी 13 गांव 80 ढाणियों में सोमवार रात भी तूफान की वजह से ब्लैक आउट रहेगा। हालांकि मौसम विभाग की चेतावनी लगातार जारी है, लेकिन सोमवार को मौसम साफ रहने पर लोगों ने राहत की सांस ली।

'गोलीकांड' के दोषियों की गिरफ्तारी की मांग

19 मई को एक जने के साथ हुए गोलीकांड को लेकर आक्रोश

शीतलामाता गोलीकांड के अभियुक्तों की गिरफ्तारी की मांग को लेकर प्रदर्शन किया।

चाकसू, (निसं)। गत दिनों शीतला माता के टोंक रोड पर एक व्यक्ति के साथ हुए गोलीकांड को लेकर क्षेत्र में आक्रोश बढ़ता जा रहा है। गोली कांड के दोषियों की गिरफ्तारी की मांग को लेकर सोमवार को गुर्जर समाज ने सर्व समाज के सहयोग से चाकसू पुलिस थाने के सामने धरना प्रदर्शन कर एसीपी संध्या यादव, चाकसू थाना इंचार्ज भूरी सिंह, सदर एवं शिवदासपुरा थाना इंचार्ज को ज्ञापन सौंपा है और ज्ञापन में शीघ्र दोषियों की गिरफ्तारी नहीं होने पर उग्र आंदोलन की चेतावनी दी है।

उल्लेखनीय है कि गत 19 मई को शीतला माता बस स्टैंड पर उपखंड क्षेत्र के चौसला गांव निवासी सियाराम गुर्जर पर अज्ञात बदमाशों ने फायरिंग कर घायल कर दिया था जिसका मामला चाकसू पुलिस थाने में दर्ज है। मामले में पीड़ित सियाराम गुर्जर के परिजन सहित अन्य लोगों ने बताया कि घटनास्थल पर कैमरे लगे हुए थे जिसमें अभियुक्तों के चेहरे साफ नजर आ रहे हैं लेकिन पुलिस आज तक भी उन्हें गिरफ्तार नहीं कर पाई जिस कारण ऐसी घटनाओं से शांत वातावरण के क्षेत्र में दहशत एवं भय का माहौल बना हुआ है। इसलिए सर्व समाज के सहयोग से पुलिस थाने के सामने धरना प्रदर्शन कर इस घटना से जुड़े बदमाशों की शीघ्र गिरफ्तारी की मांग की गई है।

मामले में पुलिस ने 7 दिनों में अभियुक्तों की गिरफ्तारी का आश्वासन देकर धरना समाप्त करवा दिया है। दौरान सुरक्षा की दृष्टि से पुलिस थाने के आसपास के क्षेत्र में पुलिस जाब्ता तैनात रहा। इस दौरान भुणाराम गुर्जर, प्रभु नारायण गुर्जर, प्रहलाद बैरवा, हीरालाल, आशाराम, रंगलाल, पीयूष, अजय राजाराम, रामरतन धर्मसिंह मीणा, बद्री नारायण चौधरी सहित समाज के लोग मौजूद रहे।

आंधी एवं बारिश से किसानों के सोलर सेट तबाह

मंडार के निकट हड़मतिया ग्राम में आंधी से सोलर सेट तबाह हो गया।

- किसानों को आर्थिक रूप से काफी नुकसान पहुंचा
- प्रशासन एवं सरकार मुआवजे की मांग की

मंडार, (निसं)। सिरोही जिले में मंडार के निकटवर्ती गांव हडमतिया में रविवार रात्रि को आए भयंकर आंधी-तूफान से किसानों के कृषि कुएं पर लगे हुए सोलर लाइट के सेट हवा में टूट कर बिखर गए।

जिससें किसानों को आर्थिक रूप से काफी नुकसान पहुंचा है। किसान सोलर सेट के सुरेंद्र कुंवर, मोहन कुंवर, लवजीराम, धोकाराम कलापुरा ने बताया कि हमारे कृषि कुएं पर सोलर ऊर्जा के सेट लगे हुए थे जो तेज आंधी एवं बारिश की वजह से बर्बाद हो गए एवं हमें आर्थिक रूप से काफी नुकसान पहुंचा है।

अगर प्रशासन एवं सरकार की ओर से किसी तरह की आर्थिक रूप से मदद मिलती है और मुआवजा दिया जाता है तो हमें आर्थिक रूप से थोडा संबल प्राप्त होगा।

मंडार में तेज अंधड़ ने ली एक अधेड़ की जान :- सिरोही जिले में मंडार के निकटवर्ती गांव रोहुआ में तेज आंधी एवं तूफान की वजह से एक व्यक्ति की मृत्यु हो गई एवं एक पुरुष एवं अन्य महिला गंभीर रूप से घायल हो गई। जानकारी के अनुसार रोहुआ निवासी आशु राम भील (55) अपने घर से कोई वस्तु खरीदने के लिए दुकान पर गया था वापस घर लौटते समय घर के पास ही टीनशेड की चपेट में आ गया। तेज आंधी होने की वजह से टीन शेड पूरा उखडकर आसू राम के ऊपर जा गिरा जिससे आसू राम की मौके पर ही मृत्यु हो गई व अन्य एक महिला लसु देवी (62) भी गंभीर रूप से घायल हो गई एवं एक युवक चंदूलाल (25)घायल हो गया।

दोनों घायलों को उपचार के लिए गुजरात के अहमदाबाद रैफर किया गया एवं मृतक अधेड़ आशु राम भील के शव को मंडार के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र की मोर्चरी में रखवाया। सोमवार सुबह भील समाज के लोग एवं सरपंच प्रतिनिधि अर्जुन सिंह देवल अस्पताल पहुंचे जहां डॉक्टरों ने शव का पोस्टमार्टम कर शव को परिजनों को सुपुर्द किया।

ब्रह्मा मंदिर में लिफ्ट निर्माण का शिलान्यास किया

ब्रह्मा मंदिर में लिफ्ट निर्माण कार्य शुरु किया।

- ब्रह्मा मंदिर में जल्द ही श्रद्धालु लिफ्ट की सहायता से दर्शन लाभ उठायेंगे

पुष्कर, (निसं)। विश्व विख्यात ब्रह्मा मंदिर में जल्द ही श्रद्धालु लिफ्ट की सहायता से ब्रह्माजी के दर्शन करने का लाभ उठायेंगे। इसके लिए मंदिर में लगने वाली आधुनिक तकनीक की दो लिफ्ट का शिलान्यास सोमवार को अभिजीत मुहूर्त में निबार्क पीठाधीश्वर श्यामशरण देवाचार्य श्रीजी महाराज ने किया। लिफ्ट निर्माण प्रोजेक्ट में एमपी मानसिंगका चैरिटीज मुंबई की ओर से एक करोड़ से अधिक का खर्चा वहन किया जायेगा। शिलान्यास के साथ ही सोमवार से लिफ्ट लगाने का कार्य शुरू हो गया तथा 6 महिने में लिफ्ट निर्माण पूर्ण तैयार हो जायेगा।

चैरिटीज के वयोवृद्ध अध्यक्ष महावीर प्रसाद मानसिंगका ने बताया कि ब्रह्मा मंदिर के पीछे स्थित गौशाला गेट के पास दो आधुनिक तकनीक की लिफ्ट लगाई जाएगी तथा बिजली बंद होने के बावजूद यात्री रास्तें में नहीं अटक सकेंगे। लिफ्ट का न केवल दिव्यांग व वृद्धजन बल्कि सभी यात्री निशुल्क उपयोग कर सकेंगे। उन्होंने बताया कि दोनों लिफ्ट में एक मिनट में 100 श्रद्धालु मंदिर के दर्शन के लिए आ-जा सकेंगे। लिफ्ट से चढ ने तथा उतरने के लिए वन-वे की व्यवस्था रहेगी। लिफ्ट से मंदिर तक पहुंचने तथा पुन: नीचे उतरने के लिए दो अलग-अलग रास्तें होंगे। लिफ्ट परिसर में महिला-पुरूष के लिए अलग-अलग वॉश रूम का भी निर्माण किया जाएगा। बताया कि मंदिर के पुरामहत्व को ध्यान में रखते हुए दिल्ली के आर्किटेक्ट ने लिफ्ट का प्रोजेक्ट तैयार किया है। नए स्ट्रेक्चर निर्माण से मंदिर के पुरानी इमरात में किसी प्रकार का रद्दोबदल नहीं किया जाएगा।

शिलान्यास कार्यक्रम में कार्यक्रम की अध्यक्षता राजस्थान पर्यटन विकास निगम के अध्यक्ष धर्मेंद्र राठौड़ की। इसके अलावा कार्यक्रम में अस्थायी मंदिर प्रबंधन कमेटी के अध्यक्ष एवं जिला कलेक्टर डॉ. भारती दीक्षित, सांसद भागीरथ चौधरी, विधायक सुरेश सिंह रावत, पूर्व शिक्षा राज्य मंत्री नसीम अख्तर इंसाफ पूर्व विधायक बाहेती डॉ. राजकुमार जयपाल ओबीसी मोर्चा जिला उपाध्यक्ष सुदर्शन पालिकाध्यक्ष कमल पाठक, उपखंड अधिकारी निखिल कुमार पोद्दार आदि ने विशिष्ठ अतिथि के रूप में शिरकत की।

पी.एम. की सभा में लोगों को आमंत्रण के लिए रथ रवाना

प्रधानमंत्री की 31 मई को कायड विश्राम स्थली में होने वाली जनसभा को लेकर तैयारियां तेज

अजमेर में जनप्रतिनिधियों ने रथों को रवाना किया।

अजमेर, (कासं)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की आगामी 31 मई को कायड विश्राम स्थली में होने वाली विशाल जनसभा को लेकर भाजपा ने अपनी तैयारियां तेज कर दी है। सोमवार को केंद्र की जनकल्याणकारी योजनाओं के प्रचार प्रसार व आम सभा के आमंत्रण हर जन तक पहुंचाने के लिए रथों को रवाना किया। भाजपा संगठन महामंत्री चंदशेखर, नेता प्रतिपक्ष राजेन्द्र राठौड़, उत्तर विधायक वासुदेव देवनानी,दक्षिण विधायिका अनिता भदेल, प्रदेश उपाध्यक्ष प्रसन्न चन्द मेहता, प्रदेश मंत्री अशोक सैनी, वंदना नोगिया, भगवती सारस्वत, रमेश सोनी, अरविन्द यादव, रमेश सोनी, वीरमदेव सिंह,दे वी शंकर भूतड़ा, डॉ.भोला सिंह, मोर्चा प्रदेशाध्यक्ष कैलाश मेघवाल आदि उपस्थित रहे।

सोमवार को भाजपा अनुसूचित जाति मोर्चा राजस्थान की प्रदेश कार्यसमिति बैठक हुई। जिसमे भाजपा संगठन महामंत्री चंदशेखर, नेता प्रतिपक्ष राजेन्द्र राठौड़, दक्षिण विधायिका अनिता भदेल, भाजपा अनुसूचित जाति मोर्चा के राष्ट्रीय महामंत्री डॉ.भोला सिंह, मोर्चा प्रदेशाध्यक्ष कैलाश मेघवाल, महामंत्री मुकेश गर्ग, रामकिशन वर्मा ने बैठक को संबोधित किया।

इस अवसर पर ओबीसी मोर्चा जिला उपाध्यक्ष संजय चौहान, चिराग चौधरी, अजय नरूका, अंचित परिहार, कैलाश कच्छावा, गोविंद कुमार, दुर्गालाल, रितेश, अनुभव, कमलेश, उमेश, विमल, रमेश, रामलाल गुर्जर, जगदीश गुर्जर आदि उपस्थित रहे। वहीं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से आज भारतीय जनता युवा मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष हिमांशु शर्मा के नेतृत्व में तीर्थगुरु पुष्कर के घाटों पर स्वच्छता अभियान के अन्तर्गत श्रमदान किया गया।

मोदी 31 मई को पुष्कर आएंगे

पुष्कर, (निसं)। 31 मई को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पुष्कर यात्रा को लेकर प्रशासन हाई अलर्ट हो गया है। तैयारियां युद्ध स्तर पर चल रही है। पुष्कर के परिक्रमा मार्ग की सड़क के पेचवर्क किया गया है। सुरक्षा एजेंसियां पूरी तरह चाक-चौबंद है। सोमवार को संभागीय आयुक्त सी आर मीणा, आईजी रेंज रूपेंद्र सिंह, जिला कलेक्टर भारती दीक्षित, एसपी चूनाराम जाट सहित पुलिस और प्रशासन के आला अधिकारियों ने व्यवस्थाओं का जायजा लिया। हेलीकॉप्टर के जरिए रिहर्सल की गई। सावित्री की तलहटी पर प्रधानमंत्री मोदी के हेलीकॉप्टर के लिए अस्थाई हेलीपैड बनाया जा रहा है।

मादा हिरण को श्वानों से बचाया

धोरीमन्ना, (निसं)। बाड़मेर जिले में धोरीमन्ना के पास निम्बली नाडी गांव में एक गर्भवती हिरणी को श्वानों के चुगंल से बचाकर वन विभाग की टीम को सुपुर्द किया। वन्यजीव प्रेमी शिक्षक जगदीश प्रसाद विश्नोई ने जानकारी दी कि निम्बली नाडी गांव में तीन-चार श्वानों ने हिरणों का पीछा किया तो बाकी हिरण भाग गये। लेकिन एक मादा गर्भवती हिरण को अपने चंगुल मे फंसा लिया। तब हिरण आवाज सुनकर राह जा रहे वरिष्ठ अध्यापक मोहनलाल तरड़, चुनाराम तरड़ व विद्यार्थी कैलाश बेनीवाल आवाज की तरफ भागे तो देखा कि तीन-चार कुत्ते हिरण को मारने की कोशिश कर रहे थे।

जेल से चार मोबाइल व सिम बरामद

उदयपुर, (निसं)। उदयपुर केन्द्रीय कारागृह के प्रहरियों ने तलाशी अभियान के दौरान जेल से चार मोबाईल व सीम बेटरी बरामद की।

जिला पुलिस अधीक्षक विकास शर्मा के निर्देश पर पुलिस अधिकारियों के नेतृत्व में गठित टीमों ने गत दिनों उदयपुर कारागृह का औचक निरीक्षण कर मोबाईल व मादक पदार्थ बरामद किया था। इस मामले में पुलिस थाने में प्रकरण दर्ज करवाया था। उक्त अभियान के बाद सक्रिय जेल प्रशासन ने भी अपना तलाशी अभियान जारी रखा। इस अभियान के दौरान जेल प्रहरी कोललायाणा भानपुर कला थाना जगवारामगढ जयपुर हॉल जेलप्रहरी केन्द्रीयकारागृह उदयपुर राजेन्द्र कुमार गुर्जर पुत्र बाबूलाल गुर्जर ने तलाशी अभियान के दौरान कारागृह में बंदी सुनिल उर्फ बंटी पुत्र शंभूलाल हरिजन निवासी गांधीनगर मस्तानबाबा निवासी के कब्जे से एक मोबाईल मय बेटरी व सीम बरामद की। इसी तरह चिमनलाल पुत्र शंकरलाल नायक धरिदेसर जिला पिलीबंगा हनुमानगढ हाल जेल प्रहरी ने बेरिक नंबर 12 के पास स्थित शौचालय के बाहर से लावारिस मोबाईल बरामद किया। इसी तरह जेल प्रहरी चतुराराम पुत्र बाबुलाल जाट ने गत दिनों तलाशी अभियान के दौरान दंण्डित बंदी संतोष पुत्र चुना कालबेलिया निवासी कपासल चित्तोडगढ के कब्जे से एक मोबाईल बरामद किया।

उदयपुर-जयसमंद तक ट्रैक का विद्युतीकरण, इलेक्ट्रिक इंजन चलाकर ली ट्रायल

जयसमंद-खारवा 38 किमी रेल्वे ट्रैक पर इलेक्ट्रिक इंजन का हुआ ट्रायल

उदयपुर-हिम्मतनगर रेलवे ट्रैक के हो रहे विद्युतीकरण कार्य के तहत 68 किमी इलेक्ट्रिफिकेशन का काम पूरा होने पर खारवा-जयसमंद ट्रैक ने इंजन दौड़ाकर स्पीड ट्रायल ली गई।

- अब तक उदयपुर से जयसमंद तक 65 किमी ट्रैक का विद्युतीकरण पूरा
- डूंगरपुर तक इलेक्ट्रिक पिलर व कॉपर वायरिंग का काम भी पूरा हुआ

उदयपुर, (कासं)। उदयपुर-अहमदाबाद (असारवा) ब्रॉडगेज की शुरुआत के बाद से ही यह रुट दक्षिण से जुड़ने की बाट जोह रहे हैं। जब तक तक रुट पर इलेक्ट्रिफिकेशन का काम पूरा नहीं होता तब तक यह ट्रैक दक्षिण से नहीं जुड़ पायेगा, लेकिन अब कड़ियां जुड़ना शुरू हो गई है और रेलवे द्वारा कदम बढ़ाते हुए इस रूट पर उदयपुर से जयसमन्द तक 65 किमी ट्रैक पर विद्युतीकरण का काम पूरा हो गया है। रेलवे अधिकारियों की मौजूदगी में खारवा-जयसमन्द 38 किमी ट्रैक पर इलेक्ट्रिक इंजन चलाकर स्पीड ट्रायल ली गई। 65 किमी तक पूरे हुए ईलेक्ट्रिफिकेशन के इस काम में उदयपुर-खारवा 27 किमी ट्रैक का काम व सीआरएस पहले पूरा हो चुका है। ऐसे में इंजन ट्रायल के बाद अब खारवा-जयसमंद के इस 38 किमी ट्रैक का सीआरएस निरीक्षण भी जल्द पूरा होगा।

वहीं जयसमन्द से आगे इस ट्रैक पर डूंगरपुर तक इलेक्ट्रिक पिलर व कॉपर वायरिकरण का काम भी पूरा हो चुका है। बताया जा रहा है कि कुछ माह में डूंगरपुर तक काम पूरा हो जाएगा और वर्ष 2024 तक हम विद्युतीकरण काम पूरा होने बाद दक्षिण से जुड़ जाएंगे।

इलेक्ट्रिक इंजन की स्पीड ट्रायल के दौरान रेल इंडिया टेक्निकल इकॉनोमी सर्विसेज के उच्च अधिकारी के. वेंकटेश, रणजीत मेहता, अरविंद कुमार, यू.वी. राव, नरसिम्हा, विजय अहरिवाल, विनोद कुमार, अरुण कुमार व लाइजन ऑफिसर (रेल्वे इलेक्ट्रिफिकेशन) सुगनचंद वर्मा मौजूद रहे। ज्ञातव्य है कि इस रूट पर उदयपुर-हिम्मतनगर तक करीब 210 किमी ट्रैक पर इलेक्ट्रिफिकेशन का काम होना है जिसमें से डूंगरपुर तक कदम बढ़ चुके हैं।

'संसद की इमारत पर चर्चा हो, लेकिन विशेष सत्र बुलाकर देश के मुद्दों पर भी चर्चा हो'

केंद्र सरकार के नौ साल पूरे होने पर कांग्रेस नेता आनंद शर्मा ने पूछे नौ सवाल

जयपुर, (का.प्र.)। केंद्र की मोदी सरकार के 9 साल पूरे होने पर कांग्रेस ने भाजपा नीत एनडीए सरकार से 9 साल पूरे होने पर 9 सवाल पूछे हैं। सोमवार को पार्टी के वरिष्ठ नेता व पूर्व केंद्रीय मंत्री आनंद शर्मा ने जयपुर में देश की महिला पहलवानों की ओर से रविवार को किए गए प्रदर्शन और उस प्रदर्शन पर महिला पहलवानों की गिरफ्तारी की निंदा करते हुए केंद्र सरकार से सवाल पूछे।

शर्मा ने कहा कि भले ही संसद की नई इमारत भव्य हो, लेकिन अगर नई संसद से प्रजातंत्र की बात कही जा रही है तो फिर सरकार को संसद का विशेष सत्र बुलाकर उन मुद्दों पर चर्चा की शुरुआत करनी चाहिए। आनंद शर्मा ने कहा कि संसद की इमारत अच्छी बनी है, उस पर चर्चा तो होनी ही चाहिए, लेकिन जब तक विशेष सत्र बुलाकर देश के मुद्दों पर चर्चा नहीं होगी, तब तक हम कल कैसे कहेंगे कि देश में प्रजातंत्र जीवंत है। उन्होंने कहा कि उनकी सलाह यही है कि सभी मुद्दों पर सरकार को अपना पक्ष रखना चाहिए। अगर वो नई संसद में नई शुरुआत की बात करते हैं तो विपक्ष की तीन मुख्य मुद्दों को स्वीकार करके विशेष सत्र के जरिए चर्चा करवाएं, ताकि पूरा देश सुने और सभी को लगे कि सदन गूंज रहा है।

आनंद शर्मा ने कहा कि केवल भव्य इमारत से कुछ होना जाना नहीं है। देश की जनता यह देखना चाहती है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उनकी सरकार अपने वचन पर कितनी अडिग है। साथ ही उन्होंने कहा कि बेरोजगारी, महंगाई, किसानों की समस्याओं, देश की सुरक्षा,

> ■ 'राजस्थान में गहलोत सरकार अच्छा काम कर रही है जिस तरह हिमाचल, कर्नाटक जीते, यहां फिर जीतेंगे'

देश में बढ़ती अमीर-गरीब की खाई पर अविलंब चर्चा की जरूरत है। आनंद शर्मा ने महिला पहलवानों के पक्ष में कहा कि कुछ बातें कई बार कष्ट देती हैं। हम महिला शक्ति की बात करते हैं, महिलाओं के सम्मान की बात करते हैं, लेकिन रविवार को संसद समारोह के बीच विदेशों में देश के लिए मेडल जीतने वाली बेटियों के साथ जो हुआ, उसे देश ने देखा है। शर्मा ने कहा कि जिनका हम सम्मान और अभिनंदन करते हैं, अगर वो ही कोई शिकायत कर रही हैं तो उसे गंभीरता से लेने की जरूरत है न कि उन्हें ही गिरफ्तार करने की। रविवार की घटना का कांग्रेस नेता ने निंदा करते हुए कहा कि भारत में बेटियों के साथ जो रविवार को हुआ उसे सभी ने देखा है।

आनंद शर्मा ने कहा कि विपक्ष जो बात उठा रहा है वो पूरे राष्ट्र की चिंता है। प्रधानमंत्री भी 31 मई को राजस्थान आ रहे हैं। ऐसे में यहां के किसान उनसे उनके किए वादों के बारे में सवाल पूछें। शर्मा ने कहा कि पीएम मोदी ने किसानों से उनकी आय दोगनी करने का वादा किया था, लेकिन ये तो तीन कानून लेकर आ गए थे, जिसे तमाम विरोधों के बाद सरकार को वापस लेना पड़ा था।

राजस्थान कांग्रेस और गहलोत-पायलट पर आलाकमान के निर्णय पर कांग्रेस के वरिष्ठ नेता आनंद शर्मा ने कहा कि एआईसीसी के राष्ट्रीय अध्यक्ष इस मामले पर निर्णय लेंगे, लेकिन इसके साथ ही उन्होंने यह जरूर कहा कि राजस्थान में कांग्रेस की एक मजबूत सरकार है। अशोक गहलोत मुख्यमंत्री हैं और जिस ढंग से काम हुआ है, जो नई नीतियां बनी हैं, नई घोषणाएं हुई हैं, नया बजट आया है, उससे हम पूरी तरीके से आश्वस्त हैं कि जिस तरह से कांग्रेस का परचम हिमाचल में फहराया गया। इसके बाद कर्नाटक में शंखनाद हुआ है, उसी तरह राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ में होगा और कांग्रेस वापसी और जीत दर्ज करेगी।

आस्ट्रेलिया के सांसदों से डॉ. पूनिया ने मोदी सरकार की योजनाओं पर चर्चा की

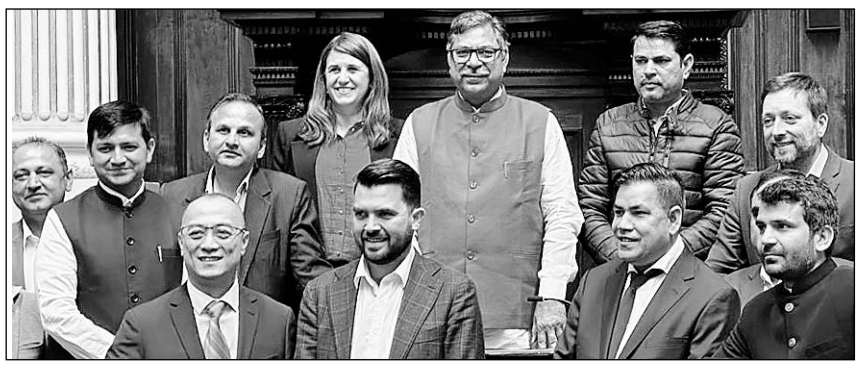

विधानसभा में उपनेता प्रतिपक्ष डॉ.सतीश पूनिया ने सोमवार को आस्ट्रेलिया में 'पार्लियामेंट ऑफ विक्टोरिया' में आस्ट्रेलिया के कई सांसदों व ब्यूरोक्रेटस से शिष्टाचार मुलाकात की।

मेलबर्न/जयपुर। आस्ट्रेलिया प्रवास पर राजस्थान विधानसभा उपनेता प्रतिपक्ष एवं भाजपा पूर्व प्रदेशाध्यक्ष डॉ. सतीश पूनिया ने मेलबर्न में प्रवासी भारतीयों के साथ बाप्स श्री स्वामीनारायण मंदिर के दिव्य दर्शन कर जलाभिषेक किया। इस दौरान वहां उपस्थित प्रवासी भारतीयों से संवाद कर भारतीय संस्कृति और सैद्धांतिक मूल्यों पर चर्चा की। इससे एक दिन पहले ऑस्ट्रेलिया में प्रवासी राजस्थानियों से आत्मिक संवाद किया। प्रतिधिनिमंडल के साथ सतीश पूनिया ने 'पार्लियामेंट ऑफ विक्टोरिया' विजिट किया, जहां आस्ट्रेलिया के कई सांसदों व ब्यूरोक्रेटस से शिष्टाचार मुलाकात की। आस्ट्रेलिया के सांसदों के साथ सतीश पूनिया ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सरकार के सफलतम 9 वर्ष की जनकल्याणकारी योजनाओं और ऐतिहासिक फैसलों की दुनियाभर में हो रही चर्चा पर संवाद किया।

> ■ मेलबर्न में प्रवासी भारतीयों के साथ सतीश पूनियां ने बाप्स श्री स्वामीनारायण मंदिर के दर्शन कर जलाभिषेक किया

राजस्थान और आस्ट्रेलिया के बीच भविष्य में कृषि, पर्यटन, जल संरक्षण इत्यादि मुद्दों सहित विकास के विभिन्न बिन्दुओं पर भी बात की।

पूनिया की आस्ट्रेलिया के सांसद एवं पूर्व नेता प्रतिपक्ष मैथ्यू गुए, सांसद ब्रेड बैटिन, सांसद एन्ने मैरी हरमेन्स, सांसद ट्रंग लू, सांसद ईवान मुलहॉलैंड, व्याधम के पूर्व सिटी काउन्सलर इंन्ताज खान, इवान वॉल्टर्स सहित पक्ष-विपक्ष के सांसदों, अन्य जनप्रतिनिधि और ब्यूरोक्रेटस के साथ शिष्टाचार मुलाकात हुई, जिसमें मोदी सरकार के ऐतिहासिक कार्यों व योजनाओं पर विस्तृत चर्चा हुई।

डॉ. पूनिया आस्ट्रेलिया में कॉन्सुलेट जनरल ऑफ इंडिया भी गये, जहां कॉन्सुल जनरल डॉ. सुशील कुमार और डिप्टी कॉन्सुल जनरल गिरीश के साथ उनकी शिष्टाचार भेंट हुई। इसके बाद डॉ. पूनियां मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड देखने पहुंचे, जहां से उन्होंने अपना एक वीडियो संदेश जारी किया जिसमें उन्होंने कहा कि, नमस्कार, राम-राम, मैं इस समय ऐतिहासिक मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड पर हूं, आस्ट्रेलिया का यह वह मैदान है जो दुनिया में क्रिकेट का तीर्थ कहा जाता है लेकिन हम गौरवान्वित हो सकते हैं, क्योंकि उस जमाने में उस पीढ़ी में जब रेडियो पर कमेंट्री सुनता था, 1978 का दौर मुझे याद है जनवरी में जब भारत के स्पिनर चंद्रशेखर ने 6 विकेट लिये 52 रन देकर, दूसरी इनिंग में भी वही चमत्कार किया।

सीकर की बैठक में कलह से स्पष्ट है कि कांग्रेस में अंर्तविरोध चरम पर है : राजेन्द्र राठौड़

जयपुर। विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष राजेन्द्र राठौड़ ने ट्वीट कर कहा कि दिल्ली में कांग्रेस हाईकमान की गहलोत और पायलट के बीच सुलह कराने की कोशिश से पूर्व सीकर में मीटिंग में कांग्रेस नेताओं के बीच की कलह से साबित हो गया है कि कांग्रेस में अंतर्विरोध चरम पर है, इनके नेताओं को सिर्फ अपनी कुर्सी बचाने से मतलब है, ना कि जनता से जुडे विकास के मुद्दों से।

राठौड ने कहा कि कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष ने जिस प्रकार सार्वजनिक रूप से अपनी ही पार्टी के वरिष्ठ विधायक एवं राजस्थान विधानसभा में सभापति राजेन्द्र पारीक के साथ दुर्व्यवहार किया है वो दुर्भाग्यपूर्ण है। कांग्रेस की पाठशाला में वरिष्ठ नेताओं का अपमान करना ही सिखाया जाता है। अनुशासनहीनता, गुटबाजी, अंर्तकलह, अपमान की राजनीति ही कांग्रेस की असली पहचान है।

राठौड ने कहा कि पीसीसी अध्यक्ष को यह वहम नहीं होना चाहिये कि सरकार 4 महीने बाद जिंदा रहेगी। वरिष्ठ विधायक राजेन्द्र पारीक को भी यह वहम नहीं होना चाहिये कि वो ही गहलोत के खास है। आज की बैठक में खास और आम में फर्क साफ दिख रहा है। राठौड ने कहा कि कुछ दिन पूर्व अजमेर में कांग्रेस कार्यकर्ताओं के बीच जमकर लात घूंसे चले थे। कांग्रेस में सिर फुटोव्वल की स्थिति है। अब आगामी समय में सुरक्षा कवच और पुलिस के कडे पहरे के बिना कांग्रेस की मीटिंग संभव ही नहीं है।

प्रदेश में 3 नए संक्रमित मिले

जयपुर। प्रदेश में सोमवार को तीन नए करोना संक्रमित मिले हैं। वहीं इस बीच केवल 2 ही मरीज ठीक हुए हैं। राज्य में फिलहाल 58 संक्रमितों का इलाज चल रहा है।

प्रदेश में पिछले चौबीस घंटों में केवल दो ही जिलों में नए संक्रमित मिले हैं। इनमें उदयपुर में दो और अजमेर में एक नया मरीज सामने आया है। इससे पहले राज्य में रविवार को पांच रोगी पाए गए थे। इधर आज राज्य में 639 कोविड जांच की गई है।

हज जाने वालों की 10वीं फ्लाइट रवाना

जयपुर। राजस्थान स्टेट हज कमेटी मेंबर अब्दुल हकीम खान ने बताया हज 2023 के हज के मुकद्दस सफर पर जाने वाले हाजियों की दसवीं फ्लाइट के हाजियों का जयपुर एयरपोर्ट पर इस्तकबाल किया। जिसमें मेंबर राजस्थान स्टेट हज कमेटी अब्दुल हकीम खान अधिशासी अधिकारी डाक्टर महमूद ख़ान कस्टम अधिकारी अब्दुल हमीद खान स्टेट हज कमेटी मेंबर रियाज़ फारूकी जनाब मतलूब खान सलिम अहमद समाजसेवी वसीम खान युवा नेता मौजूद रहे व हज 2023 की दसवीं फ्लाइट के 160 हाजियों की फ्लाइट जयपुर एयरपोर्ट से मदीना शरीफ़ के लिए रवाना व सभी हाजियों को हज 2023 की मुबारकबाद दी।

एस.के.आई.टी. छठे साल पहले स्थान पर

जयपुर (कासं)। राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय (आरटीयू) ने प्रदेश के इंजीनियरिंग कॉलेजों की साल 2022-23 की रैंकिंग को लेकर नोटिस जारी किया है। आरटीयू की ओर से कॉलेजों की रैंकिंग के लिए जारी क्वालिटी इंडेक्ट वेल्यू (क्यूआईवी) में गत वर्ष रहने वाले सभी निजी कॉलेजों की रैंकिंग यथावत रखी गयी है। आरटीयू द्वारा जारी किए गए नोटिस के आधार पर स्वामी केशवानंद इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी,मैनेजमेंट एवम ग्रामोथन ने लगातार छठे साल पहला स्थान प्राप्त किया। वहीं दूसरे स्थान पर पूर्णिमा कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, पूर्णिमा इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी ने तीसरा स्थान एवम जेईसीआरसी ने चौथा स्थान प्राप्त किया है। टॉप 10 कॉलेजों की सूची में सभी कॉलेज जयपुर के हैं।

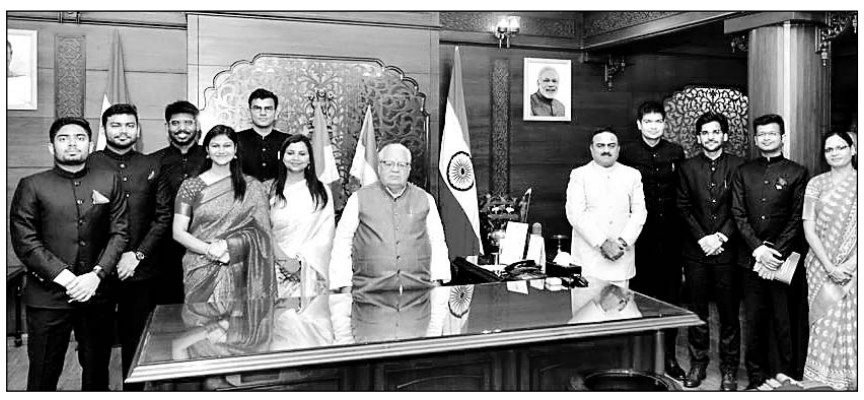

राज्यपाल कलराज मिश्र से सोमवार को राजभवन में भारतीय प्रशासनिक सेवा के नौ प्रशिक्षु अधिकारियों के एक प्रतिनिधिमंडल ने शिष्टाचार मुलाकात की। राज्यपाल ने प्रशिक्षु आईएएस अधिकारियों से आव्हान किया कि वे राष्ट्र के प्रति समर्पण भाव रखते हुए आमजन को अधिकाधिक लाभान्वित करने के लिए कार्य करें। उन्होंने इन अधिकारियों से संवेदनशील होकर विकास योजनाओं एवं जन कल्याणकारी कार्यक्रमों के प्रभावी क्रियान्वयन के साथ ही आमजन से जुड़ी समस्याओं के निराकरण के लिए प्रतिबद्ध होकर कार्य करने का आव्हान भी किया। कार्मिक विभाग के प्रमुख शासन सचिव हेमंत गेरा के नेतृत्व में मुलाकात करने वाले इस प्रतिनिधिमंडल में वर्ष 2022 बैच के प्रशिक्षु अधिकारी अंशु प्रिया, श्रद्धा गोमे एवं भैसारे शुभम अशोक, दिव्यांश सिंह, मोहित कासनिया, प्रीतम कुमार, सक्षम गोयल, यक्ष चौधरी और यथार्थ शेखर शामिल थे।

मोदी सरकार के नौ वर्ष सेवा, सुशासन और गरीब कल्याण को समर्पित : पीयूष गोयल

जयपुर। केंद्र सरकार के ऐतिहासिक नौ वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य पर जयपुर में मीडिया संवाद कार्यक्रम आयोजित किया गया। मीडिया संवाद कार्यक्रम में केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल ने मोदी सरकार के नौ वर्षों के सुशासन और सेवा भावना से किए गए विकास कार्यों के संबंध में पत्रकारों से संवाद किया। इस दौरान सांसद पूनम महाजन ने पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से मोदी सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं के बारे में विस्तार से पत्रकारों से परिचर्चा की। केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल ने पत्रकारों से संवाद करते हुए कहा कि जनता ने नौ साल पहले प्रचंड बहुमत के साथ जो सरकार चुनी थी, वह उनकी उम्मीदों पर खरा उतरी है, मोदी ने 24 घंटे बिना रूके जनता के हितों के लिए

> ■ सीमा सुरक्षा और मजबूत अर्थव्यवस्था नौ साल का ऐतिहासिक कालखंड : सीपी जोशी
>
> ■ नौ साल की कड़ी मेहनत और जनता का प्यार अत्योंदय का सम्मान : पूनम महाजन

काम किया है। देश के 140 करोड नागरिकों को सशक्त करने और शोषित वंचितों तक सरकार की प्रत्येक योजना का लाभ पहुंचे इस सोच के साथ काम किया है। भाजपा ने सुशासन की नीती के बूते ही विश्व में देश को एक नई पहचान मदर ऑफ डेमोक्रेशी के रूप में दी है। भाजपा सरकार ने श्री डी का संकल्प लेकर निरंतर विकास की दिशा में काम किया है। इसी के चलते आज भारत विश्व पटल पर अपनी नई मजबूत अर्थव्यवस्था के लिए जाना जाता है। केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल ने कहा कि हम देश को विश्वास दिलाते हैं कि प्रत्येक दिशा में सेवाभाव से काम करते हुए हम विश्व के सबसे युवा लोकतंत्र को नई उम्मीदों के साथ बुलंदियों पर ले जाएंगे। देश ने इन नौ वर्षों में यह देख लिया कि शोषितों और वंचितों को हर हाल में उनका हक मिलेगा। सांसद पूनम महाजन ने केंद्र सरकार के गौरवपूर्ण नौ सालों की तमाम उपलब्धियों को प्रदर्शित किया। अपने प्रस्तुतीकरण में उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंन्द्र मोदी ने सुशासन संकल्प के साथ गरीब और वंचित को समाज में सम्मान सुरक्षा दिलाने का वादा किया था जिसको उन्होने पूरा करके दिखाया है। इस दौरान पूनम महाजन ने कोविड महामारी से निपटने के लिए भारत सरकार द्वारा किए गए ऐतिहासिक कार्यों की जानकारी देते हुए कहा कि जहां जापान जैसे देशों में टीकाकरण का कार्य बहुत धीमी गति से चल रहा था उस समय के भारत ने लगभग टीकाकरण का काम पूरा कर लिया था। इसके अलावा भारत ने 220 करोड़ वैक्सीन डोज खुद के दम पर तैयार करके अन्य देशों को भी महामारी के इस विकट समय में सहायता पहुंचाई थी।

रिश्वत मामले में आरपीएफ के निरीक्षक सहित तीन को सजा

जयपुर, (का.सं.)। एसीबी मामलों की विशेष अदालत ने रेलवे टिकट की दलाली को लेकर दर्ज प्रकरण को रफा दफा करने की एवज में पांच हजार रुपए की रिश्वत लेने के मामले में आरपीएफ के तत्कालीन निरीक्षक कैलाश चंद और सिपाही जगवीर व सांवरमल मीणा को एक-एक साल की सजा सुनाई है। इसके साथ ही अदालत ने प्रत्येक अभियुक्त पर पन्द्रह हजार रुपए का जुर्माना भी लगाया है।

अभियोजन पक्ष की ओर से विशेष लोक अभियोजक ने अदालत को बताया कि सीकर के रानोली निवासी चिरंजीलाल शर्मा ने 25 जुलाई, 2007 को एसीबी, सीकर में रिपोर्ट दी थी। रिपोर्ट में बताया गया कि वह एलआईसी एजेंट हैं और किस्त लेने जयपुर गया था। इस दौरान उसके और उसके भाई पर रेलवे टिकट की दलाली का आरोप लगाते हुए एफआईआर दर्ज कर ली गई। ऐसे में अपना पक्ष रखने आरपीएफ, रींगस गया। जहां केस रफा दफा करने की एवज में आरपीएफ निरीक्षक को पांच हजार रुपए की बात कही गई। इस दौरान सत्यापन के दौरान आरपीएफ निरीक्षक कैलाश चंद के कहने पर सिपाही जगवीर सिंह ने दो हजार रुपए लिए।

सामूहिक विवाह सम्मेलन आज

जयपुर। अखिल भारतीय हरियाणा ब्राह्मण महासभा की ओर से आयोजित किए जाने वाले दो दिवसीय सामूहिक विवाह सम्मेलन को लेकर शनिवार को प्रेस वार्ता की गई। महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष बिरदीचंद शर्मा बंबाला ने बताया कि बस्सी के बैनाडा धाम के श्रीजी धाम में आदर्श सामूहिक विवाह सम्मेलन का आयोजन मंगलवार को किया जाएगा। जिसमें लगभग 51 जोड़े परिणय सूत्र में बंधेंगे। सम्मेलन में नवविवाहित जोड़ों को 51 तरह के आइटम महासभा के माध्यम से भामाशाहो की ओर से उपहार स्वरूप दिए जाएंगे।

राष्ट्र सेविका समिति का पथ संचलन निकला

जयपुर। राष्ट्र सेविका समिति जयपुर प्रांत के प्रवेश वर्ग का पथ संचलन सोमवार को जयपुर में हुआ। संचलन में माताओं बहनों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

संचलन जवाहर नगर स्थित सरस्वती बालिका विद्यालय से प्रारंभ हुआ और शहर के प्रमुख मार्गों से होते हुए तीन किलोमीटर तक निकल पुन: सरस्वती बालिका विद्यालय पहुंचा। संचलन में भगवा ध्वज लेकर ध्वज वाहिनी और साथ चल रही बहने वातावरण को बहुत ही ओजस्वी और देशभक्तिमय बना रही थीं। घोष गण की गूंज से सारा वातावरण गूंज रहा था। स्थान स्थान पर लोगों ने पुष्प वर्षा द्वारा सेविकाओं का भव्य स्वागत किया।

इस अवसर पर सेविकाओं को डॉ. मंजू शर्मा वायव्य क्षेत्र बौद्धिक प्रमुख का सान्निध्य प्राप्त हुआ। उन्होंने कहा अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हमें निरंतर गतिमान रहना होगा। वर्ग में रहते हुए शारीरिक शक्ति, मानसिक बल, अनुशासन समयबद्धता, नियमितता आदि सभी गुणों में जो श्रेष्ठता प्राप्त की उसका संचरण समाज के अन्य लोगों में भी हो इस हेतु से पथ संचलन का आयोजन किया जाता है। संचलन में चलने वाली बहनों सेविकाओं और अधिकारियों की संख्या 125 रही ।

बस कंपनी पर 25 हजार रु. हर्जाना

जयपुर, (का.सं.)। जिला उपभोक्ता विवाद प्रतितोष आयोग जयपुर द्वितीय ने यात्री को रास्ते से उतारने पर महालक्ष्मी ट्रेवल्स कंपनी पर 25 हजार रुपये का हर्जाना लगाया है। यह आदेश परिवादी सुरेन्द्र लाम्बा के परिवाद पर स्वीकार करते हुए दिये। परिवादी के अधिवक्ता राम प्रकाश कुमावत ने बताया कि लाम्बा ने जयपुर से कुशलगढ़, बांसवाड़ा जाने के लिये 700 रुपये प्रति सवारी सीट बुक कराई थी लेकिन बस चालक ने बस को गंतव्य स्थान पर नहीं ले जाकर बीच रास्ते में ही उतार दिया गया।

ज्यादती करने वाले अभियुक्त को बीस साल की सजा

जयपुर, (का.सं.)। पॉक्सो मामलों की विशेष अदालत क्रम-1 महानगर प्रथम ने 13 वर्षीय पीड़िता के साथ ज्यादती करने वाले अभियुक्त सुरेन्द्र कुमार को बीस साल की सजा से दंडित किया है। इसके साथ ही अदालत ने सोडाला निवासी इस अभियुक्त पर 55 हजार रुपए का जुर्माना भी लगाया है। अदालत ने अपने आदेश में कहा कि अभियुक्त ने पीड़िता के घर में जबरन प्रवेश कर उसके प्राइवेट पार्ट को क्षति पहुंचाते हुए छेड़छाड़ की है। ऐसे में उसके प्रति नरमी का रुख नहीं अपनाया जा सकता।

अभियोजन पक्ष की ओर से विशेष लोक अभियोजक ने बताया कि पीड़िता की मामी ने 1 दिसंबर, 2020 को महेश नगर थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई थी। रिपोर्ट में कहा गया कि दिन में वह और उसके पति काम पर गए हुए थे। इस दौरान उसकी 13 साल की भांजी उसके घर पर बच्चों के साथ थी। इतने में मौका पाकर अभियुक्त वहां आ गया और पीड़िता के प्राइवेट पार्ट में हाथ डाला व मारपीट करने लगा। तभी पीड़िता के मामा अचानक घर लौट आए और पीड़िता को अभियुक्त के चंगुल से छुड़ाया।

वहीं अभियुक्त की ओर से कहा गया कि उसे प्रकरण में जबरन फंसाया गया है। दोनों पक्षों की बहस सुनने के बाद अदालत ने अभियुक्त को दोषी मानते हुए उसे सजा सुनाई है।

सदा मुस्कुराने की चाबी दी योगाचार्य ढाकाराम ने

जयपुर। विख्यात योग गुरु योगाचार्य ढाकाराम के सानिध्य में रोटरी क्लब जयपुर सिटीजन एवं योगा पीस संस्थान के संयुक्त तत्वाधान व अंतराष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन जयपुर एवं नगर निगम जयपुर ग्रेटर के सहयोग से महावीर स्कूल सी स्कीम में आनंदम योग शिविर संपन्न हुआ। शिविर का उद्घाटन योग गुरु ढाकाराम, मुख्य अतिथि उप पुलिस अधीक्षक यातायात प्रहलाद कृष्णिया, विशिष्ट अतिथि विशेषाधिकारी, आयुष विभाग, राजस्थान सरकार डॉ. गिरधर गोपाल शर्मा, आयोजन समिति अध्यक्ष सुधीर जैन गोधा, मुख्य समन्वयक योगी मनीष विजयवर्गीय ने किया।

पति के दोस्त ने किया दुष्कर्म

जयपुर (कासं)। मुहाना इलाके में विवाहिता से पति के दोस्त द्वारा दुष्कर्म करने का मामला सामने आया है। बाथरुम में नहाते समय आरोपी ने उसका न्यूड वीडियो बना लिया। वायरल करने की धमकी देकर ब्लैकमेल कर देहशोषण किया। मुहाना थाने में पीड़िता ने आरोपी के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज करवाई है। पुलिस ने बताया कि मुहाना निवासी 25 साल की महिला ने रिपोर्ट दर्ज करवाई है। वह अपने पति के साथ यहां रहती है। शिकायत में बताया कि पति के दोस्त मुकेश सैनी ने उसके साथ दुष्कर्म किया है। पति का दोस्त होने के कारण आरोपी मुकेश का घर पर आना-जाना था। करीब 9 महीने पहले पति की गैरमौजूदगी में आरोपी घर आया। बाथरुम में नहाने के दौरान चुपचाप उसका न्यूड वीडियो बनाकर चला गया। जिसके बाद उसको कॉल कर न्यूड वीडियो के बारे में बताया। वायरल करने की धमकी देकर ब्लैकमेल करने लगा। ब्लैकमेल कर पति की गैरमौजूदगी में 3-4 बार घर आकर उसके साथ रेप किया। इस बारे में किसी को बताने पर जान से मारने की धमकी दी। आरोप है कि 24 मई को उसका पति गांव जाने के लिए उसे बस में बैठाकर चला गया। पीछा करते हुए आरोपी मुकेश भी बस में चढ़ गया। बस में हल्ला कर बदनाम करने की धमकी देकर रास्ते में उतार लिया।

इंद्रजीत कौर व पिंकी सिंह सम्मानित

सिख पंथ के पांचवें गुरु अर्जन देव की शहादत को समर्पित पिछले 40 दिनों से स्त्री सत्संग की ओर से गुरुद्वारा राजा पार्क में चल रहे सुखमनी साहिब के पाठों की समाप्ति पर सुखमनी सेवा सोसायटी की प्रेसिडेंट पिंकी सिंह और राजापार्क की इंद्रजीत कौर को सरोपा देकर सम्मानित किया गया।

जयपुर। सिख पंथ के पांचवें गुरु अरजन देव की शहादत को समर्पित पिछले 40 दिनों से स्त्री सत्संग द्वारा गुरुद्वारा राजा पार्क में चल रहे सुखमनी साहिब के पाठों की आज समाप्ति हुई। इस मौके पर खालसा हेल्पिंग हैण्ड द्वारा राजस्थान सिख समाज के सहयोग द्वारा संगत को गुरवाणी, नाम सिमरन के साथ जोडने, बच्चों को पंजाबी सिखाने व गुरमत रहत मर्यादा के साथ जोडने का प्रयास करने वालीं 25 महिलाओं को सिरोपा देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर राजापार्क की इंद्रजीत कौर और सुखमनी सेवा सोसायटी बनीपार्क की प्रेसिडेंट पिंकी सिंह को सम्मानित किया गया। उनकी तरफ से दीपिका कपूर ने सिरोपा ग्रहण किया। इस दौरान राजस्थान सिख समाज के अध्यक्ष अजयपाल सिंह, खालसा हेल्पिंग हैण्ड के अध्यक्ष भूपिंदर सिंह पप्पी, महा सचिव जगजीत सिंह सूरी, बलदेच सिंह, हरविंदर सिंह पप्पू, देवेन्दर सिंह शंटी, सूर्य उदय सिंह, जगजीत सिंह मुच्छल उपस्थित थे।

'अजिओ' की बिग बोल्ड सेल 1 जून से शुरू होगी

जयपुर (कासं)। देश के सबसे बड़े फैशन ई-टेलर में शुमार 'अजिओ' की बिग बोल्ड सेल 1 जून से शुरू होगी। यह सेल एडिडास के सहयोग से मेलोरा के साथ मिलकर संचालित की जायेगी। ग्राहक 28 मई से रोजाना 6 घंटे की सीमित अवधि के लिए अर्ली एक्सेस की सुविधा का लाभ उठा सकेंगे। बिग बोल्ड सेल में ग्राहक 5 हजार से ज्यादा ब्रांड्स के प्रोडक्ट खरीद सकेंगे, जो कि 1.3 मिलियन से अधिक क्यूरेटेड फैशन स्टाइल को पेश करते हैं।

सेल की घोषणा करते हुए अजिओ के सी.ई.ओ. विनीत नायर ने कहा कि, बिग बोल्ड सेल में देशभर के 19 हजार से अधिक पिनकोड के ग्राहक शामिल होंगे, जो एक्सक्यूसिव इंटरनेशनल ब्रांड्स, प्राइवेट लेबल तथा अपने देश के ब्रांड्स के बड़े सलेक्शन से खरीददारी कर सकेंगे। फैशन, लाइफस्टाइल, होम एंड डेकोर, ब्यूटी, ज्वैलरी और पर्सनल केयर जैसी अलग-अलग कैटेगरी में बेहतरीन डील्स और ऑफर्स मिलेंगे। एस.बी.आई. के क्रेडिट-डेबिट कार्ड से खरीदारी करने पर ग्राहकों को 10 प्रतिशत तक की अतिरिक्त छूट मिलेगी। सेल के दौरान ग्राहकों को एडिडास, नाइकी, प्यूमा, सुपरड्राई, जीएपी, यूएसपीए, स्टीव मैडेन, लिवाईस, मार्क्स एंड स्पेंसर, अरमानी एक्सचेंज, रितु कुमार, मुजी, बुडा जीन्स कंपनी, फेयर रोज, एन्क्रस्टड, पोर्टिको, होम सेंटर, कैसियो, लेक्मे, मेबेलिन, मेलोरा जैसे ब्रांड्स पर रोमांचक डील्स मिलेगी। विनीत नायर ने कहा कि हमें पूरी उम्मीद है कि 60 मिलियन से ज्यादा नए यूजर्स अजिओ से जुड़ेंगे और एक्सक्लूसिव इंटरनेशनल ब्रांड्स की इस शॉपिंग सेल का फायदा उठाएंगे। उन्होंने बताया कि 'फैशन्स मोस्ट वांटेड' कैंपेन फिल्म 31 मई को रिलीज होने वाली है, जिसमें एक्ट्रेस श्रद्धा कपूर और राणा दग्गुबाती नजर आएंगे। इस 360 डिग्री कैंपेन को टीवी, ओटीटी, सोशल मीडिया, डिजिटल, प्रिंट और रेडियो पर चलाया जायेगा।

पीर गंगानाथ महाराज सिरे मंदिर धाम पर चातुर्मास करेंगे

जालोर, (कासं)। चातुर्मास सेवा समिति जालोर की ओर से पीर गंगानाथ महाराज की अध्यक्षता में चातुर्मास की तैयारियों को लेकर एक आम बैठक का आयोजन रविवार शाम को जालोर शहर के तिलकद्वार के अंदर स्थित भैरूनाथ अखाडे में किया गया।

बैठक में चातुर्मास सेवा समिति के सदस्य, जालोर शहर एवं आस पास के गांवो के भक्तजन उपस्थित रहे। बैठक में उपस्थित समस्त भक्तो ने पीर गंगानाथ महाराज का चातुर्मास सिरे मंदिर धाम पर सम्पन्न करवाने का सर्व सहमति से निर्णय लिया गया। पीर गंगानाथ महाराज के सिरे मंदिर धाम पर चातुर्मास की घोषणा के साथ नाथजी महाराज के जयकारे लगाये। सभी समाज के प्रतिनिधियों द्वारा पीर गंगानाथ महाराज का माला पहनाकर चातुर्मास सम्पन्न करवाने को लेकर आशीर्वाद प्राप्त किया। बैठक में योगी प्रेमनाथ, योगी ईश्वरनाथ, योगी आंनदनाथ, योगी रेवतीनाथ का भी सानिध्य रहा। बैठक में चातुर्मास सेवा समिति के व्यवस्थापक पारसमल परमार ने बताया कि चातुर्मास की सदियो से चली आ रही परम्परा का निर्वाहन पीर गंगानाथ महाराज 9 जुलाई को गाजो बाजो के साथ शोभायात्रा के रूप में सिरे मंदिर धाम के लिए प्रस्थान करेगे। पीर गंगानाथ महाराज का यह सातवी बार चातुर्मास होगा। इस बार अधिक मास होने के कारण दो श्रावण मास का आयोजन होगा।

पीर गंगानाथ महाराज के सिरे मंदिर धाम चातुर्मास की घोषणा के बाद भक्तो में खुशी देखी गई तथा भक्तजनो ने पीर गंगानाथ महाराज से आशीर्वाद प्राप्त किया। सिरे मंदिर धाम पर पीर गंगानाथ महाराज का यह पांचवां चातुर्मास होगा।

बैठक में पंडित प्यारेलाल शर्मा ने चातुर्मास को लेकर शुभ मुहुर्त निकाला। पीर गंगानाथ महाराज 9 जुलाई को सुबह 9 बजे भैरूनाथ अखाडे से चातुर्मास के लिए सिरे मंदिर धाम के लिए हजारो की संख्या में भक्तजनो व गाजो बाजो के साथ रवाना होगे। चातुर्मास के दौरान सिरे मंदिर पर पीर गंगानाथ महाराज का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए हजारो की संख्या में भक्तगण पहुंचेगे। बैठक में उपस्थित सभी भक्तजनो ने नवकारसी एवं अन्य खाद्य समाग्री के चढ़ावे व सहयोग देने का पूर्ण आश्वासन दिया। बैठक में सभी भक्तो ने चातुर्मास को सम्पन्न करवाने के लिए पूर्ण सहयोग की बात कही। पीर गंगानाथ महाराज के चातुर्मास की घोषणा के बाद चातुर्मास सेवा समिति के कार्यकर्ता तैयारियों में जुट गये है।

चातुर्मास सेवा समिति के अध्यक्ष मीठालाल दर्जी, खसाराम सांखला, हेमराज सुथार, बलवंत राव, ओबाराम देवासी, हीरालाल घांची, पप्पसा अग्रवाल,अम्बालाल माली, नैनाराम लुहार, नवीन सुथार, गजाराम देवासी, मकसा मेवाडा, कानाराम देवासी, मांगीलाल सोनी, प्रेमाराम जाखड, शिवलाल प्रजापत, धर्मनारायण गहलोत, ओटाराम माली, मदन माली, गणेशाराम सुथार, रामकिशन चैधरी, श्रीराम वैध, लालचंद प्रजापत, चम्पालाल सुथार, कनिष्क चौधरी, मानवेन्द्र राजपुरोहित, हिरपुरी गोस्वामी, ईश्वर नागर, जयनारायण वैष्णव, फुटरमल शर्मा, कांतिलाल सोनी, हितेष, प्रजापत, प्रवीण लुहार, नरेश व्यास, गोविन्द पुरी, दीपक रामावत, दीपक सुथार, बंशीलाल सोलंकी, नीतिन सोलंकी, अजय ओझा सहित समस्त छतीस कौम के लोग मौजूद थे।

जालोर में पीर गंगानाथ महाराज के सिरे मंदिर धाम पर चातुर्मास की घोषणा के बाद भक्तों ने आशीर्वाद प्राप्त किया। फोटो-राष्ट्रदूत

सार-समाचार

आहोर में देव प्रतिमाएं स्थापित

आहोर में रामसा पीर मंदिर जीर्णोद्धार प्रतिष्ठा महोत्सव के अंतिम दिन हैलीकॉप्टर से पुष्प वर्षा की गई। फोटो-राष्ट्रदूत

आहोर,(निसं)। आहोर में लोक देवता बाबा रामदेव मंदिर जीर्णोद्धार प्रतिष्ठा महोत्सव के अंतिम दिन शुभ मुहूर्त में वैदिक मंत्रोच्चार के साथ रामसा पीर व अन्य देवताओं की मूर्तियां स्थापित की गई। आहोर में आज सुबह साढे नौ बजे के आसपास महोत्सव के सभी लाभार्थी अपने अपने घरों से पारिवारिक सदस्यों व रिश्तेदारों के संग बैंड बाजा व ढोल धमाके के साथ कस्बे में पुराना बस स्टैंड स्थित रामापीर के मंदिर पहुंचे। मूर्ति स्थापना, शिखर पर कलश, तोरण,मौबण,नेजा,ध्वजा के अलावा तमाम चढावा लेने वाले लाभार्थियों ने चढावे की रस्म अदा की। मूर्ति स्थापन के दौरान हेलीकॉप्टर से पुष्प वर्षा की गई जो काफी आकर्षित रही। हेलीकॉप्टर देखने के लिए कस्बे के घरों की छतों पर लोगों की भीड उमड पडी। इससे पूर्व शुभ वेला में प्रधान आचार्य पंडित भरत भाई ओझा व विद्वान पंडितों ने महायज्ञ की पूर्णाहुति दी। इस दौरान पार्श्ववाडी में संत महापुरुषों का बहुमान किया गया। गौरतलब है कि रविवार को आई तुफानी बारिश के कारण राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के खेल मैदान में महोत्सव को लेकर लगाए गए बडे बडे शामियाने क्षतिग्रस्त हो गए थे। इसलिए महोत्सव के पूर्व निर्धारित कार्यक्रम आयोजित नहीं हो पाए। महोत्सव कमेटी के अध्यक्ष बंशीसिंह चौहान ने बताया कि बाबा रामदेव मंदिर में मूर्ति स्थापन के साथ ही महोत्सव का समापन किया गया है।

पक्षियों के लिए परिंडा लगाया

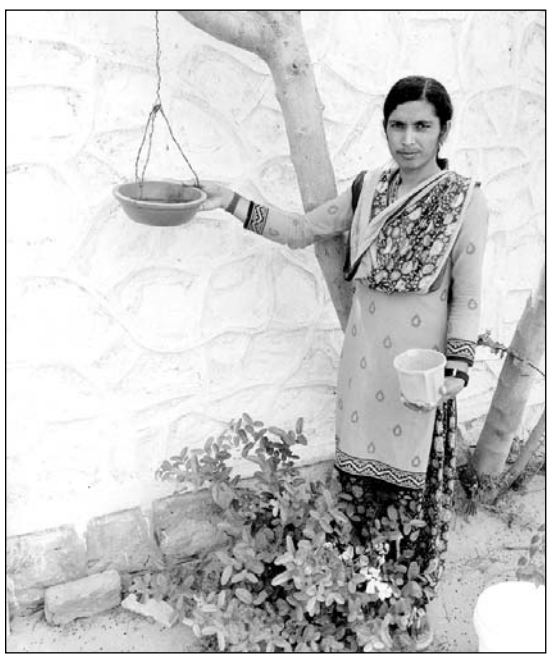

भाजपा महिला मोर्चा जालोर की जिला महामंत्री उर्मिला दर्जी ने अपने घर पर पक्षियों के लिए परिंडा लगाया। फोटो-राष्ट्रदूत

जालोर, (कासं)। एक परिंडा अपने घर पर अभियान के तहत पीपा क्षत्रिय दर्जी समाज की महिला नेत्री व भाजपा महिला मोर्चा जालोर की जिला महामंत्री उर्मिला दर्जी ने सोमवार को अपने घर पर पक्षियों के लिए परिंडा लगाया। उर्मिला दर्जी ने बताया कि हमें अपने घर पर पक्षियों के लिए परिंडा लगाना चाहिए। इससे इसके लिए उन पक्षियों के लिए पानी उपलब्ध कराया जाए। ताकि वे पानी की तलाश में ही दम तोड दे।इसकी शुरुआत आप स्वयं भी कर सकते हैं,बस एक परिंडा लगा कर। इसके लिए आप और आपकी कालोनी के अन्य लोग मिलकर इसे रोजमर्रा के कार्य के साथ जोड़ लेंवे। इसके लिए आप एक परिंडा लगाएं, जिससे पक्षियों को छाया के साथ-साथ पानी भी मुहैया हो सकेगा। उर्मिला दर्जी ने बताया कि हमें सभी को अपने अपने घरों के आंगन व सार्वजनिक स्थानों पर अधिक से अधिक परिंडा लगाना चाहिए इसे हमें एक दया भाव के साथ आगे बढाया जाये।

लेटा में जिला स्तरीय प्रशिक्षण संपन्न

जालोर, (कासं)। ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज विभाग के निर्देशानुसार जालोर जिले में 2021 बैच के नवनियुक्त 100 ग्राम विकास अधिकारियों का जीएनएम ट्रेनिंग सेन्टर लेटा में चल रहे 15 दिवसीय जिला स्तरीय आधारभूत प्रशिक्षण का सोमवार को समापन हुआ। प्रशिक्षण अवधि के दौरान जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी संजय कुमार वासु, अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी कंवरलाल सोनी, जालोर उपखण्ड अधिकारी दौलतराम चौधरी, लेखाधिकारी रमेश वर्मा व थानाधिकारी रविन्द्र सिंह द्वारा विभिन्न विषयों पर व्याख्यानों का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतिम दिवस राजकीय महाविद्यालय आहोर के सहायक आचार्य प्रोफेसर चक्रवती सिंह द्वारा कौशल संवर्द्धन एवं स्ट्रेस मैनेजमेंट को लेकर प्रशिक्षु ग्राम विकास अधिकारियों को जानकारी दी गई। जीएनएम ट्रेनिंग सेन्टर लेटा में आयोजित 15 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान 15 से 26 मई तक 12 दिवसीय क्लासरूम प्रशिक्षण दिया गया एवं 27 से 29 मई तक मॉडल पंचायत नरसाणा एवं पंचायत समिति बागोड़ा में क्षेत्र भ्रमण कर करवाकर ग्राम विकास अधिकारियों को ग्रामीण एवं पंचायती राज विभाग के कार्यों को समझाकर उनसे जुडी जानकारी प्रदान की गई। प्रशिक्षण में आई.टी. एवं पोर्टल व कम्प्यूटर लैब संबंधी हैंडस ऑन व प्रायोगिक प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण के दौरान नवनियुक्त ग्राम विकास अधिकारियों को पदीय कर्त्तव्यों, राज्य सरकार की विभिन्न महत्वपूर्ण योजनाओं, अन्य विभागीय समन्वय, सामान्य वित्तीय और लेखा नियम, महत्वपूर्ण कानूनी प्रावधानों, राज्य व केन्द्र सरकार के पोर्टल के माध्यम से योजना निष्पादन एवं मॉनिटरिंग व्यवस्था, निर्माण कार्यों का निष्पादन किये जाने की प्रक्रियाओं के बारे में मूलभूत जानकारी एवं सैद्धांतिक व प्रायोगिक ज्ञान प्रदान किया गया।

गुरूकृपा विमंदित गृह का निरीक्षण

जोधपुर, (कासं)। राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, जयपुर के निर्देशानुसार जिला विधिक सेवा प्राधिकरण जोधपुर के सचिव सुरेन्द्र सिंह सांदू ने सोमवार को गुरूकृपा मानसिक विमंदित गृह, जोधपुर का मासिक औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान सचिव सुरेन्द्र सिंह सांदू ने विमंदितों से मुलाकात की गयी एवं उनके निवास स्थान की साफ-सफाई, विमंदित ग्रह परिसर, भोजन कक्ष एवं रसोई घर निरीक्षण किया। सचिव सांदू ने विमंदितों को दिए जाने वाली खाद्य सामग्री की जाँच की गयी तथा समस्त व्यवस्थाओं का निरीक्षण कर सुधार के लिए आवश्यक निर्देश उपस्थित प्रबन्धक को दिए गए।

सीमा सुरक्षा बल ने रक्तदान शिविर लगाया

बाड़मेर में सीमा सुरक्षा बल की 76 वाहिनी के 56 वें स्थापना दिवस के अवसर पर रक्तदान शिविर का आयोजन किया। फोटो-राष्ट्रदूत

बाड़मेर, (निसं)। रक्तदान महादान है। इसके जरिए हम किसी का जीवन बचा सकते है। प्रत्येक स्वस्थ्य व्यक्ति को रक्तदान अवश्य करना चाहिए। सीमा सुरक्षा बल बाड़मेर सेक्टर के उप महानिरीक्षक प्रीतपाल सिंह भट्टी ने मुख्य अतिथि के रूप में सोमवार को 76 वाहिनी के 56 वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित रक्तदान शिविर के दौरान जवानों को संबोधित करते हुए यह बात कही।

इस अवसर पर उप महानिरीक्षक प्रीतपाल सिंह भट्टी ने कहा कि पिछले कुछ वर्षों में रक्तदान को लेकर आमजन में खासी जागरूकता आई है। उन्होंने कहा कि सीमा सुरक्षा बल के जवान रक्तदान के लिए सदैव तत्पर रहते है। उन्होंने रक्तदान शिविर के आयोजन की पहल की सराहना करते हुए कहा कि वाहिनी भविष्य में भी सामाजिक सरोकार के कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी निभाती रहें। उन्होंने आमजन से रक्तदान करने तथा अन्य लोगों को भी इसके लिए प्रेरित रहने की अपील की। इससे पहले सीमा सुरक्षा बल 76 वाहिनी जालीपा कैंप में मुख्य अतिथि बीएसएफ उप महानिरीक्षक प्रीतपाल सिंह भट्टी ने फीता काटकर रक्तदान शिविर का विधिवत शुभारंभ किया। इस दौरान समादेष्टा सतीश कुमार मिश्रा,द्वितीय कमान अधिकारी जितेन्द्र सिंह शाही,चिकित्सा अधिकारी डॉ. उर्वि एवं 76 वाहिनी के अधिकारीगण एवं अन्य कार्मिक उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में समादेष्टा सतीश कुमार मिश्रा ने समस्त आगंतुकों एवं रक्तदाताओं का आभार जताया। उन्होंने कहा कि वाहिनी की ओर से सरहद की हिफाजत के साथ जन सरोकार के कार्यकमों में सक्रिय भागीदारी निभाई जाएगी। रक्तदान शिविर में 59 यूनिट रक्तदान किया गया।

सत्यपुर भाजपा मंडल की बैठक आयोजित

सांचोर, (कासं)। भारतीय जनता पार्टी जालोर के निर्देशानुसार सत्यपुर मंडल की बैठक राजेश्वर महादेव मंदिर राजेश्वर पूरा बिछावाडी में सम्पन्न हुई।

प्राप्त जानकारी के अनुसार मां भारती के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर बैठक का शुभारंभ किया गया।

बैठक में वन्देमातरम के बाद मंडल अध्यक्ष अर्जुन सिंह सरवाना द्वारा मंडल का ब्यौरा प्रस्तुत किया गया।

साथ ही कार्यकर्ताओ को एकजुट रहकर विधानसभा में भाजपा को जिताने का संकल्प दिलाया गया। राजनीतिक प्रस्ताव विधानसभा पूर्व प्रत्याशी दानाराम चौधरी द्वारा रखा गया।

इस दौरान केंद्र की भाजपा सरकार की उपलब्धियों व राज्य सरकार की नाकामियों को बताया गया और राज्य की कांग्रेस सरकार को उखाड फेंकने का आव्हान किया। राजनीतिक प्रस्ताव का समर्थन वरिष्ठ भाजपा नेता हुकम सिंह गोहिल व धीराराम चौधरी ने किया। वही राष्ट्रगान के साथ बैठक का समापन किया।

इस दौरान मंडल अध्यक्ष अर्जुन सिंह सरवाना, हुकम सिंह गोहिल, पंचायत समिति सदस्य नर्मदा देवी, देंमो देवी, शक्ति केंद्र संयोजक भूपाराम पुरोहित, बुथ अध्यक्ष जोधाराम, केसाराम, जोग सिंह, शक्ति केंद्र प्रभारी कानाराम चौधरी, भूराराम, पारसमल, वेलाराम, ओखा भारती, लसा भारती, परखाराम, गणपत लाल सहित कई भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

जनता ने मन बना लिया है, इस बार कांग्रेस का आना तय : नीरज डांगी

मंडार, (निसं)। राज्यसभा सांसद नीरज डांगी ने बताया कि राज्य की गहलोत सरकार ने जनता से किए गए वादों को पूरा किया, लेकिन केंद्र सरकार ने 2014 से किए गए वादों को 9 साल में भी पूरा नहीं किया एवं जनता के साथ सिर्फ जुमलेबाजी ही की है। जिसका हिसाब आगामी लोकसभा चुनाव में जनता चुकता करेंगी।

राज्यसभा सांसद डांगी आज निकटवर्ती गांव वरमान में सहकारी समिति के गोदाम निर्माण के भूमि पूजन कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने बताया कि राज्य की गहलोत सरकार ने 5 साल के दौरान जनता से किए गए वादों को तो पूरा किया लेकिन जनता की अपेक्षा से बढकर कार्य करने में भी अपनी भूमिका अदा कर जनता को राहत प्रदान करने का कार्य किया है।

डांगी ने बताया कि रेवदर विधानसभा क्षेत्र में पिछले 20 वर्षों से विकास का एक भी कार्य नहीं हुआ लेकिन विगत 5 वर्षों में इस क्षेत्र में विकास के नए आयाम स्थापित करने का कार्य गहलोत सरकार ने किया है। कार्यक्रम के तहत राज्यसभा सांसद डांगी ने विधिवत रूप से ग्राम सेवा सहकारी समिति के गोदाम निर्माण का भूमि पूजन किया।

ग्राम सेवा सहकारी समिति के अध्यक्ष एवं ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के हिमपाल सिंह देवल ने उनका स्वागत अभिनंदन किया। इस कार्यक्रम में भवानी सिंह, कृष्ण वीर सिंह, हरसुल अग्रवाल सहित कई कांग्रेसी कार्यकर्ता उपस्थित थे।

राज्यसभा सांसद नीरज डांगी के कार्यक्रम को लेकर ग्रामीणों में काफी उत्सुकता देखने को मिली एवं ग्रामीण जन तेज गर्मी होने के बावजूद भी कार्यक्रम स्थल पर डटे रहे।

डांगी के आने के बाद पूरे पंडाल में ग्रामीणों की भीड जमा हो गई जिसके चलते वहां पर बनाया गया पांडाल भी छोटा पड गया।

ज्ञात रहे कि राज्यसभा सांसद नीरज डांगी का लंबे समय के बाद क्षेत्र का दौरा होने के कारण ग्रामीणों में उत्सुकता नजर आ रही थी।

सिरोही जिले में मंडार के पास वरमान में राज्यसभा सांसद डांगी ने सहकारी समिति के गोदाम निर्माण के लिए पूजन किया। फोटो-राष्ट्रदूत

सार-समाचार

अनुपस्थित चिकित्सकों को थमाया नोटिस

बाड़मेर, (निसं)। जिले में आमजन को बेहतर चिकित्सा सेवाये उपलब्ध कराने एवं एनीमिया की दर को कम करने के लिए चलाये जा रहे कार्यक्रम का मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. सी एस गजराज एवं आरसीएचओ डॉ. प्रीत मोहिंदर सिंह द्वारा पीएचसी जसाई, खडीन, गंगाला, मारुडी, बालेरा चिकित्सा संस्थानो का औचक निरिक्षण किया गया। सीएम्एचओ डॉ गजराज ने डेंगू, मलेरिया एवं मौसमी बीमारियों को लेकर नियमित रूप से गतिविधियां आयोजित करने के साथ मुख्यमंत्री निःशुल्क दवा योजना, जांच योजना, मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजनाओ की प्रगति लेते हुए आमजन तक बेहतर सुविधाये उपलब्ध करवाने के निर्देश प्रदान किये गये। सीएम्एचओ ने बताया की ओचक निरिक्षण के दोरान पीएचसी जसाई में चिकित्सा अधिकारी डॉ उदेश राजपुरोहित एवं डेटा एंट्री ओपरेटर संतोष कुमार, पीएचसी खडींन में चिकित्सा अधिकारी डॉ. श्रवण कुमार बिश्नोई, पीएचसी गंगाला में डॉ. सोनू बेरवा बिना किसी सुचना के अनुपस्थित पाये गये, अनुपस्थित रहने पर सम्बन्धित को नोटिस जारी किये गये। पीएचसी मारुडी एवं बालेरा में सभी चिकित्सक समेत सभी कर्मचारी उपस्थित पाये गये। आरसीएचओ डॉ प्रीत मोहिंदर सिंह ने बताया की चिकित्सा संस्थान में आशा एवं एएनएम को पाबन्द किया गया की समुदाय में गर्भवती महिलाओं एवं किशोरी बालिकाओ में अनीमिया की पहचान करना सुनिश्चित करे, पहचान उपरांत उनका इलाज भी करवाया जाये, कार्यक्षेत्र में मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना का अधिक से अधिक प्रचार प्रसार किया जाये एवं आमजन को इसका लाभ पहुचाये, मातृ व शिशु स्वास्थ्य संबंधी योजनाओं व परिवार कल्याण कार्यक्रम का क्षेत्र में प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करे। निरीक्षण के दोरान एडिशनल सीएम्एचओ डॉ हरेन्द्र भाकर एवं एसएमओ डब्लूएचओ डॉ पंकज सुथार उपस्थित रहे। डॉ भाकर ने योग्य दम्पतियों को परिवार कल्याण के स्थाई एवं अस्थाई साधनों का उपयोग करने हेतु प्रेरित करने के निर्देश दिये।

गोशाला में 56 व्यंजनों का भोग परोसा

बाप, (निसं)। कस्बे में सोमवार को माहेश्वरी समाज द्वारा महेश नवमी धूमधाम से मनाई गई। माहेश्वरी समाज द्वारा ऋषि गोपाल गोशाला में गोवंश को 56 व्यंजनों का भोग लगाया गया। माहेश्वरी समाज की महिलाओ ने मंगल गीत गाये तथा आरती की। इसके बाद सभी व्यजंनो को थाली में परोस कर गोवंश को माहेश्वरी समाज बुंधओं ने अपने हाथो से खिलाया। गोशाला सचिव मूलचन्द सारण पालीवाल ने बताया कि बाप एक ट्रक हरा चारा की भी व्यवस्था की गई है। इसके बाद बाप गायत्री शक्ति पीठ में स्थित महामृत्युंजय शिव मंदिर में भगवान महेश का जलाभिषेक कर सुख, समृद्धि की कामना की गईं। महाआरती में समाज बंधु उमड़े। गोशाला संरक्षक श्रीबल्लभ व्यास, शिक्षाविद मनसुख पालीवाल, माहेश्वरी समाज अध्यक्ष अशोक चांडक, व्यापार मण्डल अध्यक्ष तिलोक राठी, गो सेवक मनोज लोहिया, जगदीश शर्मा, अमृत लाल भूतड़ा, जगदीश भूतड़ा, नगरपालिका बाप उपाध्यक्ष गोपाल भट्ठड़, सुशील हिन्दू, बबलू, रमेश सेन, धूड़चन्द कोठारी, श्याम राठी, दामोदर मेहता, किशोर राठी, बुलिदान पालीवाल, मुरलीधर लोहिया, रमेश लोहिया, संतोष कोठारी, भंवर कोठारी, बाबू लाल पालीवाल, संतोष राठी, मंजू चाण्डक, सुरजा भूतड़ा, लक्ष्मी कोठारी, शांति कोठारी, कमला भैया, भंवरी लोहिया, तेजकरण राठी, सत्यनारायण भैया, धापू भैया, जेठमल राठी, मोहन लाल राठी, ओम राठी, राजू भट्ठड़, रेवत प्रजापत, डॉ. अभिजीत माली, लक्ष्मण चांडक, भवानी राठी, ग्राम विकास अधिकारी सुरेश लाखोटिया आदि मौजूद रहे।

नेत्र जांच चिकित्सा शिविर आयोजित

रेवदर, (निसं)। बारिश और अंधड के बाद बेहाल गर्मी में जीवन सारथी सारथी संस्थान की निस्वार्थ टीम ने ग्राम पंचायत रेवदर में निःशुल्क नेत्र जांच चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। आबूरोड के ग्लोबल अस्पताल नेत्र संस्थान के सहयोग से जीवन सारथी संस्थान द्वारा भामाशाह भरत कुमार प्रकाश जी पुरोहित सेलवाडा के आर्थिक सहयोग से शिविर का आयोजन हुआ, शिविर प्रातः 8 बजे से 2 बजे आयोजित किया गया, जिसमें निःशुल्क चिकित्सा परामर्श, दवाई का वितरण, ऑपरेशन के लिये मरिजो का चयन कर आबूरोड ऑपरेशन के लिये ले जाया गया, शिविर प्रभारी संस्थान अध्यक्ष बलवंत मेघवाल ने बताया की शिविर भारी अंधड और तूफान, बारिश के बाद भी शुरू हुआ और सुबह से मरीजो का आना शुरू हो गया, शिविर का उद्घाटन सरपंच अजबाराम चौधरी, खमिाराम पुरोहित वाण,भैरुगढ सरपंच माधाराम देवासी, भामाशाह भरत प्रकाश पुरोहित की उपस्थिति में हुआ, ग्लोबल संस्थान के शिविर प्रभारी मांगीलाल ने बताया की ग्लोबल नेत्र अस्पताल की टीम के डाक्टर इन्दु बिश्नोई, अक्षी, शानू, विजेंद्र बंजारा ने अपनी निःशुल्क सेवाए दी। इस अवसर पर कुल178 मरीज लाभान्वित हुए और 32 लोगों के निःशुल्क ऑपरेशन के लिये आबूरोड ले जाया गया। इस अवसर पर बलवंत मेघवाल, धीरज संत, दशरथ, कुणाल अग्रवाल, राहुल जोशी,विक्रम, मनीष, जितेंद्र, भैराराम, गोपाल, प्रह्लाद ओड, रामसिंह, उपस्थित रहे।

जसवंतगढ़ में कथा जारी

गड़ामालानी, (निसं)। गुड़ामालानी मुख्यालय पर स्थित राणा जसवंत गढ़ में राणा कुलदीप सिंह राठौड के तत्वावधान में राजाराम महाराज के शिष्य संत कृपाराम महाराज के शिष्य संत सियाराम महाराज के द्वारा श्रीमद् भागवत कथा के छठे दिन सोमवार को मुख्यालय सहित आस पास गांवों के भक्तों ने कथा का रसपान लिया। भरत जैन ने बताया कि जसवंतगढ़ में चल रही सात दिवसीय श्रीमद् भागवत कथा के छठे दिन कथा वाचन कर रहे संत सियाराम महाराज ने कहा कि जब जब धरती पर अधर्म की वृद्धि होती है। तब - तब में साकार रूप में प्रकट होकर भक्तो को सुख और दुष्टो का नाश करता हूं। संत ने मधुमंगल का प्रसंग सुनाते हुए कहा की भगवान भक्त की संपति नही देखते भगवान सिर्फ और सिर्फ भक्त का भाव प्रेम देखते हैं।मधूमंगल की झूठी छाछ को कृष्ण ने बडे चाव से अरोगा। गोवर्धन की कथा में छप्पन भोग से भगवान को भक्तो द्वारा भोग लगाया गया। कथा वाचन में भंवर लवकुश सिंह बडागांव, ठाकुर लक्ष्मण सिंह, लोकेंद्र सिंह चितलवाना, भाजपा प्रदेश मंत्री के के विश्नोई सहित आसपास गांव के ग्रामीण उपस्थित रहे।

विश्व पाचन स्वास्थ्य दिवस मनाया

बाप, (निसं)। सौर्य ऊर्जा कंपनी के सहयोग से माई स्टेम लैब द्वारा मोबाइल साइंस लैब कार्यक्रम के तहत समर कैंप के दौरान राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कानासर, अखाधना, कानासर ढाणी, रावरा व सांवरा गांव में सोमवार को पाचन स्वास्थ्य दिवस मनाया गया। जिसमें शरीर में पाचन तंत्र की महत्वता व उचित खान पान पर जानकारी दी गई। इसके साथ ही पाचन संबंधी बीमारियों की रोकथाम व बचाव के उपाय, स्वस्थ रहने के तरीके आदि बताया गया। स्वास्थ्य से संबंधित प्रश्नोत्तरी व चित्रकारी प्रतियोगिता भी रखी गई। जिसमें विजेता विद्यार्थियों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित गया। मोबाइल साइंस लैब परियोजना के प्रोजेक्ट कॉर्डिनेटर पुखराज माली ने कहा कि स्वस्थ रहने के लिए संतुलित भोजन के साथ साथ अपने पाचन तंत्र का उचित ध्यान रखना आवश्यक है। सभी को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहना होगा। इस दौरान स्टेम ट्रेनर मुख्तियार अली, अचल सिंह, राजूसिंह, मनदीप, सुनील व सुमेर गोस्वामी आदि भी मौजूद रहे।

केसाराम को दिव्यांगता प्रमाण पत्र

जालोर, (कासं)। प्रशासन गाँवों के संग अभियान के तहत बागोड़ा पंचायत समिति की नरसाणा में आयोजित शिविर में दिव्यांग केसाराम को दिव्यांगता प्रमाण पत्र जारी कर विशेष योग्यजन पेंशन व व्हील चेयर के लिए आवेदन करवाया गया। शिविर में बागोड़ा उपखण्ड अधिकारी गरिमा शर्मा के समक्ष दोनों पैरों से दिव्यांग केसाराम व उसके परिवारजनों ने अपनी परिवेदना बताई तो उन्होंने संवेदनशीलता दिखाते हुए संबंधित कार्मिकों को निर्देश कर मौके पर दिव्यांगता प्रमाण पत्र जारी कर पेंशन व व्हीलचेयर के लिए आवेदन करवाया। उपखण्ड अधिकारी गरिमा शर्मा ने दिव्यांग केसाराम को दिव्यांगता प्रमाण पत्र सौंप कर मौके पर ही विभिन्न योजनाओं से लाभांवित किया। दिव्यांग केसाराम ने राज्य के मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत का आभार जताते हुए राज्य सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं की प्रशंसा की।

परिवार कल्याणं सेवा का स्थान परिवर्तन

जोधपुर, (कासं)। उम्मेद अस्पताल कि पूर्व में मुख्य भवन में संचालित हो रही परिवार कल्याण सेवाऐं एवं प्रसव पश्चात् सेवाओं को उम्मेद अस्पताल के न्यू ओपीडी ब्लॉक में रूम नम्बर 8 में शिशु आउटडोर एवं प्रसव पूर्व जाँच केन्द्र के पास स्थानान्तरित किया गया है। उम्मेद अस्पताल के अधीक्षक डॉ. अफजल हकीम ने बताया कि मंगलवार से परिवार कल्याण सेवाऐं यहाँ उपलब्ध रहेगी।

पुरुष, महिला और जूनियर खिलाड़ियों की मिश्रित टीम होना काफी दिलचस्प होगा। यह लीग दुनिया भर के आयोजकों के लिये प्रेरणा भी होगी। - कोनेरू हम्पी

पूर्व विश्व रैपिड शतरंज चैम्पियन, ग्लोबल चेस लीग को लेकर।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी — महेन्द्र सिंह धोनी

चेन्नई सुपर किंग्स एमएस धोनी आईपीएल फाइनल ने मैदान पर उतरते ही एक बड़ा इतिहास रच डाला।यह धोनी का बतौर खिलाड़ी 250वां मैच है। वह आईपीएल में 250 मैच खेलने वाले पहले प्लेयर बन गए हैं। इसके अलावा, धोनी भारतीय लीग में 11 फाइनल खेलने वाले पहले खिलाड़ी बन चुके हैं। धोनी अब तक आईपीएल के सभी सीजन में खेले हैं। वह 14 सीजन सीएसके जबकि दो सीजन राइजिंग पुणे सुपरजायंट्स के लिए खेले। सीएसके को जब साल 2016 और 2017 में बैन झेलना पड़ा था, तब धोनी पुणे का हिस्सा बने।

क्या आप जानते हैं ?... विश्व कप फुटबॉल इतिहास में पहला मैच फ्रांस और मैक्सिको के बीच खेला गया, जिसमें फ्रांस 4-1 से जीता।

नीरज ने एफबीके खेलों से नाम वापस लिया

नयी दिल्ली, 29 मई। टोक्यो ओलंपिक चैंपियन नीरज चोपड़ा ने मांसपेशी में खिंचाव के कारण नीदरलैंड के हेंगेलो में होने वाले एफबीके खेलों से नाम वापस ले लिया है। नीरज ने सोमवार को इसकी पुष्टि करते हुए ट्वीट किया, ''चोट हमारे सफर का हिस्सा होती हैं, लेकिन यह कभी आसान नहीं होता। हाल ही में अभ्यास करते हुए मेरी एक मांसपेशी में खिंचाव आ गया। चिकित्सीय जांच के बाद मैंने और मेरी टीम ने फैसला लिया है कि हम इस चोट को बढ़ाने वाला कोई जोखिम मोल नहीं लेंगे। दुर्भाग्य से, इसके कारण मुझे हेंगेलो में एफबीके खेलों से नाम वापस लेना होगा।'' एफबीके खेल एक वार्षिक ट्रैक एवं फील्ड प्रतियोगिता है जो चार जून को आयोजित होगी। नीरज ने कहा, ''आयोजकों और टूर्नामेंट की सफलता की कामना करता हूं। मैं ठीक होने की राह पर हूं और जून में ही ट्रैक पर लौटने की कोशिश करूंगा। आप सब के समर्थन के लिये धन्यवाद।'' नीरज ने हाल ही में पुरुष भाला फेंक एथलीटों की रैंकिंग में पहला स्थान हासिल किया था। ट्रैक और फील्ड स्पर्धा में भारत के लिये पहला ओलंपिक स्वर्ण जीतने वाले नीरज विश्व एथलेटिक्स की रैंकिंग में ग्रेनाडा के मौजूदा विश्व चैंपियन एंडरसन पीटर्स से 22 अंकों से आगे हैं। चोपड़ा ने छह मई को दोहा में 88.67 मीटर के विश्व-अग्रणी प्रयास के साथ डायमंड लीग का पहला चरण जीतकर अपने 2023 सीज़न की शुरुआत की थी। उन्होंने हालांकि 13 जून को फिनलैंड के तुर्कू में होने वाले पावो नूरमी खेलों को लेकर कोई पुष्ट नहीं की है।

स्टीफेंस समेत चार अमेरिकी महिला खिलाड़ी फ्रेंच ओपन के दूसरे दौर में

पेरिस, 29 मई। अमेरिका की स्लोएने स्टीफेंस ने दो बार की ग्रैंडस्लैम चैम्पियन कैरोलिना प्लिसकोवा को 6.0, 6.4 से हराकर फ्रेंच ओपन के दूसरे दौर में प्रवेश कर लिया। स्टीफेंस ने 2017 में अमेरिकी ओपन जीता था और फ्रेंच ओपन 2018 में उपविजेता रही। अमेरिका की मेडिसन कीस ने केइया कानेपी को 6.1, 3.6, 6.1 से हराकर अगले दौर में जगह बनाई। अब उनका सामना अमेरिकी क्वालीफायर काइला डे से होगा जिसने फ्रांस की वाइल्ड कार्डधारी क्रिस्टिना म्लादेनोविच को 7.5, 6.1 से मात दी। क्रोएशिया में जन्मी अमेरिका की बर्नार्डा पेरा ने दुनिया की पूर्व दूसरे नंबर की खिलाड़ी एनेट कोंटावेट को 7.6, 6.2 से हराया। दो साल पहले उपविजेता रही अनास्तासिया पी ने चेक गणराज्य की लिंडा एफ को 6.2, 6.2 से मात दी। वहीं डोन्ना वेकिच ने क्वालीफायर डायना यास्त्रेमस्का को 6.2, 7.5 से हराया।

हम अपनी क्षमता का 70% ही खेल पाये है : जूनियर भारतीय हॉकी कोच कुमार

सालालाह (ओमान), 29 मई। भारतीय जूनियर हॉकी टीम के मुख्य कोच सी आर कुमार का मानना है कि उनकी टीम ने एशिया कप सेमीफाइनल में पहुंचने के बावजूद अभी तक अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन नहीं किया है जो अब उसे करना होगा। भारत ने चीनी ताइपै को 1.0, जापान को 3.1, थाईलैंड को 17.0 से हराने के अलावा पाकिस्तान से 1.1 से ड्रॉ खेला। कुमार ने वर्चुअल प्रेस कांफ्रेंस में कहा ,'' सेमीफाइनल और फाइनल से पहले कुछ कठिन मुकाबले खेलना हमेशा अच्छा होता है। हमने इसका मजा लिया लेकिन अपनी क्षमता का 70 प्रतिशत ही खेले हैं। बाकी 30 प्रतिशत कमी सेमीफाइनल और फाइनल में पूरी करनी होगी।'' उन्होंने कहा ,'' मुझे इस टीम पर भरोसा है। एशिया कप विश्व कप के लिये क्वालीफायर है और अपनी क्षमता दिखाने के लिये यह अकेला क्वालीफायर है। हम बिना किसी बाधा के विश्व कप में जाना चाहते हैं।' जूनियर विश्व कप पांच से 16 दिसंबर तक कुआलालंपुर में खेला जायेगा। कुमार ने हालांकि यहां एस्ट्रो टर्फ पर नाराजगी जताई। उन्होंने कहा, टर्फ का इस्तेमाल नहीं हुआ है और इसकी ऊपरी सतह समतल नहीं है और इससे हमें मदद नहीं मिल रही। हर टीम को परेशानी हुई है लिहाजा हमें ही अपना खेल बेहतर करना होगा।''

गोल हंटर्स ने आर्डोर को रौंदा, खिताब पक्का

नयी दिल्ली, 29 मई। गोल हंटर्स ने फुटबॉल दिल्ली सी-डिवीजन लीग में चैंपियनशिप की दावेदार मानी जा रही आर्डोर एफसी को सोमवार को 6-1 से पीटकर बी-डिवीजन में प्रवेश की पात्रता हासिल कर ली। नेहरू स्टेडियम पर खेले गये एकतरफा मैच में विजेता टीम के लिये नितिन ने दो और गौरव, यमन, अजय पाल और कुशाग्र ने एक-एक गोल जमाया। पराजित टीम का गोल चंदन ने किया। एक अन्य मुकाबले में एलायंस ने विक्रम (दो) और शिवम के गोलों से 90 मिनट्स को 3-1 से परास्त किया। पराजित टीम का गोल मोहित भंडारी ने जमाया। इसी बीच, फुटबॉल दिल्ली सांस्थानिक लीग में दिल्ली सरकार ने मुकेश चन्याल के गोल से उत्तर रेलवे को एक गोल से पराजित किया। दूसरे मैच में डीटीसी ने बैंक ऑफ इंडिया क साथ 2-2 से ड्रॉ खेलकर अंक बांट लिये। बैंक टीम के गोल आकाश और सागर ने जबकि डीटीसी के लिये विनोद और योगिंदर ने गोल किए।

संस्थागत लीग से विभागों को फुटबॉल में निवेश करने के लिए प्रोत्साहन मिलेगा : विजयन

नयी दिल्ली, 29 मई। भारत के पूर्व दिग्गज फुटबॉल खिलाड़ी आईएम विजयन का मानना है कि संस्थागत लीग शुरू करने से सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (पीएसयू), राज्यों के विभिन्न विभागों और पुलिस इकाइयों को देश भर में खेल में निवेश करने के लिए प्रोत्साहन मिलेगा। अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ (एआईएफएफ) ने पीएसयू, राज्य विभागों और पुलिस इकाइयों से खेलने वाले फुटबॉलारों के लिए प्रतिस्पर्धा के और मौके बनाने के लिए संस्थागत लीग शुरू करने की घोषणा की है जिसकी देश के सर्वश्रेष्ठ स्ट्राइकरों में से एक रहे विजयन ने सराहना की है। विजयन ने कहा, ''जब मैं किशोर था तो केरल पुलिस ने मुझे अपनी टीम में शामिल किया था।

बारिश ने फिर डाला खलल, चैन्नई को मिला 171 रन का लक्ष्य

आईपीएल फाइनल

अहमदाबाद, 29 मई। वर्षा बधित आईपीएल फाइनल में चैन्नई सुपरकिंग्स को जीत के लिए 171 रन का लक्ष्य मिला है। बारिश के कारण रिसर्व दिन खेले जा रहे फाइनल में भी बारिश ने अपना व्यवधान बरकरार रखा है। टॉस हारने के बाद पहले खेलते हुए गुजरात टाइटंस ने 4 विकेट पर 314 रन बनाए। पहली पारी के ब्रेक के बीच बारिश शुरू हो गई और मैदानकर्मी तेजी से कवर लेकर मैदान के बीच भागे। बारिश खुलने पर चेन्नई की पारी की तीन गेंद ही हुई थी कि दोबारा पानी बरसने लगा। रात्रि साढ़े ग्यारह बजे अंपायरों ने पिच का निरीक्षण कर मैच को 15 ओवर का किया और चेन्नई को जीत के लिए 171 रन का लक्ष्य मिला।

इससे पूर्व युवा वामहस्त बल्लेबाज साई सुदर्शन (47 गेंद, 96 रन) और ऋद्धिमान साहा (39 गेंद, 54 रन) के अर्द्धशतकों की बदौलत गुजरात टाइटन्स ने सोमवार को इंडियन प्रीमियर लीग के फाइनल में चेन्नई सुपर किंग्स के सामने 215 रन का विशाल लक्ष्य रखा।

सुदर्शन आईपीएल फाइनल में शतक जड़ने वाले बल्लेबाजों की सूची में अपना नाम नहीं लिखा सके, लेकिन उन्होंने 47 गेंद पर आठ चौकों और छह छक्कों की मदद से 96 रन बनाकर गुजरात को फाइनल के सबसे बड़े स्कोर तक पहुंचा दिया। चेन्नई ने टॉस जीतकर गेंदबाजी चुनी और शुरुआती दो ओवरों में गुजरात के सलामी बल्लेबाजों को परेशान भी किया। दूसरे ओवर में हालांकि दीपक चाहर ने तुषार देशपांडे की गेंद पर शुभमन गिल का कैच छोड़ दिया। तीन रन के मामूली स्कोर पर जीवनदान मिलने के बाद गिल ने देशपांडे के खिलाफ हाथ खोलते हुए लगातार तीन चौके जड़े और साहा के साथ सात ओवर में 67 रन की साझेदारी कर डाली।

कप्तान महेंद्र सिंह धोनी ने अंततः रवींद्र जडेजा की गेंद पर शानदार स्टंपिंग करते हुए गिल को पवेलियन लौटाया, लेकिन इससे पहले वह 20 गेंद पर सात चौकों की मदद से 39 रन बना चुके थे।

पहला विकेट गिरने के बाद भी गुजरात की पारी नहीं रुकी और साहा ने तेजी से रन बटोरने की जिम्मेदारी अपने कंधों पर ले ली। साहा ने 36 गेंदों पर अर्द्धशतक पूरा करते हुए सुदर्शन के साथ 64 रन की अर्द्धशतकीय साझेदारी की। साहा ने 39 गेंदों की पारी में पांच चौके और एक छक्का लगाकर 54 रन बनाये जबकि चाहर ने उन्हें धोनी के हाथों कैच आउट करवाया। अनुभवी बल्लेबाज साहा के 14वें ओवर में पवेलियन लौटने के बाद चेन्नई को उम्मीद होगी कि वह गुजरात को 200 रन के नीचे रोक सकेगी, लेकिन सुदर्शन ने ऐसा नहीं होने दिया। शुरुआती 12 गेंदों पर सिर्फ 10 रन बनाने वाले सुदर्शन ने साहा के जाते ही ताबड़तोड़ बल्लेबाजी शुरी कर दी।

एशिया कप सेमीफाइनल में भारत, विश्व कप के लिये भी क्वालीफाई किया

सलालाह, (ओमान), 29 मई। गत चैंपियन भारत ने जूनियर पुरुष एशिया कप 2023 के अपने आखिरी पूल-ए मैच में थाईलैंड को 17-0 से रौंदकर सेमीफाइनल में जगह बना ली है। इस विशाल जीत के साथ भारत ने दिसंबर में होने वाले एफआईएच पुरुष हॉकी विश्व कप के लिये भी क्वालीफाई कर लिया है। नियमों के अनुसार, जूनियर एशिया कप में स्वर्ण, रजत और कांस्य पदक जीतने वाली टीमों को विश्व कप के लिये क्वालीफाई करना था, जबकि मलेशिया ने विश्व कप का मेज़बान होने के नाते टूर्नामेंट में जगह बना ली थी। मलेशिया के रविवार को एशिया कप सेमीफाइनल में पहुंचने के बाद चारों सेमीफाइनलिस्ट टीमों ने विश्व कप के लिये क्वालीफाई कर लिया।

अंगद बीर सिंह (13वां मिनट) ने रविवार रात खेले गये मुकाबले में भारत का खाता खोला, जबकि दूसरे क्वार्टर में योगेंबर रावत (17वां मिनट), उत्तम सिंह (24वां मिनट) और अमनदीप लाकड़ा (26वां, 29वां मिनट) ने गोल जमाकर भारत की बढ़त हाफ टाइम से पहले 5-0 कर दी। तीसरे क्वार्टर में उत्तम (31वां मिनट) और अंगद (33वां मिनट) के साथ-साथ अरैजीत सिंह हुंदल (36वां मिनट) और विष्णुकांत सिंह (38वां मिनट) ने भी एक-एक गोल दागकर भारत के स्कोर में योगदान दिया। तीसरा क्वार्टर खत्म होने से ठीक पहले बॉबी सिंह धामी (45वां मिनट) ने पेनल्टी कॉर्नर को गोल में तब्दील करते हुए भारत का स्कोर 10-0 पर पहुंचा दिया।

शारदा नंद तिवारी (46वां मिनट), अमनदीप (47वां मिनट) और अंगद (47वां मिनट) ने शुरुआती दो मिनटों में ही तीन गोल करके चौथे क्वार्टर को भारत के नाम कर दिया। थाईलैंड की वापसी की संभावना बेहद कम लग रही थी, लेकिन रोहित (49वां) के गोल ने इसे और भी मुश्किल बना दिया। सुनीत लाकड़ा (54वां), अंगद (55वां), और राजिंदर सिंह (56वां मिनट) ने मैच खत्म होने से पहले एक-एक गोल किया और भारत ने आक्रामक हॉकी के उत्कृष्ट प्रदर्शन के साथ 17-0 की जीत दर्ज की।

विराट कोहली ने टीम इंडिया के साथ किया अभ्यास, रोहित शर्मा आज अभ्यास करेंगे

ऑरेनडेल (ससेक्स), 29 मई। भारत के स्टार बल्लेबाज विराट कोहली सोमवार को ऑरेनडेल कासल क्रिकेट क्लब में बाएं हाथ के तेज गेंदबाज जयदेव उनादकट के साथ राष्ट्रीय क्रिकेट टीम के अभ्यास सत्र से जुड़ गए। ऐसा लगता है कि उनादकट बाएं कंधे की चोट से उबर गए हैं।

भारत और ऑस्ट्रेलिया सात से 11 जून तक द ओवल में विश्व टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल खेलेंगे। भारतीय क्रिकेट बोर्ड ने सोमवार को अपने आधिकारिक ट्विटर हैंडल पर भारतीय टीम के सदस्यों की तस्वीर साझा की जिसमें कोहली के अलावा तेज गेंदबा मोहम्मद सिराज और उमेश यादव भी शामिल थे। बीसीसीआई ने ट्वीट में कहा, ''टीम इंडिया के सदस्यों ने ऑरेनडेल कासल क्रिकेट क्लब में डब्ल्यूटीसी 2023 की अपनी तैयारियां शुरू की। कोहली, उमेश और सिराज को नई ट्रेनिंग किट में जॉगिंग करते हुए देखा जा सकता था जबकि ऑफ स्पिनर रविचंद्रन अश्विन ने नेट पर गेंदबाजी की।

उनादकट ने मुख्य कोच राहुल द्रविड़ और गेंदबाजी कोच पारस महाम्ब्रे के साथ भी बात की। फाइनल की तैयारी के लिए इंग्लिश काउंटी में ससेक्स की ओर से खेल रहे चेतेश्वर पुजारा भी ट्रेनिंग के लिए पहुंचे। उमेश और शारदुल ठाकुर डब्ल्यूटीसी फाइनल के लिए यहां पहुंचने वाले भारतीय खिलाड़ियों के शुरुआती समूह में शामिल थे।

ऑस्ट्रेलिया ने हेजलवुड को डब्ल्यूटीसी फाइनल टीम में शामिल किया

दुबई, 29 मई। तेज़ गेंदबाज़ जॉश हेज़लवुड ने चोट के बावजूद ऑस्ट्रेलिया की विश्व टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल स्क्वाड में जगह बना ली है। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद ने रविवार को एक विज्ञिप्त में बताया कि ऑस्ट्रेलिया ने सात जून से होने वाले खिताबी मुकाबले के लिये हेज़लवुड को 15-सदस्यीय स्क्वाड में शामिल किया है।

हेज़लवुड इस महीने की शुरुआत में (मामूली दर्द) के कारण इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) छोड़कर स्वदेश लौट आये थे, लेकिन क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया ने लंदन के द ओवल मैदान पर होने वाले फाइनल से पहले उन्हें फिट घोषित कर दिया था। हेज़लवुड कप्तान पैट कमिंस, स्कॉट बोलैंड और मिचेल स्टार्क जैसे खिलाड़ियों से सजे गेंदबाजी आक्रमण में शामिल होंगे।

उल्लेखनीय है कि रोहित शर्मा की कप्तानी में 15-सदस्यीय टीम की घोषणा कर चुके बीसीसीआई ने युवा सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल को अतिरिक्त खिलाड़ी के रूप में लंदन भेजा है। जायसवाल को रुतुराज गायकवाड़ की जगह चुना गया है, जो तीन जून को शादी होने के कारण लंदन नहीं जा सकेंगे।

ऑस्ट्रेलिया डब्ल्यूटीसी स्क्वाड : पैट कमिंस (कप्तान), स्कॉट बोलैंड, एलेक्स कैरी, कैमरन ग्रीन, मार्कस हैरिस, जॉश हेजलवुड, ट्रैविस हेड, जॉश इंग्लिस, उस्मान ख्वाजा, मार्नस लाबुशेन, नेथन लायन, टॉड मर्फ़, स्टीव स्मिथ, मिचेल स्टार्क, डेविड वॉर्नर

भारत डब्ल्यूटीसी स्क्वाड : रोहित शर्मा (कप्तान), शुभमन गिल, चेतेश्वर पुजारा, विराट कोहली, अजिंक्य रहाणे, केएस भरत, रविचंद्रन अश्विन, रवींद्र जडेजा, अक्षर पटेल, शार्दुल ठाकुर, मोहम्मद शमी, मोहम्मद सिराज, उमेश यादव, जयदेव उनादकट, ईशान किशन।

डब्ल्यूटीसी फाइनल में उनादकट को देखना चाहते हैं दिनेश कार्तिक

दुबई, 29 मई। भारतीय विकेटकीपर दिनेश कार्तिक का कहना है कि भारत को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सात जून से होने वाले विश्व टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल के लिये जयदेव उनादकट को एकादश में जगह देनी चाहिये। लगातार दूसरी बार डब्ल्यूटीसी फाइनल में उतरते हुए भारत को जसप्रीत बुमराह की कमी खलेगी, जिन्होंने हाल ही में अपनी कमर की सर्जरी करवाई है। लंदन के द ओवल की पिच पर मोहम्मद सिराज और मोहम्मद शमी की जोड़ी भारतीय गेंदबाजी की अगुवाई करेगी। कार्तिक का कहना है कि सिराज और शमी के साथ भारत को उनादकट को तीसरे तेज गेंदबाज के रूप में जबकि शार्दुल ठाकुर को तेज गेंदबाजी हरफनमौला के रूप में मौका देना चाहिये। कार्तिक ने आईसीसी के रिव्यू पॉडकास्ट पर कहा, ''जसप्रीत बुमराह की कमी किसी भी टीम को किसी भी प्रारूप में खलेगी, लेकिन मोहम्मद सिराज और मोहम्मद शमी के रूप में कुछ प्रमुख गेंदबाज शानदार फॉर्म में हैं, जिन्होंने पूरे आईपीएल में वास्तव में अच्छी गेंदबाजी की है।'' कार्तिक ने कहा, ''उनके पास शार्दुल ठाकुर भी है, जिनके खेलने के आसार बहुत ज्यादा हैं, जबकि चौथे तेज गेंदबाज के लिये उन्हें उमेश यादव और जयदेव उनादकट में से किसी एक को चुनना होगा। आप कह सकते हैं कि वे वामहस्त गेंदबाज (उनादकट) की ओर जा सकते हैं क्योंकि वे गेंदबाजी आक्रमण में विविधता चाहेंगे।'' भारत ने हाल ही में घरेलू परिस्थितियों में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ समाप्त हुई बॉर्डर-गावस्कर टेस्ट सीरीज़ के दौरान अपनी एकादश में तीन स्पिनरों का सफलतापूर्वक उपयोग किया था। रविचंद्रन अश्विन (25 विकेट), स्टार ऑलराउंडर रवींद्र जडेजा (22) और उभरते हुए बाएं हाथ के एक्सर पटेल (तीन) ने आपस में 50 विकेट चटकाकर भारत को लगातार चौथी बार यह सीरीज जिताई थी। कार्तिक हालांकि इंग्लैंड की परिस्थितियों में सिर्फ एक ही स्पिनर को भारतीय टीम में देखना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि 2021 डब्ल्यूटीसी फाइनल में अश्विन और जडेजा को एक साथ खिलाना भारत की भूल थी जो टीम को दोबारा नहीं दोहरानी चाहिये। कार्तिक ने कहा, ''दो स्पिनरों को खिलाना बहुत साहसी फैसला होगा। हो सकता है कि वह सिर्फ एक स्पिनर खिलाएं और एक अतिरिक्त तेज गेंदबाजी हरफनमौला को खिलाने की कोशिश करें। क्या वे दो स्पिनरों के साथ मैदान पर उतरेंगे? इस सवाल का जवाब मैच के करीब आने पर, परिस्थितियों को देखकर ही दिया जा सकता है।'' उन्होंने कहा, ''मुझे याद है, उन्हें पिछली बार महसूस हुआ था कि उन्होंने साउथैम्पटन टेस्ट (विश्व टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल 2021) में दो स्पिनर खिलाकर गलती की है। उस मैदान पर स्पिनरों को मदद नहीं मिली और दोनों गेंदबाजों का ठीक तरह प्रयोग भी नहीं हो सका।'' कार्तिक ने कहा, ''यह देखना बहुत दिलचस्प होगा कि क्या भारत उस रास्ते पर जाता है। पिछली बार जब वे इंग्लैंड में खेले थे, तो वे तेज गेंदबाजी ऑलराउंडर और सिर्फ एक स्पिनर के साथ गये थे। इसलिए वे बहुत कुछ कर सकते थे। मेरा मानना है कि उन्हें उसी गेंदबाजी आक्रमण के साथ जाना चाहिये।''

हैंडबॉल में गतिरोध खत्म, दिग्विजय चौटाला एचएआई के नए अध्यक्ष चुने गए

तेजराज सिंह कोषाध्यक्ष चुने गये

नयी दिल्ली, 29 मई। भारतीय ओलंपिक संघ के हस्तक्षेप के बाद दिग्विजय चौटाला को भारतीय हैंडबॉल संघ का अध्यक्ष और जगन मोहन राव को महासचिव चुना गया जिससे खेल के संचालन को लेकर लंबे समय से चला आ रहा गतिरोध खत्म हो गया। एचएआई ने इस मुद्दे को सुलझाने में भूमिका के लिए आईओए को धन्यवाद दिया और भारत में खेलों की शीर्ष संस्था से मान्यता का आग्रह किया। पिछले कुछ वर्षों से राव और चौटाला दोनों की अगुआई वाली संस्थाएं हैंडबॉल का वैध राष्ट्रीय महासंघ होने का दावा कर रहीं थी।

कौन की संस्था खेल का संचालन करेगी इस भ्रम के कारण पिछले साल गुजरात में हुए राष्ट्रीय खेलों से हैंडबॉल को हटा दिया गया था। आईओए ने प्रेस विज्ञिप्त में कहा, ''भारतीय ओलंपिक संघ आज भारतीय हैंडबॉल संघ में महीनों से चले आ रहे गतिरोध का हल निकालने में बड़ी सफलता की घोषणा करता है। खेल और खिलाड़ियों की बेहतरी के लिए दोनों गुट अब मिलकर काम करेंगे।'' आपसी सहमति से निकाला गया यह हल काफी महत्वपूर्ण है क्योंकि भारत आगामी हांगझोउ एशियाई खेलों की तैयारी कर रहा है।

आईओए अध्यक्ष पीटी उषा को लिखे पत्र में एचएआई की कार्यकारी समिति ने सोमवार को चौटाला को सर्वसम्मति से अध्यक्ष, राव को महासचिव और तेजराज सिंह को कोषाध्यक्ष चुने जाने की घोषणा की। उषा ने मामले का हल निकलने पर संतोष जाहिर करते हुए कहा, ''एचएआई ने सभी खेल महासंघों के लिए उदाहरण पेश किया है कि बातचीत से सभी मुद्दों का हल निकाला जा सकता है।

मुझे खुशी है कि आईओए खेल और इसके खिलाड़ियों के प्रति समान लक्ष्यों के प्रति काम करने के लिए दोनों पक्षों को एक साथ लाने में सफल रहा।'' चौटाला और राव दोनों ने भारत में हैंडबॉल की बेहतरी के लिए एकजुट होकर काम करने की बात कही। चौटाला ने कहा ''संचालन के मुद्दे का हल निकालने में मार्गदर्शन के लिए मैं आईओए को धन्यवाद देता हूं। अब हम आगे बढ़ेंगे और देश में खेल के लिए एक साथ काम करेंगे।'' राव ने कहा, ''भारत में हैंडबॉल की सेवा और हमारे खिलाड़ियों के विकास के लिए मैं अपना सर्वश्रेष्ठ करूंगा।''

पुलिस हिरासत से रिहा हुए पहलवान जल्द करेंगे अगले कदम पर विचार

नयी दिल्ली, 29 मई। पुलिस हिरासत से कल देर रात रिहा हुए पहलवान अब भी अपने अगले कदम पर विचार कर रहे हैं और उन्हें खेल जगत से समर्थन मिलना जारी है। राजनीतिक और खेल हस्तियों ने शीर्ष पहलवानों के खिलाफ रविवार को हुई पुलिस कार्रवाई की निंदा की है। विनेश फोगाट, बजरंग पूनिया, संगीता फोगाट, साक्षी मलिक और कई अन्य पहलवानों को दिल्ली पुलिस ने रविवार को उस समय हिरासत में ले लिया जब वे महिला 'महापंचायत' के लिए नए संसद भवन की ओर बढ़ने का प्रयास कर रहे थे। जंतर मंतर से शीर्ष पहलवानों के खिलाफ पुलिस कार्रवाई के कई वीडियो सामने आए। पहलवान भारतीय कुश्ती महासंघ प्रमुख बृजभूषण शरण सिंह की गिरफ्तारी की मांग कर रहे हैं। विरोध कर रहे पहलवानों में से एक ने कहा, ''हम आपको जल्द ही बतायेंगे कि हमारा अगला कदम क्या होगा। कल जो हुआ हम अब भी उससे उबरने की कोशिश कर रहे हैं। मुझे रात 11 बजे रिहा किया गया और बजरंग को आधी रात के आसपास छोड़ा गया। हम सब अभी तक नहीं मिले हैं। हम जल्द ही इस पर चर्चा करेंगे। ''

सभी खेल संगठनों में सुरक्षा उपाय लागू होने की जरुरत : अभिनव बिंद्रा

नयी दिल्ली, 29 मई। अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आईओसी) के एथलीट आयोग के सदस्य अभिनव बिंद्रा ने प्रदर्शनकारी पहलवानों की भयावह तस्वीरों पर चिंता व्यक्त करते हुए सोमवार को सभी खेल संगठनों में स्वतंत्र सुरक्षा उपाय लागू करने की मांग की।

बीजिंग ओलंपिक गोल्ड मेडलिस्ट निशानेबाज बिंद्रा ने ट्वीट किया, कल रात सो नहीं सका। अपने साथी भारतीय पहलवानों के प्रदर्शन की भयावह तस्वीरों ने (मुझे) विचलित रखा। समय आ गया है कि हम सभी खेल संगठनों में स्वतंत्र सुरक्षा उपाय लागू करें।

उल्लेखनीय है कि बजरंग पूनिया, साक्षी मलिक और विनेश फोगाट सहित देश के कई नामचीन पहलवान भारतीय कुश्ती महासंघ (डब्ल्यूएफआई) के पूर्व अध्यक्ष बृजभूषण शरण सिंह की गिरफ्तारी की मांग कर रहे हैं।

करीब एक महीने से जंतर-मंतर पर प्रदर्शन पर बैठे पहलवानों ने रविवार को नवनिर्मित संसद भवन के उद्घाटन समारोह के दौरान संसद तक मार्च करने और महिला महापंचायत आयोजित करने का फैसला लिया था। पहलवान हालांकि जंतर-मंतर रोड से आगे नहीं बढ़ सके और पुलिस ने सभी प्रदर्शनकारियों को हिरासत में लेकर प्रदर्शन स्थल से पहलवानों के तंबू उखाड़ दिये। बिंद्रा ने कहा, हमें सुनिश्चित करना होगा कि अगर ऐसी स्थिति आती है तो इसका निपटान बेहद संवेदनशीलता और सम्मान के साथ किया जाये। हर एथलीट एक सुरक्षित और सशक्त करने वाले माहौल का हकदार है।

बृजभूषण पर एक नाबालिग सहित सात महिला पहलवानों के यौन शोषण के आरोप हैं। दिल्ली पुलिस सभी पीड़ितों के बयान लेकर बृजभूषण के खिलाफ दो एफआईआर दर्ज कर चुकी है, जिनमें से एक पॉक्सो (यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण) से संबंधित है। कैसरगंज लोकसभा सीट से भारतीय जनता पार्टी के सांसद बृजभूषण शरण सिंह हालांकि अभी तक गिरफ्तार नहीं हुए हैं। बिंद्रा से पहले टोक्यो ओलंपिक गोल्ड मेडलिस्ट नीरज चोपड़ा, भारतीय फुटबॉल टीम के कप्तान सुनील छेत्री और बर्मिंघम राष्ट्रमंडल खेलों के रजत पदक विजेता मुरली श्रीशंकर ने भी पहलवानों की दुर्गति पर चिंता व्यक्त की थी।

नीरज ने रविवार को पहलवानों के हिरासत में लिये जाने के एक वीडियो पर टिप्पणी की, ''यह देखकर बहुत दुख हो रहा है। इससे निपटने का बेहतर तरीका हो सकता है।'' श्रीशंकर ने पहलवानों के साथ दिल्ली पुलिस के बर्ताव को बर्बर करार देते हुए ट्वीट किया, ''बेहद बर्बर! हमारे चैंपियन इस बर्ताव के लायक नहीं थे। ओलंपक में पहुंचने का सपना देखने वाले एक एथलीट के तौर पर यह तस्वीर (मेरे मस्तिष्क पर) बहुत गहरा घाव छोड़ेगी।

छेत्री ने रविवार देर रात ट्वीट किया, ''हमारे पहलवानों को बिना सोचे समझे घसीटे जाने की क्या जरूरत है? यह किसी के साथ व्यवहार करने का तरीका नहीं है। मैं वास्तव में उम्मीद करता हूं कि इस पूरी स्थिति का आकलन उसी तरह किया जाए जैसा होना चाहिए।''

टेस्ट क्रिकेट में वेतन असमानता पर पोंटिंग के विचारों पर चर्चा नहीं हुई : आईसीसी

नयी दिल्ली, 29 मई। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान रिकी पोंटिंग के इन दावों से खुद को अलग कर दिया जिसमें उन्होंने कहा था कि टेस्ट क्रिकेट में भुगतान की असमानता समाप्त करने के लिए खेल की सर्वोच्च संस्था में बातचीत चल रही है।

पोंटिंग ने इस महीने के शुरू में विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप फाइनल से जुड़े कार्यक्रम में कहा था कि आईसीसी में यह सुनिश्चित करने के लिए उच्च स्तर पर चर्चा चल रही है कि छोटे देशों के क्रिकेटरों को पांच दिवसीय प्रारूप खेलने के लिए अच्छा भुगतान किया जाए।

आईसीसी के क्रिकेट महाप्रबंधक वसीम खान ने हालांकि कहा कि क्रिकेट समिति की एक बैठक में यह मामला उठाया गया था लेकिन इस पर चर्चा नहीं हुई। वसीम ने मीडिया कर्मियों से कहा,'' मुझे लगता है कि शायद इसे गलत तरह से पेश किया गया। आईसीसी क्रिकेट समिति में शुरू में यह मसला उठाया गया था। यह चर्चा का विषय था लेकिन निश्चित तौर पर इसे आगे नहीं बढ़ाया गया।''

उन्होंने कहा,''रिकी के विचार क्रिकेट समिति के कई अन्य विषयों की तरह चर्चा का विषय था लेकिन इस संबंध में सदस्यों के बीच किसी तरह की चर्चा नहीं हुई।'' क्रिकेट समिति के प्रमुख भारत के पूर्व कप्तान सौरव गांगुली हैं। टी20 क्रिकेट के तेजी से आगे बढ़ने के कारण राष्ट्रीय टीम की तरफ से खेलने के बजाय फ्रेंचाइजी क्रिकेट को प्राथमिकता देने वाले क्रिकेटरों की संख्या बढ़ती जा रही है विशेषकर वेस्टइंडीज के क्रिकेटर इस मामले में सबसे आगे हैं।

फ्रेंचाइजी क्रिकेट से बढ़ते खतरे के बारे में पूछे जाने पर वसीम ने कहा,''दुनिया भर में बेहद प्रतिस्पर्धी घरेलू टी20 लीग हो रही हैं। यह प्रशंसकों और खिलाड़ियों को अधिक विकल्प प्रदान करता है और इससे सीमित ओवरों के हमारे विश्वकप में सुधार देखने को मिलता है।''

पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड के प्रमुख नजम सेठी ने स्पष्ट किया है कि अगर भारतीय टीम एशिया कप के अपने मैच पाकिस्तान में नहीं खेलेगी तो उनकी टीम ही वनडे विश्वकप के लिए भारत का दौरा नहीं करेगी। आईसीसी के सीईओ ज्योफ एलार्डिस और अध्यक्ष ग्रेग बार्कले अभी नियमित बैठकों के लिए पाकिस्तान में हैं लेकिन इस दौरान इन दोनों पड़ोसी देशों के बीच क्रिकेट के रिश्तों को लेकर भी चर्चा करने की संभावना है। वसीम ने इस विवादित विषय पर कुछ खास नहीं कहा।

गैफनी, इलिंगवर्थ होंगे डब्ल्यूटीसी फाइनल के अंपायर

दुबई, 29 मई। न्यूजीलैंड के क्रिस गैफनी और इंग्लैंड के रिचर्ड इलिंगवर्थ भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच सात जून से होने वाले विश्व टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल में अंपायर की भूमिका निभाएंगे। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद ने सोमवार को इसकी घोषणा की। इंग्लैंड के 48 वर्षीय गैफनी अपने 49वें टेस्ट मैच में खड़े होंगे, जबकि 59 वर्षीय इलिंगवर्थ के लिये यह 64वां टेस्ट होगा। इलिंगवर्थ दो साल पहले भारत और न्यूजीलैंड के बीच खेले गये डब्ल्यूटीसी फाइनल में भी उपस्थित थे। जिसे कीवी टीम ने आठ विकेट से जीता था।

विख्यात चित्रकार रैंम्ब्रैन्ट को अन्य समकालीन कलाकारों के विपरीत अपने जीवनकाल में ही असाधारण सफलता मिल गई थी। इस डच कलाकार की कलाकृतियाँ ना केवल नीदरलैंड्स में बल्कि पूरे यूरोप में विख्यात थीं। उसके शिष्य भी "डच गोल्डन एज" में काफी प्रभावशाली हुए। रैंम्ब्रैन्ट एक जानी मानी हस्ती थे, इसलिए 17 वीं सदी के इस कलाकार की अज्ञात एवं अतिदुर्लभ कृतियाँ मिलने से कला जगत में खलबली मच जाती है। क्रिस्टीज़ ऑक्शन हाउस में, पुराने महान कलाकारों के विशेषज्ञ, हैरी पैंटिफर को हाल ही में रैंम्ब्रैन्ट की दो कृतियां मिली हैं। उन्होंने बताया कि, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि, ये पेंटिंग्स पूरी तरह से अज्ञात थीं और 19 वीं और 20 वीं सदी के, रैंम्ब्रैन्ट से सबंधित किसी भी साहित्य में इनका कहीं कोई जिक्र नहीं है। इस पेंटिंग्स को संभवतया 200 साल पहले जनता ने देखा था। एक पेंटिंग में प्लम्बर, जैन विलैम्स वैन डर प्लोयम और दूसरी में उसकी पत्नी जापगेन कैरैल्स नज़र आ रहे हैं। यह युगल डच शहर लायडन में रहता था। उनका रैंम्ब्रैन्ट से आजीवन रिश्ता रहा। उनके बेटे की शादी रैंम्ब्रैन्ट की चचेरी बहन से हुई थी और समझा जाता है कि, इस शादी से जन्मे पुत्र ने रैंम्ब्रैन्ट से कला की ट्रेनिंग ली थी। ये लोग रैंम्ब्रैन्ट के बेहद करीबी थे। इस परिवार ने ही 1824 में ये कलाकृतियां एक ब्रिटिश परिवार को बेची थीं, जिनके पास आज भी ये मौजूद हैं। इस ब्रिटिश परिवार को पता नहीं था कि पेंटिंग्स के उनके संग्रह में ये दो दुर्लभ पेंटिंग भी हैं। सन् 1635 की हस्ताक्षरित ये दोनों दुर्लभ कलाकृतियां 8 इंच लम्बी और साढ़े 6 इंच चौड़ी हैं। पैंटिफर ने कहा, "मुझे लगता है कि रैंम्ब्रैन्ट द्वारा बनाए गए ये सबसे छोटे पोर्ट्रेट्स हैं।"

कांग्रेस को 250 के आसपास सीटें देना चाहता है संयुक्त विपक्ष?

चर्चाओं के अनुसार सीट शेयरिंग का बेसिक फॉर्मूला है कि, 2019 में जिस पार्टी ने जो सीट जीती, वो उसकी, तथा नंबर-2 पर रही पार्टी को प्राथमिकता देना इस फॉर्मूला का दूसरा स्टेज है

नई दिल्ली, 29 मई। ममता बनर्जी और नीतीश कुमार भाजपा के खिलाफ प्लान 475 तैयार कर रहे हैं। इस प्लान की सबसे प्रमुख बात यह है कि, वे चाहते हैं कि, लोकसभा की 543 सीटों में से कम से कम 475 सीटों पर भाजपा के खिलाफ विपक्ष से सिर्फ एक कैंडिडेट लड़े। कैंडिडेट कांग्रेस का हो या किसी और पार्टी का लेकिन लड़े कोई एक जिससे वोट ना बंटे और बीजेपी को आमने-सामने की लड़ाई में हराकर 2024 में लगातार तीसरी बार लोकसभा चुनाव जीतने से रोका जा सके।

सूत्र बताते हैं कि, 475 सीटों पर एक कैंडिडेट देने का वो फॉर्मूला जिस पर चर्चा होगी उसमें 2019 में जीती सीटों का सबसे अहम रोल है। बेसिक फॉर्मूला है कि 2019 में जिस पार्टी ने जो सीट जीती, वो उसकी। नंबर 2 पर रही पार्टी को प्राथमिकता देना फॉर्मूला का दूसरा स्टेज है। क्षेत्रीय दल इस फॉर्मूले पर कांग्रेस से सीट के बंटवारे पर सहमति बनाने की कोशिश करेंगे।

■ नीतीश कुमार चाहते हैं कि, लोकसभा चुनाव में भाजपा के खिलाफ 475 सीटों पर विपक्ष का केवल एक ही उम्मीदवार चुनाव लड़े।

किसी सीट पर नंबर 1 और 2 पर रही पार्टी अगर विपक्षी खेमे में नहीं हो तो तीसरे नंबर पर रही पार्टी को तवज्जो दिया जाए। लब्बोलुआब यह है कि 2019 के चुनाव में विपक्षी खेमे की जो पार्टी सबसे ज्यादा वोट लाई, उसका उस सीट पर हक माना जाए।

दिक्कत ये है कि कांग्रेस ये फॉर्मूला मान लेती है तो उसे 2024 के चुनाव में 250 से कुछ ज्यादा या कम सीटें लड़ने के लिए मिल पाएंगी जहां वो जीती या कम से कम दूसरे नंबर पर रही। ऐसे में विपक्षी गठबंधन जीत भी जाए तो सरकार चलाने और गिराने का बटन कोलकाता से चेन्नई तक बिखरा रहेगा। लेकिन कांग्रेस की एक मुसीबत यह भी है कि सीधी लड़ाई में भाजपा कांग्रेस पर बहुत भारी है। अब पूरी कवायद विपक्षी इस बात पर टिकी है कि, कांग्रेस करीब 250 सीटों पर चुनाव लड़ने के लिए तैयार हो जाये। नीतीश कुमार और ममता बनर्जी ने कांग्रेस और अन्य विपक्षी दलों के साथ इसी फॉर्मूले पर मंथन के लिए आगामी 12 जून को पटना में सभी विपक्षी पार्टियों की मीटिंग बुलाई है।

2014 के लोकसभा चुनाव में 189 सीटों पर सीधी टक्कर में 166 बीजेपी जीती जबकि 2019 में 192 सीटों पर आमने-सामने के मुकाबला में 176 भाजपा जीती। 2019 के चुनाव में कांग्रेस 52 सीट जीती और 209 पर दूसरे नंबर पर रही। 2014 के चुनाव में कांग्रेस 44 सीट जीती थी और 224 सीटों पर दूसरे नंबर पर रही थी। जीत और रनर अप मिला दें तो कांग्रेस 2014 में 268 सीट और 2019 में 261 सीट पर जीती या आगे रही।

ममता और नीतीश के फॉर्मूले से कांग्रेस को लगभग 250 सीटें ही मिलती दिख रही हैं। बाकी सीटों पर यूपी में अखिलेश यादव, पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी, महाराष्ट्र में शरद पवार और उद्धव ठाकरे, बिहार में नीतीश कुमार और तेजस्वी यादव, झारखंड में हेमंत सोरेन जैसे क्षत्रप अपनी-अपनी पार्टी को महत्व, नेतृत्व और ज्यादा सीटें चाहते हैं। मतलब ये कि जिन राज्यों में कांग्रेस कमजोर है वहां वो उस राज्य की ताकतवर पार्टी द्वारा दी गई सीटें लड़े।

कांग्रेस जिस हालत में है उसमें 2024 में भाजपा को हटाने के लिए वो क्षेत्रीय दलों से सीटों की सौदेबाजी में कितना झुक सकती है, अब सारा खेल इस पर टिकने वाला है। क्षेत्रीय दल कांग्रेस को अगर ये भरोसा देने में कामयाब हो जाते हैं कि पहले नंबर जुटाना है और बाद में सबसे बड़ी पार्टी ही सरकार का नेतृत्व करेगी।

'दोनों नेताओं...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

पर, इसके तौर तरीकों व प्रक्रिया का ब्यौरा तैयार करने का निर्णय नेतृत्व पर छोड़ दिया गया है।

राहुल गांधी आज रात अमेरिका जा रहे हैं, इसलिए यह स्पष्ट नहीं है कि क्या तुरंत कोई निर्णय लिया जा सकता है।

इसलिए कांग्रेस नेतृत्व तेजी से काम कर रहा है और पायलट को राज्य व्यापी आंदोलन करने से रोकने की कोशिश कर रहा है क्योंकि यह नेतृत्व के लिए भारी शर्मिंदगी का सबब साबित हो रहा है।

सचिन पायलट को अपना आंदोलन वापस लेने के लिए कारण बताने होंगे। सूत्रों का कहना है कि दोनों नेताओं को एक साथ रखा जाए और संभावना है कि गहलोत को मनमानी करने की छूट नहीं मिले।

12 जून को पटना ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

था तथा घोषित कर दिया था कि वे अपने दम पर ही 2024 के चुनाव लड़ेंगे। कुमार "वन-टू-वन" के विचार को आगे बढ़ाने की कोशिश में लगे हुये हैं कि 2024 के चुनाव में भाजपा के प्रत्याशी के समय विपक्ष का एक ही प्रत्याशी खड़ा हो तथा वे इस विचार की भी वकालत और हिमायत कर रहे हैं कि कांग्रेस और भाजपा के समान दूरी रखने की धारणा क्षेत्रीय दलों के लिये अपनी पराजय को आमंत्रित करने वाली सिद्ध होगी। सूत्रों का कहना है कि 18 विपक्षी दलों के नेता, जिनमें एन.सी.पी. प्रमुख शरद पवार, ओडिशा तथा पश्चिमी बंगाल के मुख्यमंत्री नवीन पटनायक तथा ममता बनर्जी, राहुल गांधी तथा समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव पटना मीटिंग में उपस्थित होंगे।

विपक्षी एकता अभी दूर की कौड़ी बनी हुई है क्योंकि क्षेत्रीय नेताओं के ग्रुप अपनी समान्तर गतिविधियाँ जारी रखे हुये हैं। ममता बनर्जी तथा अखिलेश यादव स्वतंत्र रूप से कांग्रेस रहित तीसरे मोर्चा के विचार को आगे बढ़ाने में लगे हुये हैं। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल तेलंगाना के मुख्यमंत्री को चन्द्रशेखर राव सहित, विभिन्न विपक्षी दलों के नेताओं के साथ मीटिंग कर रहे हैं ताकि दिल्ली अध्यादेश का समर्थन रोका जा सके। लेकिन बिहार के एक वरिष्ठ नेता का कहना है कि "क्षेत्रीय दलों के अधिकांश नेता भाजपा सरकार के इशारे पर ई.डी./सी.बी.आई. केसों के साझा खतरे का सामना कर रहे हैं। इसलिये इन पार्टियाँ को किसी औपचारिक या अनौपचारिक गठबंधन में शामिल होने के लिये स्वत: ही बाध्य हो जायेंगी।

'अपवाद कानून नहीं हो सकता'

हाई कोर्ट ने गैर आर.ए.एस. को पदोन्नत कर आई.ए.एस. बनाने पर तीखी टिप्पणी की

-यादवेन्द्र शर्मा-

जयपुर, 29 मई। राजस्थान हाई कोर्ट में गैर आर.ए.एस. (राजस्थान एडमिनिस्ट्रेटिव सर्विस) से सीधे "इंडियन एडमिनिस्ट्रेटिव सर्विस" (आई.ए.एस.) अफसर के पद पर एक 'सब-कोटा' के माध्यम से पदोन्नत किए जाने की प्रथा के खिलाफ दायर याचिका पर सुनवाई हुई। अदालत ने राज्य सरकार से इस प्रथा के संबंध में जवाब मांगा है और पिछले पाँच वर्ष के ऑकडे भी माँगे है। एक्टिंग सी.जे.एम.एम. श्रीवास्तव व जस्टिस अनिल उपमन की खंडपीठ ने यह आदेश राजस्थान प्रशासनिक सेवा परिषद व अन्य की याचिकाओं पर दिया।

इस मामले में याचिकाकर्ता की ओर से अधिवक्ता तनवीर अहमद अदालत में पेश हुए थे। उन्होंने अदालत को बताया कि 'ऑल इंडिया सर्विस एक्ट' व उसके नियम-विनियम के तहत 66.67 प्रतिशत आई.ए.एस. अफसर 'यू.पी.एस.सी.' परीक्षा के माध्यम से सीधे भर्ती किए जाते है। वहीं 33.33 प्रतिशत आई.ए.एस. पद राज्य के प्रशासनिक अफसरों की पदोन्नति से भरे जाते हैं। उन्होंने अदालत को इस तथ्य से अवगत कराया कि अपवाद स्वरूप में गैर राज्य प्रशासनिक सेवा के अफसरों को भी आई.ए.एस. के पद पर पदोन्नत किया जा सकता है। परन्तु इन अफसरों की संख्या राज्य प्रशासनिक सेवा से पदोन्नित होने वाले अफसरों की कुल संख्या की केवल 15 प्रतिशत तक ही हो सकती है। उन्होंने अदालत को यह भी बताया कि यह नियम एक अपवाद है और यह तरीका पदोन्नतित की नियमित प्रक्रिया नहीं हो सकती। तनवीर अहमद ने बताया कि राज्य सरकार ने इस अपवाद को प्रथा मान कर पिछले कई वर्षो से आर.ए.एस. अफसरों से पदोन्नत होकर आई.ए.एस. बनाए जाने वाले कुल अफसरों में से 15 प्रतिशत का कोटा गैर आर.ए.एस. अफसरों का बना दिया है, जिस पर निरंतर अमल किया जा रहा है। अदालत ने मौखिक तौर पर कहा कि अगर ऐसी प्रथा अपनाई जा रही है तो यह नियम का साफ उल्लंघन होगा। अदालत ने राज्य सरकार को जवाब पेश करने का अंतिम मौका दिया है। सुनवाई की अगली तारीख जुलाई में तय की गई है।

सी.बी.आई. ने ब्रिटिश एयरोस्पेस और रोल्स रॉयस कंपनी के खिलाफ एफ.आई.आर दर्ज की

सी.बी.आई. की रिपोर्ट के अनुसार 2003-2012 के बीच सेना के लिए 115 मॉर्डन हॉक विमानों की खरीद में व्यापक भ्रष्टाचार हुआ है

नई दिल्ली, 29 मई। भारतीय वायुसेना और नौसेना के लिए हॉक 115 मॉडर्न जेट ट्रेनिंग विमान की खरीद में भ्रष्टाचार के आरोप मामले में सी.बी.आई. ने अपना ऐक्शन तेज कर दिया है। जांच एजेंसी ने ब्रिटिश एयरोस्पेस और रक्षा कंपनी रोल्स-रॉयस पी.एल.सी., इसकी इंडियन यूनिट के सीनियर अधिकारियों व शस्त्र विक्रेताओं के खिलाफ एफ.आई.आर. दर्ज की है।

एफ.आई.आर. के अनुसार, सी.बी.आई. ने मामले में 6 साल की जांच पूरी होने के बाद आईपीसी की धारा 120-बी (आपराधिक साजिश), 420 (धोखाधड़ी) और भ्रष्टाचार निरोधक कानून के प्रावधानों के तहत रोल्स-रॉयस इंडिया के निदेशक टिम जोन्स, हथियार आपूर्तिकर्ता सुधीर चौधरी और उनके बेटे भानु चौधरी व ब्रिटिश एयरोस्पेस सिस्टम्स के खिलाफ मामला दर्ज किया है। अभी रोल्स रॉयस से इस पर प्रतिक्रिया नहीं मिल पाई है।

अधिकारियों ने बताया कि, 2017 में एक ब्रिटिश अदालत ने भी समझौते को अंजाम देने के लिए कंपनी की ओर से बिचौलिए को शामिल करने और कमीशन का भुगतान करने का जिक्र किया था। यह आरोप है कि 2003-12 के दौरान साजिश में शामिल इन आरोपियों ने 73.42 करोड़ ब्रिटिश पाउंड की लागत से 24 हॉक 115 एजेटी की खरीद का प्लान बनाया। इसके लिए उन्होंने अज्ञात लोक सेवकों के साथ मिलकर अपने आधिकारिक पद का दुरुपयोग किया था। उन्होंने

■ यह आरोप है कि, 2003-12 के दौरान साजिश में शामिल इन आरोपियों ने 73.42 करोड़ ब्रिटिश पाउंड की लागत से 24 हॉक 115 एजेटी की खरीद का प्लान बनाया। इसके लिए उन्होंने अज्ञात लोक सेवकों के साथ मिलकर अपने आधिकारिक पद का दुरुपयोग किया था।

30.82 करोड़ अमेरिकी डॉलर और 75 लाख अमेरिकी डॉलर की अतिरिक्त राशि के लिए रोल्स रॉयस को आपूर्ति की गई सामग्री के बदले हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड के 42 अतिरिक्त विमानों के लाइसेंस निर्माण की अनुमति दी।

सी.बी.आई. की प्राथमिकी में आरोप लगाया गया कि यह सौदा रोल्स रॉयस द्वारा बिचौलियों को दी गई भारी भरकम रिश्वत, कमीशन और भ्रष्टाचार के एवज में किया गया था, जबकि समझौते से संबंधित दस्तावेज में बिचौलियों के भुगतान पर रोक की बात कही गई थी। एचएएल ने अगस्त 2008 से मई 2012 के बीच भारतीय वायु सेना को 42 विमान दिए। जनवरी 2008 में एचएएल ने रक्षा मंत्रालय से 9,502 करोड़ रुपये की लागत से 57 अतिरिक्त हॉक विमान के निर्माण के लिए लाइसेंस देने की अपील की थी, जिसमें से 40 विमान वायु सेना के लिए और 17 नौसेना के लिए था।

सी.बी.आई. जांच से पता चला है कि, 2006-07 में आयकर विभाग द्वारा किए गए सर्वेक्षण के दौरान रोल्स रॉयस इंडिया कार्यालय से लेन-देन से संबंधित महत्वपूर्ण दस्तावेज जब्त किए गए थे, लेकिन आरोपी व्यक्तियों ने जांच से बचने के लिए दस्तावेजों को नष्ट कर दिया और हटा दिया।

मणिपुर में हिंसा और तेज हुई

हथियारबंद आतंकियों ने गाँवों में आम लोगों के घरों पर हमला किया, सुरक्षाबलों ने 25 हथियारबंद आतंकियों को गिरफ्तार किया है

इम्फाल, 29 मई (वार्ता)। मणिपुर की राजधानी इम्फाल में सोमवार को लीमाखोंग सैन्य मुख्यालय के पास खुरखुल एवं अन्य मैतेई गांवों में हथियारबंद आतंकियों ने हमला किया।

पुलिस सूत्रों के मुताबिक आतंकियों के अत्याधुनिक हथियारों से लैस होने के कारण ग्रामीण आसपास के स्थानों की ओर भाग गए। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह आज देर रात राज्य पहुंचने वाले हैं जिसके लिए वहां की सुरक्षा व्यवस्था कड़ी की गई है।

सैनिकों ने हथियार रखने एवं घरों को जलाने की कोशिश करने के आरोप में 25 लोगों को भी गिरफ्तार किया। राज्य के सभी पांच जिलों में पूरे दिन कर्फ्यू में ढील नहीं दी गई और 3 मई से झड़पें शुरू होने के बाद से वहां इंटरनैट भी बंद है।

मुख्यमंत्री एन बीरेन ने कहा कि यह संघर्ष अब सशस्त्र कुकी आतंकियों और सरकार के बीच है। इंफाल पूर्व जिले में इंसास राइफल और मैगजीन के साथ तीन लोगों को 5.56 एमएम की 60 गोली, गोला-बारूद, एक चीनी हथगोला और एक डेटोनेटर के साथ गिरफ्तार किया गया।

एक अन्य घटना में सेना ने इंफाल पूर्व में घरों को जलाने की कोशिश करने वाले 22 लोगों को गिरफ्तार किया, उन आतंकियों ने स्वचालित हथियारों से सेना की टुकड़ियों पर गोलियां भी चलाईं। उनके पास से पांच 12 बोर की डबल बैरल राइफल, तीन सिंगल बैरल राइफल, डबल बोर वाला एक देसी कट्टा और एक मज़ल लोडेड हथियार भी बरामद किया गया। सेना ने त्वरित कार्रवाई करते हुए लोगों के बहुमूल्य जीवन को सुरक्षित किया और आगजनी की अनेक घटनाओं को रोका।

इस बीच, मणिपुर के मुख्य सचिव डॉ. विनीत जोशी ने एक आदेश में कहा कि जिम्मेदार पदों पर बैठे हुए कई लोग मणिपुर के बारे में सोशल मीडिया पर जानकारी साझा कर रहे हैं लेकिन उनमें से कई सूचनाएं गलत, फर्जी और झूठी अफवाह पाई गई हैं।

उन्होंने कहा कि ऐसी गलत सूचनाएं जनता को गुमराह करती है, हिंसा भड़कती है और हथियारों का उपयोग करने और राज्य के खिलाफ विद्रोह करके राज्य में वर्तमान स्थिति को खराब करने की क्षमता रखती है, जिससे मानवीय जीवन को नुकसान होता है, लोगों की जान जाती है और संपत्तियों को नुकसान पहुंचता है।

पेपर लीक...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सरकार ने ये आदेश दिए हैं।

शिक्षा विभाग ने पिछले दिनों विभागीय पदोन्नति समिति की बैठक की थी। इस बैठक में अनिल उर्फ शेर सिंह मीणा को भी प्रमोट किया गया था। अचंभे की बात है कि, शिक्षा विभाग ने बर्खास्त हो चुके शेर सिंह मीणा को प्रमोट कर दिया। इतना ही नहीं उसका पदस्थापन भी कर दिया गया।

निदेशक गौरव अग्रवाल ने शाम होते-होते इस आदेश को वापस ले लिया। इसके बाद राज्य सरकार ने सोमवार सुबह गौरव अग्रवाल को ही पद से हटा दिया। शिक्षा विभाग में पदोन्नति करने से पहले सभी कार्मिकों का रिकॉर्ड देखा जाता है। प्रत्येक कार्मिक के रिकॉर्ड की जांच की जाती है। आपत्ति भी मांगी जाती है।

डी.पी.सी. होने के बाद भी करीब एक महीने का वक्त रहता है। लेकिन, इसके बाद भी किसी के ध्यान में नहीं आया कि सेवा से बर्खास्त हो चुके कार्मिक को कैसे पदोन्नति दी गई।

जब यह खबर प्रमुखता से चली कि, एक करोड़ रुपये में सीनियर टीचर भर्ती का पेपर बेचने वाले मास्टरमाइंड अनिल उर्फ शेर सिंह मीणा को शिक्षा निदेशालय ने वाइस प्रिंसिपल से प्रिंसिपल के पद पर प्रमोशन कर दिया तो शिक्षा निदेशालय बीकानेर ने रात में नया आदेश जारी किया।

एर्दोगन फिर से तुर्किये के राष्ट्रपति चुने गये

नयी दिल्ली, 29 मई (वार्ता)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोमवार को तुर्किए के राष्ट्रपति रेसेप तैयप एर्दोगन को फिर से चुनाव जीतने पर बधाई दी और कहा कि उन्हें विश्वास है कि द्विपक्षीय संबंध और वैश्विक मुद्दों पर सहयोग बढ़ता रहेगा।

मोदी ने ट्वीट किया, तुर्किये के राष्ट्रपति के रूप में फिर से चुने जाने पर आर टी एर्दोगन को बधाई! मुझे विश्वास है कि आगामी समय में वैश्विक मुद्दों पर हमारे द्विपक्षीय संबंध और सहयोग बढ़ते रहेंगे।

उन्होंने कहा कि ये चुनाव जीतने के बाद राष्ट्रपति एर्दोगन चुनाव जीतकर फिर से पांच साल के लिए सत्ता में आए। अधिकारियों का कहना है कि उन्होंने रविवार को रन-ऑफ में करीब पूरी गिनती में 52.16 प्रतिशत मत हासिल किए। उन्होंने कहा कि अपनी जीत के साथ, एर्दोगन ने अपने शासन को तीसरे दशक तक बढ़ा दिया।

दरगाह में...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सुपरविजन में सलूम्बर थानाधिकारी लीलधर मालवीय के नेतृत्व में गठित दल ने इस मामले में आरोपी गोविन्द पुत्र बालाजी, ललित पुत्र पेमाराम, कैलाश पुत्र नाथुलाल, दयाराम पुत्र शंकरलाल, मांगीलाल पुत्र हिराजी, वीराराम पुत्र मावाराम निवासीयान पातुखेडा, कुराबड जिला उदयपुर को गिरफ्तार कर जेल भिजवाया।

'महिला चिकित्सक...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

की हकदार थी।

उल्लेखनीय है कि, सुप्रीम कोर्ट के आदेश अनुसार भी पाठ्यक्रम शुरु होने के पहले, एक तय तिथि के उपरांत नए "एडमिशन" नहीं दिये जा सकते। सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि, केवल "रैअरेस्ट ऑफ रेर", यानी बिल्कुल ही अनूठी स्थितियों में ही इस नियम को तोड़ा जाना चाहिये। हाई कोर्ट ने उक्त मामले को "रेअरैस्ट ऑफ रेअर" माना है और अपीलार्थी को अगले सत्र में प्रवेश दिया है।

अपील में अधिवक्ता विज्ञान शाह ने अदालत को बताया कि, अपीलार्थी वर्ष 2015 में डैंटल ऑफिसर के पद पर नियुक्त हुई थी। साल 2018 में उसे अलवर की मंडावर कम्युनिटी हैल्थ सैंटर (सी.एच.सी.) में नियुक्त किया गया। इसके बाद करोना काल में उसे अलवर के ग्रामीण क्षेत्र में नियुक्ति दी गई। जहां उसने कुल 750 दिन तक काम किया। अपील में कहा गया कि, गत वर्ष की नीट पीजी परीक्षा में उसे नियमानुसार बीस बोनस अंक दिए जाने थे, लेकिन उसे इसका लाभ नहीं दिया गया। इसका विरोध करते हुए राज्य सरकार व अन्य की ओर से कहा गया कि, अपीलार्थी की मूल नियुक्ति शहरी क्षेत्र में थी और उसे कार्य व्यवस्था के लिए ग्रामीण क्षेत्र में लगाया गया था। जहां उसे ग्रामीण भत्ता भी नहीं दिया गया था। ऐसे में उसकी ओर से दी गई सेवाओं को ग्रामीण क्षेत्र की सेवा के तौर पर नहीं गिना जा सकता। इसी आधार पर एकलपीठ ने भी पूर्व में उसकी याचिका को खारिज कर दिया था।

दोनों पक्षों की बहस सुनने के बाद अदालत ने माना कि, अपीलार्थी को बिना किसी गलती के पीजी पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने से वंचित किया गया है। ऐसे में उसे अगले सत्र के पीजी पाठ्यक्रम में प्रवेश दिया जाए।

न संसद की पुरानी बिल्डिंग रही...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

करने का सबसे बेहतरीन जरिया है।

"लीक्स" और प्रैस तथा सत्ता के बीच मेलजोल के उस खत्म हो चुके दौर की घटना मुझे याद आती है जब एक ताकतवर प्रधानमंत्री अपने चयनित किन्तु अयोग्य व अकुशल प्रत्याशी को विशालकाय पब्लिक सैक्टर एयरलाइन ऑपरेटर का चेयरमैन नहीं बना सका था और न्यूज़ लीक होने की वजह से ऐसा नहीं हो पाया था।

संसद की कार्यवाहियों में पत्रकारों को आने की अनुमति देने एक बार जब उपराष्ट्रपति शंकर दयाल शर्मा राज्यसभा सत्र की अध्यक्षता कर रहे थे। तब सत्तारूढ़ पार्टी के सदस्यों ने उन्हें इस कदर परेशान किया कि वे रुंआसे से हो गए थे। यह कार्यवाही टी.वी. पर नहीं आई थी। पर पत्रकारों ने यह खबर प्रकाशित की और सत्तारूढ़ पार्टी के उन उद्दण्ड सांसदों को शर्मिंदा होना पड़ा।

वह घटना भी याद है जब प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह विपक्ष के कुछ सदस्यों ने उनकी कार्यशैली को लेकर जोरदार हमला बोला, उनकी घोर आलोचना की। डॉ. सिंह राजनेता तो है नहीं, तो वह यह सब सह नहीं पाए, उन्होंने तमाम आरोपों और आलोचना को बेहद गंभीरता और व्यक्तिगत स्तर पर ले लिया।

जब हालात और भी बुरा रूप ले रहे थे तब उनकी मदद को आगे आए अटल बिहारी वाजपेयी, उन्होंने अपने चिर-परिचित अंदाज में डॉ. सिंह का बचाव किया।

अनुभवी राजनेता वाजपेयी ने डॉ. सिंह को सलाह दी कि अपनी "चमड़ी थोड़ी मोटी" कर ले और किसी भी बात को निजी तौर पर न लें। उन्होंने कहा कि जहां तक उन्हें याद है उन्हें उनके राजनैतिक करियर में काफी भला बुरा कहा गया। वैसे वाजपेयी हमारी पीढ़ी के सबसे बेहतरीन राजनेताओं में से एक रहे हैं। यू.एन. में और संसद में उनके भाषणों को आज भी याद किया जाता है।

जब उनकी तेरह दिन की सरकार गिरी थी तब उनका भाषण निस्संदेह बहुत शानदार था। पर एक ऐसा मौका था जब संसद में अपने भाषण में उन्होंने राजनीतिक आकाश की ऊंचाइयां छू ली थीं।

उस समय आंध्र प्रदेश के कुछ विधायक दिल्ली आए थे तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी को ज्ञापन देने। उनमें से एक या दो को प्रधानमंत्री को ज्ञापन देने के लिए अंदर आने की अनुमति देने की बजाय दिल्ली पुलिस ने उन पर कार्यवाही की तब संसद चल रही थी और खबर अंदर पहुंची।

और तब वाजपेयी सदन में खड़े हुए और अपनी शानदार हिंदी में भाषण दिया।

प्रधानमंत्री सदन में नहीं थे पर उन्होंने अपना भाषण प्रधानमंत्री को ही संबोधित किया। उन्होंने कहा, "अभी तक राज्यों के लोग दिल्ली में न्याय के लिए आते है, पर अगर उनके साथ ऐसा व्यवहार होगा तो वह दिन दूर नहीं जब दिल्ली को अपनी सत्ता बचाने के लिए राज्यों पर दस्तक देनी पड़ेगी।"

यह मानो एक संत की भविष्यवाणी थी और आने वाले वर्षों में केन्द्र को अपने अस्तित्व के लिए पूरी तरह से क्षेत्रीय दलों के समर्थन पर निर्भर होना पड़ा। निश्चित रूप से अब वो दौर खत्म हो गया है।

ऐसे दिन आते रहते हैं जब कर्मों का हिसाब होता पर अकलमंद लोग उसके अनुसार समझदारी से काम करते है।

तीन राज्यों के ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

विकसित करने के लिये अत्यल्य समय ही मिल सके।

भाजपा नेताओं, खासतौर से मोदी-शाह की जोड़ी, के इस विचार को राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजित डोवल का समर्थन भी प्राप्त है। इस जोड़ी का मानना है कि विपक्षी दलों और उनके नेताओं के बीच बहुत गहरे अन्तर्विरोध हैं तथा उनमें तालमेल बनाने के लिये काफी समय और धैर्य की जरूरत होगी।

इसलिये भाजपा का मानना है कि समय पूर्व चुनाव कराना चुनावी लड़ाई में अपना पलड़ा भारी रखने के लिये बेहतर रणनीति सिद्ध होगी।

भाजपा रणनीतिकारों का मानना है कि, आम चुनावों को जल्दी तथा तीन हिन्दी भाषी राज्यों के विधानसभा चुनावों के साथ कराने का एक और लाभ भी मिलेगा-कांग्रेस राज्य के चुनावों पर अपना पूरा ध्यान केन्द्रित नहीं कर पायेगी क्योंकि उसे राष्ट्रीय स्तर पर ध्यान देना होगा, इस प्रकार कांग्रेस संसाधनों के मामले में भी और ज्यादा असुविधा में रहेगी। भाजपा का मानना है कि देश की इस सबसे पुरानी पार्टी के पास संसाधनों का अकाल होगा, क्योंकि इसकी जमापूंजी खींचतान का शिकार हो जायेगी।

आम चुनाव जल्दी करवाकर, सत्तारूढ़ पार्टी यह सुनिश्चित कर लेगी कि भारत जोड़ो यात्रा का दूसरा प्रस्तावित हिस्सा, जिसके अंतर्गत राहुल गांधी का पूर्व से पश्चिम-हिन्दी भाषी क्षेत्रों से गुजरते हुये, तक जाना प्रस्तावित है, भी बाधित हो जायेगा। भारत जोड़ो यात्रा के पहले हिस्से के फलस्वरूप, कांग्रेस तथा राहुल गांधी-दोनों की ही विश्वसनीयता को आशातीत लाभ हुआ था, यही कारण है कि सत्तारूढ़ दल यात्रा के दूसरे हिस्से के आयोजन की स्थिति ही आने देना नहीं चाहता।

राष्ट्रदूत (एचयूएफ) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा राष्ट्रदूत प्रेस, जी1/63 इंडस्ट्रीयल एरिया फेस प्रथम, जालौर, (राज.) से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2006/17286 जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513, कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, अजमेर कार्यालय: राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन226422,226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908